बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
विजया VIJAYA
देना DENA

अक्षय्यम्

जुलाई–सितंबर 2023 अंक
बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

बैंक को प्राप्त राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

बैंक को 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार

बैंक को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की श्रेणी में वर्ष 2022–23 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार के 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' योजना के तहत द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। बैंक की ओर से यह पुरस्कार दिनांक 14 सितंबर, 2023 को पुणे में आयोजित हिंदी दिवस समारोह 2023 एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री अजय कुमार मिश्रा से माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार डॉ. भारती प्रवीण पवार की गरिमामयी उपस्थिति में प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री देबदत्त चांद ने ग्रहण किया।

कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई में वार्षिक राजभाषा समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

दिनांक 27 अक्तूबर, 2023 को कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई में वार्षिक राजभाषा समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री देबदत्त चांद ने की। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक द्वय, श्री अजय के खुराना एवं श्री लाल सिंह और मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री सुरेंद्र कुमार दीक्षित, प्रमुख–राजभाषा एवं संसदीय समिति, श्री संजय सिंह, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एव संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र तथा कॉर्पोरेट कार्यालय के अन्य वरिष्ठ कार्यपालक भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ शीतला प्रसाद दुबे, कार्याध्यक्ष–महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई थे। हास्य कवि सम्मेलन में श्री एहसान कुरैशी (मुंबई), डॉ. मुकेश गौतम (मुंबई), सुश्री विभा सिंह (वाराणसी) एवं श्री दिलीप शर्मा (पुणे) जैसे प्रसिद्ध हास्य कवियों को भी आमंत्रित किया गया। बैंक की ''मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना'' के अंतर्गत एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई की छात्राओं को सम्मानित किया गया। राजभाषा कार्यान्वयन में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने वाले विभागों/ वर्टिकलों और हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर कॉर्पोरेट कार्यालय में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका '**अक्षय्यम्**' के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है। मेरे विचार में गृह पत्रिका हमारी सामूहिक बैंकिंग प्रतिबद्धताओं को आप सभी से साझा करने का एक उपयुक्त माध्यम है।

बैंक इस वर्ष 20 जुलाई को अपनी स्थापना के 116वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। बैंकिंग जगत ने तकनीक की दृष्टि से दशक-दर-दशक बहुत सारे बदलाव देखे हैं और सभी चुनौतियों को पार करते हुए बैंकिंग ने पारंपरिक शाखाओं से ऑटोमेटेड डीबीयू तक का सफर तय किया है। तकनीकी रूपांतरण के इस दौर में हमारे बैंक की भी एक विशेष और अग्रणी भूमिका रही है। महाराजा सर सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय द्वारा स्थापित यह बैंक ग्राहकों के सतत जुड़ाव के साथ डिजिटलाइजेशन और स्मार्ट बैंकिंग की रणनीति पर चलते हुए भविष्य की बैंकिंग की राह में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है।

इस वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही के परिणाम उत्साहजनक रहे हैं। तिमाही के दौरान बैंक की परिचालनगत आय में वर्ष दर वर्ष 42.9% की वृद्धि के साथ गैर ब्याज आय में भी 2.8 गुना की वृद्धि दर्ज की गई है। आस्ति गुणवत्ता के क्षेत्र में बैंक का कुल एनपीए अनुपात वर्ष दर वर्ष 275 bps कम होकर 3.51% तथा शुद्ध एनपीए अनुपात 80 bps कमी के साथ वर्ष दर वर्ष आधार पर 0.78% हो गया है। कुल व्यवसाय में 17% की वृद्धि के साथ बैंक ने 22 लाख करोड़ के व्यावसायिक स्तर को पार कर लिया है। टॉप लाइन में वृद्धि के साथ एक स्वस्थ बॉटम लाइन के लिए अनुपालन के उच्च मानक सुनिश्चित करते हुए हमें कोस्ट टु इन्कम अनुपात (C/I Ratio) को मौजूदा 47.43% के स्तर से कम करते हुए इसे लगभग 40% के स्तर तक लाने का लक्ष्य रखना होगा। C/I अनुपात जितना कम होगा, बैंक की दक्षता और लाभप्रदता उतनी ही अधिक होगी।

हमारे बैलेंस शीट के आकार में निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही है, परंतु हमें अपनी बाज़ार हिस्सेदारी पर भी निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है। हमें अपने उत्पादों एवं सेवाओं के स्तर को बढ़ाते हुए इस हिस्सेदारी को और बढ़ाना होगा। इसके लिए हमें अपने मौजूदा खाताधारक वर्ग को बनाए रखते हुए नए ग्राहकों को बैंक से जोड़ना होगा। हाल ही में शुरू किए गए अभियान '**बॉब के संग, त्यौहार की उमंग**' के अंतर्गत अनेक लाभों/रियायतों के साथ ग्राहकों की अलग-अलग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बचत खातों की एक श्रृंखला (बॉब लाइट बचत खाता, बॉब ब्रो बचत खाता, बड़ौदा वेतन खाता, बॉब परिवार खाता) का शुभारंभ भी इसी कार्यनीति का हिस्सा है। ऋण सेगमेंट में आकर्षक ब्याज दरों की पेशकश भी संभावित ग्राहकों को ऑन-बोर्ड करने हेतु अच्छी पहल है। आवश्यकता है कि हम बैंक की इन पहलों को अधिक से अधिक ग्राहकों तक पहुंचाते हुए बैंक के लिए अधिक से अधिक व्यवसाय का संग्रहण करें।

मेरा यह भी मानना है कि बाज़ार और ग्राहकों से प्राप्त सकारात्मक फीडबैक ही हमारी असली उपलब्धि है। अतः आवश्यकता इस बात की भी है कि हम नियमित तौर पर अपने उत्पादों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन भी करें और देखें कि क्या हमारे उत्पाद ग्राहकों की पसंद और आवश्यकताओं के अनुरूप हैं ? इन्हें किस प्रकार से और बेहतर बनाया जा सकता है ? इसके लिए समय-समय पर विभिन्न माध्यमों से ग्राहकों से लिए गए फीडबैक और मार्केट इंटेलिजेंस के आधार पर हमें अपने समकक्ष और प्रतिस्पर्धी बैंकों और एनबीएफ़सी के उत्पादों की अच्छी विशेषताओं का अध्ययन कर उनकी व्यवहार्यता की जांच करनी होगी। हम अपने उत्पादों और सेवाओं के लिए चलाए जाने वाले अभियानों और इनसे संबंधित पॉलिसी निर्माण में सुझाव के लिए नियमित आधार पर अंचल / क्षेत्रीय प्रमुखों / वर्टिकल प्रमुखों के साथ चर्चा की पहल कर रहे हैं ताकि नीतिगत निर्णय लेते समय फील्ड स्तर से प्राप्त होने वाले इनपुट्स का पूरा ध्यान रखा जा सके।

पारंपरिक शाखाओं का विशेषीकृत शाखाओं में वर्गीकरण भी आने वाले समय में बैंक की लाभप्रदता की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण होगा। शाखाओं को विशेषीकृत किए जाने से वे किसी एक सेगमेंट पर अधिक फोकस करते हुए अन्य सेगमेंट को भी अपनी सेवाएँ सुचारु रख सकेंगी। एसएमएस, सीएफ़एस, मिड कॉर्पोरेट, सीपीपीसी, कैंप, आरओएसएआरबी, आईएफ़एससी शाखा आदि के माध्यम से बैंक पहले ही इस दिशा में प्रयासरत रहा है। अगस्त 2023 माह के दौरान 251 शाखाओं में नई स्वर्ण ऋण शॉपी का शुभारंभ विशेषीकृत शाखाओं के विस्तार की नीति का ही हिस्सा है।

बैंक का प्रयास है कि डिजिटल भारत की नई पीढ़ी के ग्राहकों को त्वरित और सुरक्षित भुगतान के लिए डिजिटल बैंकिंग के नए प्लेटफॉर्म्स उपलब्ध करवाए जाएं। इसके लिए बैंक द्वारा भारतीय रिज़र्व बैंक की डिजिटल करेंसी ई-रूपी की संकल्पना को अमली जामा पहनाने की दिशा में देश के 26 प्रमुख शहरों में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध तरीके से CBDC UPI QR इंटरऑपरेबिलिटी सुविधा की शुरुआत कर दी गई है। इसके अतिरिक्त, भविष्य में भुगतान प्रक्रिया को और अधिक सरल बनाने की दिशा में क्रांतिकारी पहल करते हुए ग्राहकों को छोटे मूल्य के लेन-देन करने की सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से UPI LITE - स्मॉल वैल्यू ऑन डिवाइस वॉलेट का शुभारंभ भी किया गया है। भुगतान के अलावा परिचालन तंत्र के डिजिटलीकरण के अंतर्गत बैंक द्वारा ग्राहकों को अब वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन री-केवाईसी अपडेट करने की सुविधा भी प्रदान की जा रही है।

विगत वर्षों में बैंक द्वारा राजभाषा हिंदी सहित सभी क्षेत्रीय भाषाओं को ग्राहकों की बैंकिंग की भाषा बनाने की दिशा में लगातार प्रयास किए गए हैं। मुझे आप सभी से साझा करते हुए हर्ष हो रहा है कि बैंक की इन पहलों को मान्यता प्रदान करते हुए हमारे बैंक को राष्ट्रीयकृत बैंकों की श्रेणी में वर्ष 2022-23 हेतु भारत सरकार की 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' योजना के अंतर्गत 'द्वितीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। भारतीय भाषाएं ग्राहकों के साथ जुड़ाव स्थापित करने की अतुलनीय माध्यम हैं। हमें इस तथ्य का ध्यान रखते हुए इनके उपयोग में लगातार बढ़ोत्तरी के प्रयास करने हैं।

बैंक के व्यवसाय में निरंतर नए आयामों को जोड़ने और उसे सुदृढ़ बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि हम अपनी अनुपालन प्रक्रिया को श्रेष्ठतम स्थिति की ओर लेकर जाएं। 'अनुपालन के साथ व्यवसाय' के मंत्र को अपनी कार्य-संस्कृति में लाते हुए हमें बैंक द्वारा निर्धारित नैतिक आचरण के सूत्रों का अक्षरशः पालन करना होगा तभी हम एक संवहनीय वृद्धि दर कायम रखने में सफल होंगे। मेरा सुझाव है कि हम सभी सहयोगी स्टाफ सदस्यों के समक्ष एक आदर्श नैतिक नेतृत्व प्रस्तुत करें और व्यवसाय विकास और अनुपालन को सदैव समानांतर रूप से आगे बढ़ाना सुनिश्चित करें।

आगामी त्यौहारी महीनों के दौरान अधिकाधिक व्यावसायिक सफलता के लिए अग्रिम शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित,

देबदत्त चांद

देबदत्त चांद
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी पत्रिका *'अक्षय्यम्'* के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए हमेशा से एक सुखद अनुभूति रही है। ग्राहकों को आसान एवं त्वरित बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ ही बेहतर ग्राहक अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य से सभी स्तरों पर प्रतिबद्ध प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों के सकारात्मक परिणाम बैंक के व्यावसायिक विकास में परिलक्षित हो रहे हैं। आज के प्रतिस्पर्धी बैंकिंग दौर में हम ग्राहकों को उनकी अपनी भाषा में बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराकर बेहतर ग्राहक जुड़ाव स्थापित करने और ग्राहक आधार में वृद्धि करने की दिशा में प्रभावी तरीके से प्रगति कर रहे हैं।

बैंक ने एमएसएमई व्यवसाय के संवर्धन पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करते हुए देशभर में एमएसएमई पर केंद्रित 330 विशेषीकृत शाखाएं (Specialized Branches) निर्धारित की हैं जिनका उद्देश्य इस क्षेत्र में ऋण प्रवाह में बढ़ोत्तरी करते हुए बैंक के लिए एक वृहद एवं गुणवत्तापूर्ण एमएसएमई ऋण पोर्टफोलियो का निर्माण करना है। साथ ही, बैंक कृषि एवं स्वर्ण ऋण व्यवसाय की अपार संभावनाओं के प्रति भी जागरूक है। बैंक के सकल अग्रिम पोर्टफोलियो में कृषि ऋण का महत्त्वपूर्ण योगदान है। बैंक कृषि ऋण के अंतर्गत विभिन्न योजनाओं जैसे कि बीकेसीसी, कृषि संबद्ध गतिविधियों, ट्रैक्टर ऋण, डेयरी, पशुपालन, मत्स्य पालन इत्यादि विभिन्न ऋणों के माध्यम से कृषकों को आसान प्रक्रिया और रियायती ब्याज दर पर ऋण सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्यों के अनुरूप अपने उत्पादों और प्रक्रियाओं को सरलीकृत कर रहा है। स्वर्ण ऋण योजना के अंतर्गत अधिकतम व्यवसाय संगृहीत करने की दृष्टि से बैंक द्वारा चुनिंदा शाखाओं में **'गोल्ड लोन शॉपी'** सेवा की शुरुआत की गई है। गोल्ड लोन शॉपी द्वारा स्वर्ण ऋण ग्राहकों को समर्पित और त्वरित सेवाएं उपलब्ध करायी जा रही हैं। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप बैंक के स्वर्ण ऋण व्यवसाय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

तकनीक आधारित और प्रतिस्पर्धात्मक बैंकिंग के मौजूदा दौर में उत्पाद और सेवाओं को निरंतर ग्राहकोन्मुखी और उन्नत बनाने के साथ ही इनका प्रभावी रूप में प्रचार-प्रसार करना भी आवश्यक है। बैंक के उत्पादों को विभिन्न माध्यमों द्वारा ग्राहकों के बीच प्रचारित-प्रसारित किया जा रहा है। इसके अलावा, हम अपने ग्राहकों की सुविधा के लिए अपने डिजिटल उत्पादों को हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करा रहे हैं जिससे ग्राहकों के बीच हमारे बैंक के उत्पादों की लोकप्रियता में बढ़ोत्तरी हुई है।

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हमारे बैंक की विशिष्ट पहचान है। बैंक अपनी पहचान और प्रतिष्ठा के अनुरूप निरंतर नवोन्मेषी पहलों के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन को विभिन्न स्तरों पर प्रोत्साहित कर रहा है। इन प्रतिबद्ध और समन्वित प्रयासों के परिणामस्वरूप राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य के लिए हमारे बैंक को भारत सरकार के सर्वोच्च पुरस्कार **'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'** के अंतर्गत वर्ष **2022-2023** के लिए **'द्वितीय पुरस्कार'** प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार भारत सरकार द्वारा पुणे (महाराष्ट्र) में आयोजित हिंदी दिवस समारोह -2023 एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री देबदत्त चांदजी ने प्राप्त किया। यह उपलब्धि सभी बड़ौदियन साथियों के समन्वित प्रयासों का प्रतिफल है। इस उपलब्धि के लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। तथापि इस दिशा में और सक्रिय प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि हम भविष्य में इस पुरस्कार के अंतर्गत प्रथम स्थान अर्जित कर सकें।

मुझे विश्वास है कि आपसी सामंजस्य, नीतिपरक कार्यप्रणालियों के अनुसरण और प्रतिबद्ध प्रयासों से हम अपने व्यावसायिक लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त करेंगे और बैंक की प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

अजय के. खुराना

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए एक विशेष अवसर होता है। बैंकिंग क्षेत्र शुरूआत से ही वित्तीय जिम्मेदारी वाला क्षेत्र रहा है और इसी वजह से बैंक के ग्राहकों और अन्य हितधारकों के हित में कार्य करना सदैव हमारी प्राथमिकता रही है। किसी भी समाज में वित्त संबंधी मामले काफी महत्त्वपूर्ण और संवेदनशील होते हैं। चूंकि हमारा कार्य भी वित्तीय लेनदेन एवं प्रबंधन से संबंधित है, इस लिहाज से बैंकिंग कार्य के स्वरूप और संवेदनशीलता को देखते हुए हमारे लिए प्रत्येक स्थिति में नियमबद्ध और सजग रहना अत्यंत आवश्यक है।

बैंक रिटेल व्यवसाय के संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध प्रयास कर रहा है। बैंक के रिटेल ऋणों में वृद्धि की दर अनेक तिमाहियों से बैंकिंग उद्योग के समकक्षों की तुलना में लगातार अधिक बनी हुई है। इस वृद्धि दर को बनाए रखने एवं त्यौहारों के महीनों का अधिक से अधिक लाभ उठाने की दृष्टि से बैंक ने 'शुभ भी, लाभ भी' नाम से एक मार्केटिंग मीडिया कैंपेन आरंभ किया है, साथ ही बैंक के स्टाफ सदस्यों के लिए 'बॉब के संग त्यौहारों की उमंग' नाम से रिवार्ड एवं रिकगनिशन प्रोग्राम भी आरंभ किया है। हमें पूरा विश्वास है कि सभी बड़ौदियन इस प्रोग्राम का पूरा लाभ उठाते हुए बैंक के लिए अधिक से अधिक रिटेल व्यवसाय संगृहीत करेंगे।

समाज के प्रति बैंकिंग क्षेत्र की जवाबदेही हमेशा से रही है। वास्तव में हमारा अस्तित्व समाज से ही है। जब भी कोई सामाजिक संकट की आहट आती है, बैंकिंग क्षेत्र स्वतः ही इस संकट से उबरने के लिए सक्रियता से कदम बढ़ाता है। यही वजह है कि आज जलवायु परिवर्तन संबंधी चुनौती का सामना करने के लिए हमारी कार्यप्रणाली में भी परिवर्तन आने के साथ-साथ नई प्राथमिकताएं हमसे जुड़ रही हैं। जलवायु परिवर्तन का मुद्दा कोई नया विषय नहीं है परंतु मौजूदा दौर में यह संकट तेजी से गहरा रहा है इसलिए समय रहते व्यावसायिक समुदायों को भी पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से कार्य करना होगा। विश्व भर में इस दिशा में कारगर कदम उठाने की पहल तेज होती दिख रही है। यही कारण है कि आज विश्व में ग्रीन टेक्नोलॉजी, ग्रीन इकॉनोमी, ग्रीन बॉण्ड, ब्ल्यू इकॉनोमी, ब्ल्यू बॉण्ड और सोशल बॉण्ड पर गहन सोच-विचार किया जा रहा है। पर्यावरण हित के लिए इन माध्यमों को दृष्टिकोण में रख कर कार्य करना काफी कारगर समझा जा रहा है।

पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से हमारे बैंक ने ईएसजी के सिद्धातों को अपनाने के साथ-साथ कई प्रभावी कदम उठाए हैं। बैंक हरित पहल के तहत कई कार्य कर रहा है। ग्रीन बिल्डिंग, पौधरोपण, जल संरक्षण, पेपरलेस बैंकिंग, ऊर्जा संरक्षण, ग्रीन पिन, वर्चुअल डेबिट कार्ड, हरित धरती के संबंध में जागरूकता का प्रसार जैसी बैंक की ग्रीन पहलें न केवल संसाधनों के संरक्षण की दिशा में उपयोगी कदम हैं बल्कि इनसे एक हरित भविष्य की राह सुनिश्चित होती है।

मुझे विश्वास है, आप सभी बैंक के हित को ध्यान में रखते हुए मौजूदा दौर की अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य करेंगे और बैंक के लिए एक संवहनीय व्यवसाय विकास को जारी रखने में अहम भूमिका निभाएंगे।

आप सभी को आने वाले त्यौहारों की हार्दिक शुभकामनाएं!

जयदीप दत्ता राय

जयदीप दत्ता राय

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की सृजनात्मक पत्रिका '**अक्षय्यम्**' के अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करना और इसके माध्यम से अपने विचारों और अनुभवों को आपसे साझा करना मेरे लिए सदा ही हर्ष का विषय रहा है। यह पत्रिका राजभाषा के क्षेत्र में हमारे नवाचारों, पहलों और प्रयासों को समग्र रूप में प्रस्तुत करने का उत्तम माध्यम है। यह हमारी भाषायी क्षमता और स्टाफ सदस्यों के रचना कौशल का परिलक्षित स्वरूप है। अपनी भाषाओं के संवर्धन की दिशा में किए जाने वाले महत्वपूर्ण प्रयासों की स्वीकृति के रूप में बैंक को भारत सरकार की 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' योजना के तहत वर्ष 2022-2023 हेतु सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया जाना हम सभी के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। इस उपलब्धि को भविष्य में नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए आवश्यक है कि हम भाषा संबंधी प्रयासों को बैंक के व्यवसाय तथा ग्राहकों की सुविधा से जोड़ें। इस दिशा में बैंक द्वारा अनेक पहलें की गई हैं, आवश्यकता है कि हम इन व्यवसायोन्मुख भाषायी पहलों से अपने ग्राहकों को अवगत कराएं और उन्हें अपनी भाषा में बैंकिंग का सुरक्षित एवं सुखद अनुभव प्रदान करें।

डिजिटलीकरण के दौर में बैंक ग्राहकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए भुगतान के लिए जैसे यूपीआई, यूपीआई लाइट, सीबीडीसी रूपी, यूपीआई आधारित नकदी आहरण जैसी नई-नई तकनीकें लेकर आए हैं, वहीं गैर वित्तीय सेवाओं का विस्तार करते हुए आईवीआर सेवाएं, चैट-बॉट और व्हाट्सऐप बैंकिंग जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध करवा रहे हैं। खास बात ये है कि बैंकों द्वारा प्राथमिकता से इन सभी सेवाओं में हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस पहल ने बैंकों को ग्राहकों के साथ जुड़ने, सेवाओं के विस्तार और ब्रांड इमेज को मजबूत बनाने के नए अवसर प्रदान किए हैं। हमारा बैंक भी इन प्लेटफार्मों के माध्यम से, ग्राहकों को उनकी भाषा में नए उत्पादों या सेवाओं पर अपडेट साझा कर रहा है, वित्तीय सलाह प्रदान कर रहा है और ग्राहकों की शंकाओं का त्वरित समाधान कर रहा है। निज भाषा में यह सीधा संवाद बैंक और उसके ग्राहकों के बीच विश्वास और पारदर्शिता को बढ़ाने का काम कर रहा है। इस शुरुआत को आगे बढ़ाते हुए हम वर्तमान समय के सबसे लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म व्हाट्सऐप बैंकिंग पर अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए इसमें सिलसिलेवार तरीके से क्षेत्रीय भाषाओं के विकल्पों की संख्या को बढ़ाने की दिशा में काम कर रहे हैं।

एक बैंक के रूप में, समावेशी बैंकिंग की अवधारणा के साथ, हम एक ओर जहां आम ग्राहक की हर बैंकिंग आवश्यकता पर काम कर रहे हैं, तो दूसरी ओर अपनी अंतर्राष्ट्रीय उपस्थिति के साथ अनिवासी भारतीयों, भारतीय कंपनियों और कॉर्पोरेट्स की अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं। बैंक द्वारा हाल ही में गिफ्ट सिटी (SEZ) गांधीनगर में स्थापित की गई ऑफशोर बैंकिंग इकाई अंतर्राष्ट्रीय ट्रेजरी के लिए वैश्विक स्तर के अत्याधुनिक डीलिंग रूम जैसी सुविधा के साथ कॉर्पोरेट्स के लिए व्यवसाय विकास का एक समग्र केंद्र सिद्ध हो रही है। ओवरसीज केंद्रों के आईटी अपग्रेडेशन और अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग के ऋण उत्पादों की शृंखला में नए उत्पादों के समावेश के सकारात्मक रुझान इस तिमाही के परिणामों में देखने को मिल रहे हैं जहां बैंक ने मौजूदा वित्तीय वर्ष की दूसरी तिमाही के दौरान वैश्विक ऋण में वर्ष-दर-वर्ष 17.3% और अंतर्राष्ट्रीय जमाओं में 33.8% प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। हम संस्थागत ऋण के क्षेत्र में और बेहतर प्रयास करने में सक्षम हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाली तिमाहियों के दौरान हम हर वर्ग की आकांक्षाओं को समाहित करते हुए बैंक को समावेशी बैंक के रूप में स्थापित करने में सफल होंगे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

ललित त्यागी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका '**अक्षय्यम्**' के नवीनतम अंक के माध्यम से पहली बार अपने विचार आपसे साझा करना मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है। यह पत्रिका राजभाषा विषयक गतिविधियों के साथ-साथ समसामयिक विषयों पर गुणवत्तापूर्ण सामग्री को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है।

किसी भी संस्था के लिए उसके कर्मचारी सबसे मूल्यवान आस्ति होते हैं। कोई भी संस्था अपेक्षित विकास तभी कर सकती है जब स्टाफ सदस्य ऐसे माहौल में काम करते हैं जो उन्हें स्वयं के व्यक्तिगत विकास के लिए अनुकूल लगे, जहां वे प्रत्येक सुबह उत्साह के साथ सेवा के लिए आएं, सम्मान के साथ काम करें और पूरी निष्ठा के साथ अपनी क्षमताओं का भरपूर उपयोग कर सकें। अतः हमारा यह प्रयास रहेगा कि आप सभी के लिए हम शिक्षण और विकास के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराएं ताकि बैंकिंग के निरंतर बदलते परिदृश्य हेतु हम अपने आपको तैयार रख सकें। बैंक की मानव संसाधन नीति को उद्योग स्तर पर सराहना मिल रही है। बैंक ने ग्रेट एम्प्लॉयर्स प्राइवेट लिमिटेड के स्वर्ण मानदंड यथा- विश्वसनीयता, सम्मान, निष्पक्षता, गौरव और सौहार्द के 5 आयामों पर श्रेष्ठ प्रदर्शन कर अप्रैल, 2022 से मार्च, 2023 की अवधि के लिए 'ग्रेट प्लेस टू वर्क' का खिताब जीता है। श्रेष्ठ परंपराओं को जारी रखने की अपनी प्रतिबद्धता के तहत हम भविष्य में भी इस उपलब्धि को बरकरार रखने हेतु संगठन में ऐसा कार्य परिवेश बनाए रखने, साथ ही इसमें निरंतर बेहतरी करने हेतु हर संभव प्रयास करेंगे।

बैंकिंग उद्योग में लगातार परिवर्तन हो रहे हैं। अतः यह महत्त्वपूर्ण है कि हम न केवल अपने विकास और सफलता पर ध्यान केंद्रित करें बल्कि नैतिकता और अनुपालन संस्कृति को भी ध्यान में रखें जो हमारे कार्यों और निर्णयों का आधार बनते हैं। किसी भी संस्था की संस्कृति उसके विचारों, मूल्यों और धारणाओं के एक समूह के रूप में कार्य करती है जो उसके स्टाफ सदस्यों द्वारा साझा की जाती हैं। इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपनी संस्था में एक ऐसी आदर्श स्थिति स्थापित करें जहां प्रत्येक सदस्य ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध हो। यह स्थिति हमारे कर्मचारियों, भागीदारों, हितधारकों और सबसे महत्त्वपूर्ण रूप से हमारे ग्राहकों के साथ हमारे संबंधों को और अधिक मजबूत करेगी। अनुपालन और नैतिक सिद्धांतों पर आधारित व्यवसाय बैंक के लिए लाभदायक एवं संवहनीय सिद्ध होगा। यह लंबी अवधि तक हमारी प्रतिष्ठा और सम्मान को बनाए रखेगा। अतः आपसे संगठन के भीतर अनैतिक प्रथाओं और गैर-अनुपालन की स्थिति के प्रति शून्य-सहिष्णुता का भाव विकसित करने की अपेक्षा की जाती है।

उपरोक्त सभी व्यवहारों में हमारी भाषाओं का प्रयोग एक महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में देखा जा सकता है। हमें अपने ग्राहकों के साथ, चाहे वे बाह्य या आंतरिक हों, उनकी भाषा में संवाद स्थापित करनी चाहिए। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में वह सामर्थ्य है जो ग्राहकों के साथ हमारे संबंधों को और प्रगाढ़ बनाने में सहयोग कर सकता है। यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई कि हमारे बैंक में ग्राहकोन्मुखी सभी ऐप्लिकेशनों में हिंदी और भारतीय भाषाओं को शामिल करने का प्रयास निरंतर जारी है। आप सभी से अपील है कि आप भी अपने दैनिक बैंकिंग कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करें और राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ता प्रदान करें।

मुझे विश्वास है कि हम सभी स्तरों पर किए जा रहे संगठित प्रयासों के साथ नैतिकतापूर्ण आचरण करते हुए अभीष्ट लक्ष्यों को हासिल करने में सफल होंगे और अपनी व्यावसायिक यात्रा को नई ऊर्जा के साथ जारी रखते हुए बैंक को समग्र रूप में सुदृढ़ता प्रदान करने में सफल होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

लाल सिंह

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

वर्ष – 18 * अंक – 75 * जुलाई–सितंबर 2023

–: कार्यकारी संपादक :–

संजय सिंह

प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

–: संपादक :–

पुनीत कुमार मिश्र

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति)

–: सहायक संपादक :–

प्रमोद बर्मन

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

अजित सिंह

प्रबंधक (राजभाषा)

–: संपर्क :–

राजभाषा विभाग

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन, पांचवी मंजिल,
आर सी दत्त रोड, अलकापुरी, बड़ौदा – 390007

फोन : 0265–2316581 / 6587

ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com
akshayyam@bankofbaroda.com

राजभाषा विभाग, बैंक ऑफ़ बड़ौदा,
पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड, अलकापुरी,
बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित।

रुपांकन एवं मुद्रण

मे. प्रिंट प्लस प्रा.लि.,
212, स्वस्तिक चेंबर्स, एस.टी. रोड,
चेंबूर, मुंबई 400071

प्रकाशन तिथि : 30/10/2023

सूचना :

बैंक के स्टाफ सदस्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएं/ सामग्री ई–मेल: akshayyam@bankofbaroda.com पर भेज सकते हैं।

अनुक्रम

इस अंक में

झारखंड की लेडी टार्जन – जमुना टुडू..... 8

विकास बनाम पारिस्थितिकी तंत्र 10

प्लास्टिक प्रदूषण..... 13

वर्ष 2030 में भारतीय बैंकिंग 17

फिशिंग : डिजिटल धन सुरक्षा की चुनौती 23

भाषा एवं संस्कृति 28

विपश्यना – एक अविस्मरणीय यात्रा 32

ठंडी चाय का कप 36

जिंदगी का फलसफा 38

5 घंटे का नियम 40

अमृतसर का स्वर्ण मंदिर..... 43

अपने ज्ञान को परखिए 46

बैंकिंग शब्द मंजूषा..... 47

चांदपुर की चंदा – पुस्तक समीक्षा 48

चित्र बोलता है..... 50

कार्यकारी संपादक की कलम से

'अक्षय्यम्' के इस नवीनतम अंक के जरिए आपसे संवाद करना मेरे लिए विशेष अवसर है। सर्वप्रथम आप सभी को वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए बैंक को प्राप्त 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं! बैंक में हो रही सभी नवोन्मेषी पहलों में जहां उच्च प्रबंधन का मार्गदर्शन एवं सुझाव शामिल है वहीं ग्राहकों तक उन पहलों का लाभ पहुंचाने वाले स्टाफ सदस्यों की लगन भी शामिल है। इस क्रम में बैंक ने राजभाषा हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी सेवाएं उपलब्ध कराकर निरंतर ग्राहक आधार और विश्वास को बढ़ाने का कार्य किया है। बदलते परिवेश में डिजिटल माध्यमों से जन पटल का विस्तार हुआ है और हम इस पटल का तभी प्रभावी उपयोग कर पाएंगे जब हम जन भाषा से उनके मानस से जुड़ेंगे। हिंदी के साथ-साथ भारतीय भाषाओं में सेवाएं उपलब्ध कराने का जो संकल्प बैंक ने लिया है उसकी अगली कड़ी के रूप में हमने अपने विभिन्न उत्पादों जैसे गृह ऋण, कार ऋण, शिक्षा ऋण आदि से संबंधित पीपीटी हिंदी के साथ-साथ संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं में परिचालन इकाइयों को उपलब्ध कराई है। जिसका उपयोग उन्हें अपना ग्राहक आधार बढ़ाने में अवश्य सहयोग करेगा।

पत्रिका के मुद्रित रूप को तो हमारे सुधी पाठकों ने अपना भरपूर सहयोग दिया ही है हालांकि डिजिटल के इस युग में जहां सब कुछ एक क्लिक की ही दूरी पर है तो हमने भी अपनी पत्रिका को पूर्णतः डिजिटल कर दिया है। किंतु इस डिजिटलीकरण के साथ एक और आवश्यकता महसूस की गई की इसे ऑडियो रूप में प्रस्तुत करके सुधी पाठकों के साथ साथ सुधी श्रोताओं तक भी पहुंचाया जाए जिसके फलस्वरूप पत्रिका की कहानियों-कविताओं की ऑडियो बुक 'बेस्ट ऑफ बॉबमैत्री' की संकल्पना के साथ साकार हुई। पत्रिका और उसमें प्रकाशित स्टाफ सदस्यों के साहित्य के पठन-पाठन के साथ-साथ उसके वाचन-श्रवण की पहल का आप सभी ने भरपूर प्रतिसाद दिया है।

भारतीय भाषाओं के प्रचार प्रसार के लिए हम एक और नई पहल के विषय में सोच रहे हैं जिसमें हम अपने स्टाफ सदस्यों द्वारा क्षेत्रीय भाषा में लिखी जा रही लघुकथाओं-कविताओं में से किसी एक रचना को अपनी पत्रिका में उसके मूल पाठ के साथ हिंदी में अनूदित कर प्रकाशित करें। हमें विश्वास है कि यह पहल स्टाफ सदस्यों के अनुभवों एवं भावों को साझा करने का एक विस्तृत मंच प्रदान करेगी।

पत्रिका के इस अंक में हमने जंगलों के संरक्षण के लिए समर्पित पर्यावरणविद् **पद्मश्री जमुना टुडू** का साक्षात्कार प्रकाशित किया है। पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव डालने वाले प्लास्टिक के निवारक उपायों से संबंधित आलेख **'प्लास्टिक प्रदूषण'** हमें पर्यावरण के प्रति जागरूक करता है। ज्ञान वृद्धि में पुस्तकों के महत्त्व को तो हम जानते ही हैं किंतु पढ़े हुए पर चिंतन करना, उसके बारे में लिखना भी हमारे चिंतन का दायरा बढ़ाता है। इस विषय से संबंधित एक लेख **'5 घंटे का नियम'** भी आपको अवश्य ही प्रेरित करेगा। डिजिटल धोखाधड़ी के प्रति जागरूकता हेतु **''फिशिंग: डिजिटल धन सुरक्षा की चुनौती''** आलेख द्वारा पाठक फिशिंग पर विस्तृत जानकारी प्रदान करेंगे। इस अंक में आपको जीवनानुभव पर आधारित लघु कहानियां भी पढ़ने को मिलेंगी। जिनमें **'जिंदगी का फलसफा'** मार्मिक ढंग से प्रश्न करती है। इसके अलावा इस अंक में हमने स्टाफ सदस्यों की भावनात्मक अभिव्यक्तियों, अनुभवों, प्रमुख गतिविधियों, कविताओं जैसी रोचक सामग्रियों को भी शामिल किया है। आशा है कि पत्रिका का यह अंक आपको अच्छा लगेगा। पत्रिका के इस अंक के सबंध में हमें आपके अभिमत की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

संजय सिंह
प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

साक्षात्कार

झारखंड की लेडी टार्जन- जमुना टुडू

(एक मुलाक़ात)

सौरभ कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक एवं संकाय सदस्य
बड़ौदा अकादमी, जमशेदपुर

पिछले 25 वर्षों से वन संरक्षण एवं जंगलों की अवैध कटाई के प्रति आवाज़ उठाती, गांव-गांव लोगों को जागृत करती, वन- माफियाओं से सीधी टक्कर लेती, पद्मश्री से सम्मानित, झारखंड की लेडी टार्जन सुश्री जमुना टुडू से मुलाकात का सौभाग्य मिला।

जंगल की रक्षा के लिए समर्पित जमुना टुडू को वर्ष 2019 में पद्मश्री सम्मान मिला। पूर्वी सिंहभूम जिला स्थित चाकुलिया प्रखंड की मुटुरखाम ग्राम निवासी जमुना टुडू को 2014 में 'गॉडफ्रे फिलिप्स ब्रेवरी अवार्ड' व 2018 में 'वूमेन ट्रांसफार्मिंग इंडिया अवार्ड' भी मिल चुका है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम के दौरान भी जमुना टुडू की प्रशंसा की थी। प्रस्तुत हैं, सुश्री जमुना टुडू से बातचीत के प्रमुख अंश : संपादक

आप अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं जीवन से जुड़े पहलुओं के बारे में कुछ बताएं।

मेरा जन्म 19 दिसम्बर, 1980 को ओड़िशा के मयूरभंज ज़िले में हुआ। बचपन से ही मुझे पेड़-पौधों से विशेष लगाव रहा। मुझे याद है, मैं अपने पिता के साथ पौधों को लगाती थी। मेरे पिताजी हमेशा कहते थे कि सिर्फ पौधे लगाने से कुछ नहीं होगा। जब तक ये पेड़ों के रूप में विकसित न हो जाएं तब तक आपकी ज़िम्मेदारी समाप्त नहीं होती।

वर्ष 1998 में मेरी शादी झारखंड के चाकुलिया प्रखंड के बेडाडीह टोला गांव में हुई थी। मेरे गाँव के आस- पास जंगल क्षेत्र है। जब मैं जंगलों में जाती थी तो आभास होता था कि जंगल दिन-ब-दिन समाप्त हो रहे हैं, ऊजड़ रहें हैं। मेरा मन विचलित हो गया। बचपन से पेड़ों के प्रति जो लगाव रहा उसने मेरी आत्मा को झकझोर दिया। उसी पल मैंने निर्णय लिया कि वन संरक्षण के लिए मैं हर संभव कोशिश करूंगी।

आपने जब जंगलों को सिकुड़ते देखा तब इसका क्या कारण पाया?

जंगलों के दिन-ब-दिन कम होने के दो प्रमुख कारण थे। पहला आस-पास के ग्रामीण जो सदियों से लकड़ी काट कर और उसे बेच कर अपना भरण-पोषण कर रहे थे, दूसरा वन-माफियाओं का तंत्र जो पैसों के लालच में जंगलों की अंधाधुन कटाई कर रहे थे।

जहां पहले मुझे ग्रामीणों को वन संरक्षण के महत्त्व के प्रति जागरूक और शिक्षित करना था तथा जीविकोपार्जन के दूसरे तरीकों की और प्रेरित करना था वहीं वन माफियाओं के खिलाफ भी जन आंदोलन खड़ा करना था।

इस दिशा में आपको किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा, ज़रा विस्तार से बताएं।

सबसे पहले मैंने अपने गांव से शुरुआत की जहां मुझे भारी विरोध का सामना करना पड़ा। गाँव वालों ने मेरा विरोध शुरू कर दिया। मुझसे कहा गया कि अगर हम लकड़ी नहीं काटेंगे तो खाएंगे क्या? मेरी सबसे बड़ी चुनौती अपने गांव वालों को वन संरक्षण के प्रति जागरूक और संवेदनशील करना था। अथक प्रयास के बाद मेरे गांव के लोगों ने इसका महत्त्व समझा और लकड़ी की कटाई पर विराम लगाया। इससे मेरा आत्म विश्वास बढ़ा और फिर मैंने आस-पास के गांवों में साइकिल से जा कर

प्रधान से मिलकर इस दिशा मे सहयोग के लिए आग्रह किया। शुरू में प्रधान भी इसके प्रति उत्साहित नहीं दिखे लेकिन धीरे-धीरे वो भी राज़ी हुए और ग्राम सभा के माध्यम से हमने आस-पास के गांवों में भी इस मुहिम को सार्थक बनाया।

इसके बाद मैंने अपने गांव की चार अन्य महिलों के साथ वनमाफिया के खिलाफ आंदोलन खड़ा किया, उनका विरोध किया। शुरुआत में काफ़ी मुश्किलें आईं, मुझ पर और मेरे परिवार पर कई जानलेवा हमले हुए, आए दिन धमकियां दी गई, घर में डकैती करवाई गई, सामाजिक बहिष्कार किया गया। आज भी तरह-तरह की धमकियां और यातनाएं दी जाती हैं पर इस सबके बावजूद मैं झुकी नहीं और अपने काम में निरंतर लगी हुई हूं।

आपने कई वन-रक्षक समितियों का गठन किया और आज झारखंड से निकलकर आप देश भर में वन संरक्षण के क्षेत्र में कार्य कर रहीं हैं। कृपया इसके बारे में बताएं।

शुरूआत में हम पांच महिलाओं ने इस आंदोलन को शुरू किया। वर्ष 2004 में मैंने "वन-रक्षक" समिति का गठन किया जिसमें गांव की 60 महिलाएं शामिल हुईं। वन-रक्षक का मुख्य काम गांव-गांव जाकर लोगों को वन संरक्षण एवं वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करना था। ये वन-रक्षक समिति वन माफियाओं के विरुद्ध रक्षा कवच का भी काम करती हैं और उनके खिलाफ सक्रिय रूप से आंदोलन चलाती हैं। आज हमारी 400 से भी ज़्यादा समितियां हैं जिसमें 10,000 से भी ज़्यादा सदस्य हैं। आज आपको बताते हुए मुझे गर्व होता है कि सामूहिक प्रयास से हमने 150 हेक्टयर वन क्षेत्र को न सिर्फ फिर से हरा-भरा किया अपितु पूर्वी-सिंघभूम में वनों की अवैध कटाई को समाप्त कर दिया है।

आप जंगल और पेड़ों को परिवार मानती हैं एवं विभिन्न रीतियों से इनका श्रृंगार करती हैं। कृपया हमारे पाठकों को इसके विषय में बताएं।

जी आपने बिल्कुल सही सुना है। हमारी परंपरा में जंगल को पूर्वज माना जाता है और उनका आदर किया जाता है। हर साल विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर हम सारी महिलाएं पेड़ों की आरती करती हैं। रक्षाबंधन के अवसर पर हम पेड़ों को राखी बांधते हैं। गांव में बेटी के जन्म पर 15 पौधे और बेटे के जन्म पर 10 पौधे लगाने एवं उसके संरक्षण की प्रथा की शुरूआत की गई है।

हमारे पाठकों के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगी।

वन संरक्षण की दिशा में काफी विचार-विमर्श, चिंतन-मनन होता है पर धरातल पर कुछ ठोस होता नहीं दिखता है। हमें ये समझना होगा कि अगर जंगल नहीं रहेंगे तो इसका नकारात्मक प्रभाव समस्त मानव जीवन पर पड़ेगा। आज जंगलों की अंधाधुंध कटाई के कारण तरह-तरह की प्राकृतिक आपदाएं आ रही हैं। आज कल विकास के नाम पर पहाड़ों पर वृक्षों की कटाई के कारण आए दिन बाढ़ आ रही है, मिट्टी की पकड़ कमजोर हो रही है और पहाड़ दरक रहे हैं। हम विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। इसे रोकना होगा। वन समितियों के माध्यम से लाखों लोग जुड़कर इस मुहिम को सार्थक बनाएं और पेड़ों को बचाएं ।

***

खामोशी

कुछ कहती नहीं सब सहती है,
ये खामोशी सब समझकर भी चुप रहती है ।

जब गुस्से का गुबार फट न पाए
जब सहकर भी दु:ख हम सह न पाएं
तब खामोशी कुछ न कहकर भी
सब जता जाती है, ये खामोशी ही है
जो सब समझकर भी चुप रह जाती है ।

जब चुभने लगे तीर जख्मों के इस हृदय पर
जब मरहम तक भी लेकर कोई पास ना आए
तब ये खामोशी ही खामोश रहकर हमें
ढाढ़स बंधाती है, ये खामोशी ही है
जो सब समझकर भी चुप रह जाती है

खामोशी से बात अक्सर हम अकेले में करते हैं
और खुल कर फिर ज़ज़्बात कुछ यूं उभरते हैं
बूंदें फिर अश्रु बनकर छलकने लगती हैं,
ये खामोशी चुप रहकर भी हमसे गुफ़्तगू करने लगती है ।

रुचिका जैन
अधिकारी
जयनगर शाखा
बेंगलूरु दक्षिण क्षेत्र

विकास बनाम पारिस्थितिकी तंत्र

अमिताभ शाह
प्रबंधक (ईसीएम)
क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

आए दिन हम विकास की बात मीडिया के माध्यम से सुनते रहते हैं। निश्चित रूप से किसी भी देश के लिए विकास को अच्छा माना जाता है पर कोई भी चीज मुफ्त में नहीं मिलती। हमें यह जानने की जरूरत है कि विकास किस कीमत पर हो रहा है। इसकी कीमत किसे और कितनी चुकानी पड़ रही है? इस बात को भी जानने और समझने की जरूरत है।

विकास का पैमाना जीडीपी है इसलिए सबसे पहले हम यह समझते हैं कि जीडीपी क्या है? – जीडीपी में किसी देश में एक निश्चित अवधि (एक तिमाही या एक वर्ष) में उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को मापा जाता है – अर्थात्, जिन्हें अंतिम उपयोगकर्ता द्वारा खरीदा जाता है। इसमें किसी देश की सीमाओं के भीतर उत्पन्न सभी आउटपुट को गिना जाता है।

उपर्युक्त संक्षिप्त परिभाषा से हम यह समझ सकते हैं कि इसमें देश के अंदर उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को शामिल किया जाता है। अब बात यह समझने की है कि इन उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के लिए परिस्थितिकी तंत्र (इकोसिस्टम) को क्या कीमत चुकानी पड़ती है। इसे हम आसान भाषा में समझने का प्रयास करें कि किसी भी तरह के उत्पादन का आधार कच्चा माल है और कच्चा माल हम या तो खनन द्वारा या पेड़ पौधों से या समुद्रों या जानवरों से प्राप्त करते हैं।

आपके द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे हर एक सामान की कीमत पारिस्थितिकी तंत्र को चुकानी पड़ती है। हम पारिस्थितिकी तंत्र को बचाने के लिए पाषाण युग या कांस्य युग में नहीं लौट सकते। चुनौती विकास दर को बनाए रखकर पारिस्थितिकी तंत्र को बचाने की है। इसके लिए लोगों में व्यापक जागरूकता की जरूरत है। हालांकि कंपनियां हमें अपना सामान बेचने की होड़ में लगी रहती हैं। विभिन्न विज्ञापनों के माध्यम से आपको जल्दी-जल्दी अपनी कार या मोबाइल या किसी और इलेक्ट्रोनिक समान को बदलने के लिए प्रेरित किया जाता रहता है। इसलिए हमें जरूरत के हिसाब से ही संसाधनों की खपत की ओर ध्यान देना चाहिए, नहीं तो यह खाई बढ़ती जाएगी और उसे भरना काफी मुश्किल होगा। साथ ही हर स्तर पर फैला हुआ प्रदूषण भी एक गंभीर मुद्दा है। इससे सिर्फ मनुष्यों को ही नहीं बल्कि धरती के प्रत्येक प्राणी, पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं को खतरा है।

पेड़-पौधों से हमें हमारी महत्त्वपूर्ण दवाओं के लिए भी कच्चा सामान मिलता है। कई महत्त्वपूर्ण और ज़्यादातर दवाइयों के स्रोत खास तरह के पौधे हैं। किसी क्षेत्र विशेष में पारिस्थितिकी तंत्र खत्म होने से वहां के पेड़-पौधे और पशु-पक्षियों में से कुछ विलुप्त हो जाते हैं। इंसान नई-नई दवाओं की खोज करता रहता है इसलिए विशेष प्रकार के पेड़-पौधों के विलुप्त हो जाने से हम इन खोजों के अवसर खो देंगे।

धरती गर्म हो रही है जिससे जलवायु में काफी उतार-चढ़ाव दिखाई दे रहे हैं। अब ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों को तेजी से अपनाए जाने की जरूरत है क्योंकि जैविक ईंधन (पेट्रोल या डीज़ल आदि) कच्चे तेल से बनाया जाता है जिसे धरती की गहराइयों से निकाला जाता है। निश्चित रूप से इनका भंडार सीमित है और एक दिन यह भंडार खाली हो जाएंगे पर धरती से निकाले गए ये कच्चे तेल, पेट्रोल और डीज़ल के अलावा और भी कई उत्पादों के लिए कच्चे माल हैं। इन उत्पादों का उपयोग होने के बाद इन्हें पर्यावरण (हवा, पानी और मिट्टी) में छोड़ दिया जाता है। ये पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं और ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन के लिए भी जिम्मेदार हैं जिससे धरती गर्म हो रही है। जहां खनन किया जाता है वहां के सभी पेड़-पौधे या जंगलों को काट दिया जाता है, वहां लोग बसने लगते हैं जिससे वहां का पारिस्थितिकी तंत्र नष्ट होने लगता है। प्राकृतिक गैस, कोयला जैसे जैविक ईंधन एक दिन खत्म हो जाएंगे। पर अभी भी विश्व ऊर्जा का आधे से अधिक भाग कोयले और प्राकृतिक गैस पर निर्भर है। इन्हें बनने में लाखों सालों का वक्त लगता है पर हम इन्हें तेजी से खत्म कर रहे हैं। इसलिए ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों पर निर्भरता बढ़ाना जरूरी है। हमें अक्षय ऊर्जा चाहिए और क्योंकि ऊर्जा के बिना ज्यादातर आधुनिक उत्पाद बेकार हैं।

प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं पर उनका दोहन अत्यधिक हो रहा है। पारिस्थितिकी तंत्र के दोहन और उसकी भरपाई के बीच का अंतर काफी अधिक है। कोई एक कार्य करके हम इसे ठीक नहीं कर सकते। बल्कि अलग-अलग स्तरों पर कई कार्य किए जाने की जरूरत है। नई-नई पहल और नए विचारों की जरूरत है। जो आने वाले समय में दिखाई देंगे क्योंकि ऐसा न होने पर हमारा इकोसिस्टम पूरी तरह खत्म हो जाएगा। दुनिया के कुछ हिस्सों में संसाधनों की अत्यधिक खपत चिंता का

विषय है। आबादी बढ़ रही है और संसाधनों की खपत भी बढ़ रही है। 100% रिसाइकल वाली वस्तुएं बहुत कम हैं। कल-कारखानों द्वारा नदी-नालों के माध्यम से समुद्र में बहाया जा रहा कैमिकल समुद्र की जैव-विविधता को खतरे में डाल रहा है। मछलियों का अत्यधिक शिकार समुद्र को निष्प्राण कर रहा है। इसलिए समुद्रों और जंगलों से हमें उतना ही लेना चाहिए जितना हम भरपाई कर सकें अन्यथा वहां की जैव-विविधता खत्म हो जाएगी और कई प्राणी विलुप्त हो जाएंगे।

प्लास्टिक और प्लास्टिक से बनी चीजों का कम से कम इस्तेमाल किया जाना चाहिए या उन्हें लंबे वक्त तक इस्तेमाल में लाया जाना चाहिए क्योंकि वे सड़ते नहीं हैं और उनका अस्तित्व पर्यावरण में दशकों तक बना रहता है। कारों और घरेलू इलेक्ट्रिक सामानों को भी जल्दी-जल्दी नहीं बदला जाना चाहिए। पारिस्थितिकी तंत्र को बचाने के लिए कुछ समूहों और गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं पर वे काफी नहीं हैं। इसे व्यवस्थित करने में समय लगेगा पर सभी की भागीदारी से यह संभव है। हम केवल सरकारी योजनाओं के भरोसे धरती को नहीं छोड़ सकते क्योंकि यह काम कर पाना सरकारों के लिए भी कठिन है। इसके लिए सभी की भागीदारी आवश्यक है। सतत विकास को जारी रखने के साथ-साथ उसके स्रोत को बचाने की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। जरूरत है दुर्लभ प्रजातियों के पेड़-पौधे और पशु-पक्षियों को बचाने की ताकि वे विलुप्ति के कगार पर न पहुंचे। जरूरत है पारिस्थितिकी तंत्र को भरपाई का अवसर दिया जाए। हमें यह जानने की भी जरूरत है कि विकास किस कीमत पर हो रहा है? और जरूरत है - आत्म मंथन की... ***

नराकास बैठकें

नराकास (बैंक), वडोदरा

दिनांक 07 अगस्त, 2023 को श्री दिनेश पंत, मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा की 71वीं छमाही बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम) मुंबई उपस्थित रहीं। बैठक में सदस्य बैंकों की छमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गई। साथ ही बेहतर कार्यनिष्पादन हेतु सदस्य बैंकों को आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया। बैठक में श्री संजय सिंह, प्रमुख - राजभाषा एवं संसदीय समिति ने सभी सदस्यों से राजभाषा के क्षेत्र में डिजिटल से जुड़ी नई पहलों को अपनाने पर बल दिया। बैठक में सभी सदस्य बैंकों के कार्यालय प्रमुख तथा राजभाषा प्रभारी उपस्थित थे। बैठक का समन्वय एवं संचालन श्री पुनीत कुमार मिश्र, सहायक महाप्रबंधक एवं सदस्य सचिव ने किया।

नराकास, मांड्या

दिनांक 07 सितंबर, 2023 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंड्या की पांचवीं अर्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, मंड्या के संयोजन में आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता नराकास अध्यक्ष एवं क्षेत्रीय प्रबंधक मांड्या ने की। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण), बेंगलूरु के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री अनिर्बान कुमार विश्वास ने सदस्य कार्यालयों की राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी समीक्षा की।

नराकास, राजनांदगांव

दिनांक 24 जुलाई, 2023 को बैंक ऑफ़ बड़ौदा के संयोजन एवं अग्रणी जिला प्रबंधक, राजनाँदगाँव श्री सर्वेन्द्र मलिक की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजनांदगांव की 11 वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। उक्त बैठक के दौरान श्री चंदन वर्मा, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा, अंचल कार्यालय, भोपाल तथा नराकास, राजनांदगांव के सदस्य कार्यालयों के कार्यालयाध्यक्ष तथा अन्य स्टाफ जुड़े थे।

नराकास, टोंक

दिनांक 31 जुलाई 2023 को बैंक ऑफ़ बड़ौदा के संयोजन में गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), टोंक की आठवीं अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के मार्गदर्शन में किया गया। बैठक में प्रधान कार्यालय से सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री पुनीत कुमार मिश्र, अंचल कार्यालय से मुख्य प्रबंधक राजभाषा श्री सोमेन्द्र यादव, समिति के अध्यक्ष एवं अग्रणी जिला प्रबंधक श्री विरेन्द्र यादव, सदस्य सचिव श्रीमती ज्योति अग्रवाल एवं सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यपालकों और राजभाषा प्रभारियों की उपस्थिति रही।

कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई में वार्षिक राजभाषा समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

दिनांक 27 अक्तूबर, 2023 को कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई में वार्षिक राजभाषा समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री देबदत्त चांद ने की। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक द्वय, श्री अजय के खुराना श्री लाल सिंह और मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री सुरेंद कुमार दीक्षित, प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति, श्री संजय सिंह, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र तथा कॉर्पोरेट कार्यालय के अन्य वरिष्ठ कार्यपालक भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. शीतला प्रसाद दुबे, कार्याध्यक्ष– महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई थे। हास्य कवि सम्मेलन में श्री एहसान कुरैशी (मुंबई), डॉ. मुकेश गौतम (मुंबई), सुश्री विभा सिंह (वाराणसी) एवं श्री दिलीप शर्मा (पुणे) जैसे प्रसिद्ध हास्य कवियों को भी आमंत्रित किया गया। बैंक की मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई की छात्राओं को सम्मानित किया गया। राजभाषा कार्यान्वयन में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने वाले विभागों/ वर्टिकलों और हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर कॉर्पोरेट कार्यालय में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

पर्यावरण

प्लास्टिक प्रदूषण

(प्लास्टिक की आसानी, पर्यावरण को परेशानी)

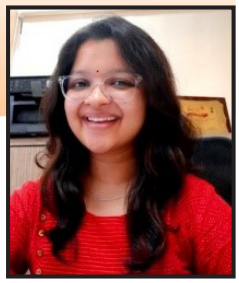

मनीषा
अधिकारी
अजमेर क्षेत्र

एक नए उत्साह और ताजगी का स्रोत है मानसून। हालांकि, बरसात का यह मौसम एक ऐसी सच्चाई भी हमारे सामने लाता है जिसके बारे में जागरूक एवं संवेदनशील होना आवश्यक है। एक अध्ययन के अनुसार, भारी बरसात और चक्रवात जैसी मौसमी घटनाओं के कारण काफी संख्या में प्लास्टिक मलबा भारत के समुद्र तट से महासागर तक पहुंच रहा है। इसके अलावा, हाल की एक रिपोर्ट में इस चिंताजनक वास्तविकता पर प्रकाश डाला गया कि प्लास्टिक प्रदूषण से बाधित हुई जल निकासी प्रणाली के कारण विश्व के 200 मिलियन से ज्यादा लोग बाढ़ का सामना कर रहे हैं।

यह एक निर्विवाद सत्य है कि आज सभी जगह प्लास्टिक मौजूद हैं और हाल ही में हुए वैज्ञानिक अनुसंधान के अुनसार यह प्लास्टिक मानव शरीर के अंदर भी मौजूद है। प्लास्टिक प्रदूषण एक बड़ा पर्यावरणीय संकट पैदा कर सकता है। अत: इसकी गंभीरता को देखते हुए दो महत्त्वपूर्ण उद्देश्यों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है: पहला, प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग करने से बचना और दूसरा, प्लास्टिक की बोतलों का उपयोग करने से मना करना।

दुनिया भर में, हर मिनट एक मिलियन प्लास्टिक की बोतलें खरीदी जाती हैं, जबकि हर साल पांच ट्रिलियन प्लास्टिक बैग का उपयोग किया जाता है और लगभग 19-23 मिलियन टन प्लास्टिक झीलों, नदियों और समुद्र में चला जाता है। प्लास्टिक से हमारे लैंडफिल बंद हो जाते हैं, प्लास्टिक समुद्र में बह जाता है और जलने पर एक जहरीले धुएं में तब्दील हो जाता है, जो हम सभी के लिए एक गंभीर खतरा है। प्लास्टिक को विघटित होने (टूटने) में 400 से भी ज्यादा साल लगते हैं। चूंकि इसके कण प्रकृति में ही मौजूद रहते हैं, इस कारण ये बहुत लंबे समय तक प्रकृति को नुकसान पहुंचाते हैं।

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, विश्व स्तर पर, हर साल 400 मिलियन टन से अधिक प्लास्टिक का उत्पादन होता है, जिसमें से आधे उत्पाद ऐसे हैं जिन्हें एक बार उपयोग करके फेंक दिया जाता है। इसमें से 10% से भी कम को रिसाइकल किया जाता है। कुल प्लास्टिक उत्पादन में से लगभग 36% का उपयोग पैकेजिंग में किया जाता है। इनमें मुख्य तौर पर खाद्य एवं पेय पदार्थ की पैकेजिंग शामिल हैं जिनमें ऐसे प्लास्टिक का उपयोग किया जाता है जो केवल एक बार इस्तेमाल होते हैं और अंतत: लैंडफिल या अनियमित अपशिष्ट के रूप में प्रकृति में मौजूद रहते हैं। यह प्लास्टिक कचरा जब नदियों और झीलों से समुद्र में चला जाता है, तो समुद्र को भी प्रदूषित करता है।

ये एक बार इस्तेमाल होने वाले सिंगल यूज प्लास्टिक उत्पाद हर जगह हैं। सिगरेट के बड - जिसके फिल्टर में छोटे प्लास्टिक फाइबर होते हैं - पर्यावरण में पाए जाने वाले प्लास्टिक कचरे का सबसे आम प्रकार है। प्लास्टिक की बोतलें, प्लास्टिक की थैलियां, प्लास्टिक स्ट्रॉ और रैपर हर जगह पाए जाते हैं। हममें से कई लोग हर दिन इन उत्पादों का उपयोग करते हैं, बिना यह सोचे कि इस्तेमाल करने के बाद इनका क्या किया जाता है। आम तौर पर प्रयोग होने वाले प्लास्टिक के कुछ प्रकार निम्नलिखित हैं-

- पॉलीथलीन टेरेफ्थेलेट (पीईटी) - पानी की बोतलें, डिस्पेंसिंग कंटेनर, बिस्किट ट्रे
- हाई-डेनसिटी पॉलीथलीन (एचडीपीई) - शैम्पू की बोतलें, दूध की बोतलें, फ्रीजर बैग, आइसक्रीम कंटेनर
- लो-डेनसिटी पॉलीथलीन (एलडीपीई) - बैग, ट्रे, कंटेनर, खाद्य पैकेजिंग फिल्म
- पॉलीप्रोपलीन (पीपी) - चिप्स के बैग, माइक्रोवेव डिश, आइसक्रीम टब, बोतल कैप, एक बार इस्तेमाल होने वाले फेस मास्क
- पॉलीस्टाइरीन (पीएस) - कटलरी, प्लेट, कप
- इक्सपैनडिड पॉलीस्टाइरीन (ईपीएस) - प्रटेक्टिव पैकेजिंग, गर्म पेय पदार्थ को पीने वाले कप आदि।

प्लास्टिक के वही गुण जो उसे इतना उपयोगी बनाते हैं- उनका टिकाऊपन और लंबे समय तक चलने वाले- यही उन्हें प्रकृति से पूरी तरह नष्ट करने में लगभग नामुमकिन बना देते हैं। अधिकांश प्लास्टिक उत्पाद पूरी तरह से नष्ट ही नहीं होते हैं; वे बस छोटे से छोटे टुकड़ों में टूट जाते हैं। प्लास्टिक के ये छोटे, दानेदार कण जिन्हें माइक्रोप्लास्टिक्स कहा जाता है,

5 मिलीमीटर से भी कम व्यास वाले, तिल के बीज के आकार के या उससे भी छोटे होते हैं। हाल के अध्ययन में नमक, टीबैग, खाना रखने वाले कंटेनर और यहां तक कि प्लास्टिक की पानी की बोतलों में भी माइक्रोप्लास्टिक्स पाया गया है। यह भी पता चला है कि हवा के बहाव से माइक्रोप्लास्टिक्स दुनिया भर में मौजूद है और वे माउंट एवरेस्ट की चोटी के साथ-साथ आर्कटिक बर्फ में भी पाए गए हैं।

ये माइक्रोप्लास्टिक्स साँस के जरिए और प्लास्टिक उत्पाद में रखे खाद्य एवं पेय पदार्थों के सेवन करने पर हमारे शरीर में प्रवेश कर सकते हैं और विभिन्न अंगों में जमा हो सकते हैं। यह अभी भी नहीं पता चल पाया है कि मानव शरीर पर इन प्लास्टिक का किस सीमा तक प्रभाव पड़ता है। हालांकि, इस बात के पर्याप्त सबूत हैं कि प्लास्टिक से जुड़े रसायन, जैसे मिथाइल मरकरी और प्लास्टिसाइज़र शरीर में प्रवेश कर सकते हैं और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न कर सकते हैं। मनुष्यों के फेफड़े, लीवर और किडनी में ये माइक्रोप्लास्टिक्स पाए गए हैं और हाल ही में हुए एक अध्ययन के अनुसार नवजात शिशु के प्लसेंटा में भी माइक्रोप्लास्टिक्स पाए गए। अब तक हुए वैज्ञानिक शोध से यह संकेत मिलता है कि प्लास्टिक कैंसर जैसी बीमारियों, हार्मोन में बदलाव, दिव्यांगता और समय से पहले मृत्यु तक का भी कारण हो सकता है। औसतन हर सजाह लगभग 5 ग्राम प्लास्टिक व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर रहा है, जो एक क्रेडिट कार्ड के वजन के बराबर है।

निश्चित रूप से प्लास्टिक कई समस्याओं के कारक हैं और नॉन-बायोडिग्रेडेबल होने के कारण अन्य कचरे की तुलना में बहुत लंबे समय तक प्रकृति में रहते हैं। यहां तक कि लगभग 80 प्रतिशत समुद्री कचरा भी भूमि पर ही उत्पन्न होता है - या तो समुद्र तट से बहकर समुद्र में मिल जाता है या भारी बारिश के दौरान नालियों और सीवर के रास्ते सड़कों से नदियों में चला जाता है।

जिन देशों की ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली (सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट सिस्टम) में कमियां है, वहां प्लास्टिक कचरा - विशेष रूप से एक बार इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक बैग - सीवर जाम कर देते हैं तथा मच्छर और कीट उत्पन्न होने का स्थान बन जाते हैं, जिसकी वजह से डेंगु एवं मलेरिया जैसे रोग फैलने लगते हैं।

समुद्र तट पर उफनती लहरों का आनंद लेते हुए, हम यह नहीं सोचते कि किस तरह हमारे समुद्र का पानी कचरे का सूप बनता जा रहा है। वास्तविकता यह है कि उस पानी में लाखों टन मलबा तैर रहा है- और इसमें से ज्यादातर प्लास्टिक हैं।

क्या आप जानते हैं कि हर साल 400 मिलियन टन प्लास्टिक का उत्पादन होता है और 8 मिलियन टन से अधिक प्लास्टिक हमारे महासागरों में बह जाता है? यह हमारे वन्यजीवों के लिए एक बुरी खबर है, जो हमारे प्लास्टिक कचरे में फंसकर उलझ जाते हैं - और यहां तक कि इसे गलती से निगल भी जाते हैं। समुद्री जीवन पर इन प्लास्टिक उत्पादों का प्रभाव जीव-जंतुओं को पहुंच रहे भौतिक या रासायनिक नुकसान से लेकर जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र के व्यापक प्रभाव तक होता है। कई जलीय जीवों के शरीर में प्लास्टिक के टुकड़े पाए गए हैं, जिनमें समुद्री कछुए एवं समुद्री पक्षी और समुद्री स्तनपायी की प्रजातियां आदि शामिल हैं। समुद्री कछुए इन तैरते हुए प्लास्टिक बैग को जेलीफिश समझकर खा जाते हैं, समुद्री पक्षी को भी देखने में और सूंघने में प्लास्टिक उत्पाद खाने की तरह लगते हैं जिस कारण वे अपने पेट को इस प्लास्टिक कचरे से भर लेते हैं।

प्लास्टिक एक जलवायु समस्या भी है। शायद कई लोग यह नहीं जानते कि प्लास्टिक मुख्य रूप से तेल और गैस से तैयार होता है और यह दोनों जीवाश्म ईंधन हैं। हम जितना ज्यादा प्लास्टिक बनाते हैं, उतने ही ज्यादा जीवाश्म ईंधन की आवश्यकता होती है और हम उतना ही जलवायु संकट बढ़ाते हैं। इसके अलावा, प्लास्टिक उत्पाद अपने पूरे जीवनचक्र में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जित करते हैं। यदि कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया तो प्लास्टिक के उत्पादन, रिसाइकल और जलाने से हुए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। कई तरह के जहरीले रसायन और माइक्रोप्लास्टिक्स के संपर्क में आने से मनुष्य के स्वास्थ्य पर तो बुरा प्रभाव पड़ता ही हैं, इसके साथ-साथ वे पेड़-पौधे एवं जीव-जंतुओं को भी प्रभावित करते हैं।

हो सकता है कि हममें से कुछ को यह सब तथ्य चौंकाने वाले और भयभीत करने वाले लगे। लेकिन, हम अपने डर और गुस्से को इस समस्या का समाधान खोजने की दिशा में लगा सकते हैं। सोका गाक्काई इंटरनेशनल के अध्यक्ष डॉ. दाइसाकु इकेदा ने अपने 2020 के शांति प्रस्ताव में कहा कि यदि हम सिर्फ समस्याओं के बारे में सोचेंगे तो जिन लोगों को लगता है कि उन पर इस समस्या का सीधा प्रभाव नहीं पड़ने वाला हैं, वे कोई कदम नहीं उठाएंगे; यहां तक कि जो लोग खतरे की गंभीरता को समझते हैं, उन्हें लगेगा कि वे जो कुछ भी कर लें स्थिति को नहीं बदल सकते। डॉ. इकेदा कहते है कि यह जरूरी है कि हम समस्या के समाधान के लिए सामूहिक रूप से आगे बढ़ें। इस पृथ्वी को अगली पीढ़ी के लिए बेहतर बनाने के लिए वर्तमान में आवश्यक कदम उठाना आवश्यक है। प्रसंगवश, इस वर्ष 'बीट प्लास्टिक पॉल्यूशन' अभियान के अंतर्गत संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यावरण दिवस की थीम भी प्लास्टिक प्रदूषण का समाधान खोजने पर केंद्रित थी।

जब तक हम इस बात पर गहराई से विचार नहीं करेंगे कि किस प्रकार हमारा दैनिक जीवन इस चुनौती के साथ अटूट रूप से जुड़ा हुआ है, शायद हमें ऐसा लग सकता है कि प्लास्टिक प्रदूषण का यह खतरा हमारे आम जीवन से बहुत दूर की बात है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि मिट्टी, हवा और हमारे स्वास्थ्य के बीच गहरा संबंध है। हम दैनंदिन जीवन में भी कई महत्त्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं जैसे सब्जियों-फलों के छिलकों से खाद बनाना, कचरे को अलग-अलग करना, कांच और स्टील की बोतल इस्तेमाल करना, प्राकृतिक ब्रांड को अपनाना, प्लास्टिक बैग का उपयोग न करना आदि। हमारे ये प्रयास हमारे परिवार के सदस्यों और मित्रों को भी इन आदतों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

ऐसे कई छोटे-छोटे तरीके हैं जिन्हें अपनाकर हम अपने आसपास के माहौल में एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं:

1. डिस्पोजेबल प्लास्टिक से दूरी बनाकर: हमारे दैनिक जीवन में 90% प्लास्टिक वस्तुओं को सिर्फ एक बार उपयोग किया जाता है और फिर फेंक दिया जाता है। जैसे ग्रॉसरी की थैलियां, प्लास्टिक रैप, डिस्पोजेबल कटलरी, स्ट्रॉ, कॉफी-कप के ढक्कन आदि। हम इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि हम कितनी बार इन उत्पादों का उपयोग करते हैं और इसके बजाए कौन से उत्पादों का उपयोग कर सकते हैं। स्टोर में अपना बैग ले जाकर, ऑफिस में स्टील या काँच के बर्तन में खाना ले जाकर, या स्टारबक्स में अपना कॉफी मग ले जाकर हम कुछ ही दिनों में अपनी आदत बदल सकते हैं।

2. पानी की बोतले खरीदना बंद करके: हर साल, लगभग 20 बिलियन प्लास्टिक की बोतलें कचरे में फेंक दी जाती हैं। हम बाजार से पानी की बोतल खरीदने के बजाए घर से ही अपने बैग में पानी की बोतल साथ लेकर जा सकते हैं।

3. माइक्रोबीड्स का इस्तेमाल न करके: कई सौंदर्य उत्पादों (चेहरे के स्क्रब, टूथपेस्ट, बॉडी वॉश) में पाए जाने वाले छोटे प्लास्टिक स्क्रबर को देखकर लग सकता है कि ये हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचाएंगे, लेकिन ये छोटे आकार के प्लास्टिक जल-संशोधन प्लांट में बाधा पहुंचाते हैं और कुछ समुद्री जीव-जंतुओं को भोजन की तरह भी दिखते हैं। इसके बजाय ओट्स, बेसन जैसे प्राकृतिक एक्सफोलिएंट्स वाले उत्पादों का चयन करें।

4. घर का खाना खाकर: यह न केवल हमारे स्वास्थ्य के लिए अच्छा है, बल्कि खुद बनाने में हमें कंटेनर या प्लास्टिक थैलियों के इस्तेमाल से भी बच सकते हैं। चिप्स, बिस्कुट के बजाए फल सब्जियों का सेवन करें। कोन वाली आइसक्रीम खाएं। जब हम खाना ऑर्डर करते हैं या बाहर खाते हैं, तो हम कंपनी को कह सकते हैं कि हमें प्लास्टिक के कप, प्लेट, चम्मच आदि की आवश्यकता नहीं है या जलपान गृहों में हमारा खाना बच जाने पर हम अपने स्वयं के कंटेनर में उस खाने को ला सकते हैं।

5. थोक में सामान खरीदें: जब खाद्य पदार्थों की खरीदारी की बात आती है, तो थोक में सामान खरीदने की तुलना में कम मात्रा में और बार-बार खरीदारी करने पर अधिक प्लास्टिक पैकेजिंग की आवश्यकता होती है। हम अपने परिवार जन और मित्रों को थोक में खाने-पीने की चीजों की खरीदारी करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

6. रिसाइकल: यह बहुत साधारण-सा लगता है, लेकिन हम इस पर कुछ खास काम नहीं कर रहे हैं। उदाहरण के लिए 14 प्रतिशत से कम प्लास्टिक पैकेजिंग को रिसाइकल किया जाता है। अगर आपके मन में यह उलझन है कि क्या कचरे के डिब्बे में जा सकता है और किसे रिसाइकल किया जा सकता है? तो इसके लिए कंटेनर के निचले या सबसे ऊपर के भाग पर लिखे हुए नंबर को देखें। अधिकांश पेय पदार्थ और बोतलें 1 (पीईटी) की होती हैं, जिसे आमतौर पर अधिकांश कर्बसाइड रीसाइक्लिंग कंपनियां रिसाइकल करने के लिए ले लेती हैं। 2 (एचडीपीई; आमतौर पर दूध, जूस और कपड़े धोने के डिटर्जेंट वाली थोड़ी भारी किस्म की बोतलें) और 5 (पीपी; प्लास्टिक कटलरी, दही के टब, केचप की बोतलें) चिह्नित कंटेनर भी कुछ क्षेत्रों में रिसाइकल किए जाते हैं।

7. उत्पादकों को जागरूक बनाकर: हालांकि हम अपनी स्वयं की आदतों को बदलकर भी एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं, लेकिन यदि आपको लगता है कि कोई कंपनी अपनी पैकेजिंग में बदलाव कर पर्यावरण हितैषी पैकेजिंग बना सकती है, तो एक पत्र लिखकर या एक ट्वीट भेजकर आप उन्हें प्रोत्साहित कर सकते हैं।

यदि हम कभी प्लास्टिक उत्पादों का उपयोग कर भी रहे हैं तो हम यह ध्यान रखें कि एक बार इस्तेमाल कर फेंक देने वाले प्लास्टिक के बजाए हम फिर से इस्तेमाल किए जा सकने वाले प्लास्टिक का उपयोग करें और रिसाइकल करें तथा कभी भी प्लास्टिक उत्पाद को यूहीं पर्यावरण में न फेंके। जमीन पर फेंका गया कचरा अक्सर तालाबों और नदियों में बह जाता है और अंततः समुद्र में मिल जाता है।

हम सभी को प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने और हमारी पृथ्वी को एक स्वच्छ, सुरक्षित स्थान बनाए रखने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता है। ऐसी बहुत-सी छोटी-छोटी चीजें हैं जिनसे हम एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं। हम सभी प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने, प्लास्टिक उत्पाद का फिर से उपयोग करने और उस प्लास्टिक से बने कोई नए उत्पाद का उपयोग करने का प्रण ले सकते हैं। ***

नराकास बैठकें

नराकास (बैंक), जालंधर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), जालंधर की 23वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक दिनांक 24 अगस्त, 2023 को अध्यक्ष श्री देवराज बंसवाल की अध्यक्षता एवं श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक(कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के विशेष आतिथ्य में संपन्न हुई। इस अवसर पर समिति के लोगो, समिति की छमाही पत्रिका 'नव-प्रयास' के 15 वें अंक एवं नराकास (बैंक), जालंधर के मासिक न्यूज लेटर 'दोआबा-वार्ता' का ई-विमोचन मंचासीन गणमान्यों द्वारा किया गया। बैठक में महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री विमल कुमार नेगी तथा सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र का मार्गदर्शन भी ऑनलाइन माध्यम से प्राप्त हुआ।

नराकास, मोडासा

दिनांक 21 अगस्त, 2023 को बैंक ऑफ़ बड़ौदा के संयोजन एवं अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मोडासा की 9वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें नगर समिति के सदस्यों ने अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। उक्त बैठक एलडीएम श्री ताहिर सिद्दीकी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में अध्यक्ष महोदय ने सदस्य कार्यालयों को मार्गदर्शन प्रदान किया। उक्त बैठक में श्री चंद्रवीर सिंह राठौड़, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा, अंचल कार्यालय, अहमदाबाद ने राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में विगत छःमाही में लिए गए निर्णयों पर हुई अनुपालनात्मक कार्रवाई की समीक्षा की एवं समिति के सदस्यों का मार्गदर्शन किया। साथ ही इस बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

नराकास (बैंक), बरेली

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के संयोजन में गठित बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा कंपनी), बरेली की 19वीं अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन बैंक ऑफ़ बड़ौदा के महाप्रबंधक एवं समिति के अध्यक्ष श्री एम अनिल की अध्यक्षता में दिनांक 22 अगस्त, 2023 को किया गया। इस बैठक में मुख्य अथिति के रूप में गृह मंत्रालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तर-2) के उप निदेशक डॉ. छबिल कुमार मेहेर तथा समिति के उपाध्यक्ष श्री पी एस नेगी भी उपस्थित रहे। बैठक का संचालन मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री महीपाल चौहान ने किया।

नराकास (बैंक), अहमदाबाद

दिनांक 26 जुलाई 2023 को अहमदाबाद अंचल कार्यालय के संयोजन में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), अहमदाबाद की 73 वीं अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा श्री अश्विनी कुमार द्वारा की गई। साथ ही उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, भारत सरकार डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य एवं प्रमुख, राजभाषा एवं संसदीय समिति, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा श्री संजय सिंह भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

नराकास, जयपुर

दिनांक 31 अगस्त, 2023 को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की 76वीं छमाही बैठक का आयोजन बैंक ऑफ़ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, जयपुर में किया गया। बैठक में श्री कमलेश कुमार चौधरी, महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, श्री नरेन्द्र मेहरा, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, श्री सुधांशु शेखर खमारी, उप महाप्रबंधक व उपाध्यक्ष, बैंक नराकास, जयपुर, श्री नवीन नंबियार, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर, डॉ राजीव सिवाच, मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड सहित सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुख व राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे। इस बैठक में श्री संजय सिंह (प्रमुख-राजभाषा व संसदीय समिति), बैंक ऑफ़ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा वर्चुअल रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर समिति की पत्रिका बैंक ज्योति का विमोचन भी किया गया ।

बॉब प्रतियोगिताएं

क्षेत्रीय कार्यालय, गोधरा क्षेत्र-II

बैंक के 116वें स्थापना दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, गोधरा-II द्वारा डोबाखोब प्राथमिक शाला में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और सभी प्रतिभागियों को स्टेशनरी प्रदान की गई। इस अवसर पर शाखा प्रमुख एवं मुख्य प्रबंधक श्री सुरज साहू सहित शाखा एवं क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

वर्ष 2030 में भारतीय बैंकिंग

बैंक द्वारा हिंदी दिवस (2023) के अवसर पर आयोजित वैश्विक हिंदी आलेख प्रतियोगिता में हिंदी भाषी संवर्ग के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत आलेख .....संपादक

गौतम कुमार
मुख्य प्रबंधक एवं संकाय
बड़ौदा अकादमी,वडोदरा

भारतीय बैंकिंग वैश्विक बैंकिंग के उच्चतम मानदंडों को छूती नजर जा रही है। वर्तमान की तस्वीर से यदि भविष्य की कल्पना करें तो भारतीय बैंकिंग की तस्वीर अत्यंत विराट एवं सर्व समवेशी दिखाई देती है। 2030 में भारतीय बैंकिंग इतनी कस्टमाइज होगी कि हर ग्राहक की विशेष आवश्यकता को भी ध्यान में रख पाएगी और इतनी व्यापक होगी कि आधार, मोबाइल और जनधन की त्रिशक्ति से आगे यह समावेशन के नए आयामों को छुएंगी।

वैसे भविष्य की बात करना अनुमान लगाना ही होता है लेकिन यह अनुमान भी तार्किक एवं अतीत के संदर्भों में होने चाहिए। कोविड-19 के पूर्व किसी ने नहीं सोचा था कि बैंकिंग पर भी किसी जैविक वायरस का प्रभाव पड़ सकता है। लेकिन इस अप्रत्याशित चुनौती में भी भारतीय बैंकिंग की जड़ों की मजबूती और ग्राहक सेवा के नवोन्मेषों का पता चला।

एक आम ग्राहक के रूप में पूछा जाए कि 2030 तक बैंकिंग में क्या चाहता है?

1) पास बुक प्रिंटिंग की समस्या का पूर्णतः उन्मूलन हो।

2) पासवर्ड/पिन याद करने के झंझट से छुटकारा मिले।

3) कर्मचारी उनकी स्पेसिफिक जरूरत के अनुसार उनको उत्पाद दें।

4) नगदी के लिए एटीएम की जगह कोई और सुगम व्यवस्था हो।

5) उनके प्रश्नों का उत्तर चैट बोट्स के उत्तरों से बेहतर कुछ समाधान मिले।

6) बैंक के खातों की सुविधा के साथ सुरक्षा भी बढ़ें।

एक आम व्यवसायी के रूप में पूछा जाए कि 2030 तक बैंकिंग में वह क्या चाहता है?

1) व्यावसायिक ऋण इतना आसान हो जैसे एटीएम से नगदी निकालना।

2) दस्तावेजों से भरी फ़ाइल की जगह सब कुछ बैंक ऑनलाइन ही सत्यापित कर लें।

3) ब्याज दर एवं विभिन्न शुल्क अधिक तर्क संगत हों।

4) स्टॉक स्टेटमेंट, आवधिक फैक्टरी निरीक्षण, ऋण दस्तावेजीकरण आदि ऑनलाइन ही हो जाएं।

एक बैंकिंग कर्मचारी 2030 तक बैंकिंग में क्या चाहता है?

1) शाखा में ज्यादा से ज्यादा काम तकनीक करें ताकि स्टाफ की कमी की समस्या से निजात मिले।

2) बैंक का मानव संसाधन प्रबंध विश्व स्तरीय हो, जिसमें स्वस्थ कार्य संस्कृति को बढ़ावा मिले ताकि उनके कार्य-जीवन (वर्क लाइफ) संतुलन बना रहे।

3) वर्क फ्रोम होम कार्य संस्कृति को बढ़ावा मिले।

4) वेतनमान आदि का आधार पूर्णतः कार्य निष्पादन हो एवं कैरियर मार्ग सु-स्पष्ट हो।

5) केवाईसी / एएमएल एवं अन्य प्रकार की धोखाधड़ी एवं जालसाजी आदि रोकने हेतु तकनीक

सरकार एवं विनियामक की नज़र में 2030 में बैंकिंग के स्वरूप से आकांक्षाएं

1) बैंकिंग प्रोद्यौगिकी ढांचे में समयानुकूल बदलाव।

2) विश्व स्तर के मानकों जैसे बेसल दिशानिर्देश, एफएएफटी दिशनिर्देश आदि में उत्तम प्रदर्शन।

3) हर नागरिक का बैंकिंग से जोड़ना एवं उनके जीवन चक्र के अनुसार वित्तीय जरूरतों की पूर्ति में मदद।

4) यूपीआई को अधिक बहुविध एवं शक्तिशाली बनाना।

5) नगदी प्रचालन को न्यूनतम करना।

6) ग्राहक शिकायत के संतुष्टि दायक निस्तारण में शीघ्रता।

7) आतंकवादी वित्तपोषन एवं कालधन में बैंकिंग चैनल की पूर्णतः रोक

8) साइबर सुरक्षा की अति उच्च तकनीकों का उपयोग

9) शेयर धारकों के निवेश में मूल्य वृद्धि एवं विश्वास में बढ़ोत्तरी

2030 में भारतीय बैंकिंग के विविध आयाम

डिजिटल रुपया:

बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स (बीआईएस) में प्रकाशित एक सर्वेक्षण में पाया कि उभरती और उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में लगभग दो दर्जन केंद्रीय बैंकों के पास दशक के अंत तक डिजिटल मुद्राएं प्रचलन में होने की उम्मीद है। नकदी की बढ़ती गिरावट के बीच डिजिटल भुगतान को निजी क्षेत्र पर छोड़ने से बचने के लिए दुनिया भर के केंद्रीय बैंक खुदरा उपयोग के लिए अपनी मुद्राओं के डिजिटल संस्करणों का अध्ययन और उस पर काम कर रहे हैं।

डिजिटल करेंसी की शुरुआत भारतीय रिज़र्व बैंक ने भी 1 नवंबर, 2022 से कर दी है। यह भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर किया है। 2030 तक डिजिटल मुद्रा में ऐसी छलांग आएगी कि भौतिक मुद्रा नोट या सिक्के आदि देखने को भी न मिलेगी। इससे देश को कार्बन फुट प्रिंट कम करने में मदद मिलेगी साथ ही नोटों के मुद्रण, भंडारण, रख रखाव का व्यय भी बचेगा। भारत में ई-रूपी की सुविधा नेशनल पेमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया की ओर से दी गई है। आनेवाले समय में यह यूपीआई आदि से भी जोड़ा जाएगा और इससे सुगमता में अत्यधिक वृद्धि होगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, चैट-जीपीटी एवं 2030 में भारतीय बैंकिंग

''चंद वर्ष पश्चात लोगों को वित्तीय काम के लिए बैंक में जाने की जरूरत ही नहीं होगी और इनका अस्तित्व भी नहीं होगा। भौतिक रूप से बैंक और उनकी शाखाओं में जाना अगले तीन साल में अप्रासंगिक हो जाएगा क्योंकि डेटा विश्लेषण से वित्तीय समावेशन को और गति मिलेगी। बैंकों की शाखाओं में जाना समाप्त हो जाएगा। इसका कारण बड़े पैमाने पर डेटा का उपयोग तथा डेटा विश्लेषण है।''

उपर्युक्त कथन कई वर्ष पूर्व अमिताभ कांत (नीति आयोग, सीईओ) ने दिया था। आज हम आंशिक रूप से उसे सच होते हुए भी पाते हैं। 2023 में उनका कथन पूर्णतः या करीब-करीब पूर्णतः सत्य प्रतीत होता दिखाई देता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का वैश्विक बाजार 62.9 फीसदी दर से बढ़ रहा है। स्वचालित कार, चैटबॉट (जो वेबसाइट सर्फ करते समय चैटिंग करते हुए सही जानकारी मुहैया कराती हैं), पर्सनल डिजिटल असिस्टेंट (गूगल असिस्टेंट, अमेजन एलेक्सा, ऐप्पल सीरी, माइक्रोसॉफ्ट कॉर्टना आदि) कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संचालित होते हैं। आईबीएम कंपनी के कृत्रिम बुद्धि से लैस डीप ब्ल्यू कंप्यूटर ने कास्पोरोव को शतरंज में हराया था, तो गूगल के अल्फागो ने मानव को एक कंप्यूटर बोर्ड खेल गो में हराया था। कृत्रिम बुद्धि में इतनी क्षमता हो सकती है कि वह मनुष्य से भी आगे निकल जाए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अभी शैशववस्था में है। 2030 तक बैंकिंग को समावेशी बनाने और सुदृढ़ करने, बैंकिंग उत्पाद के विपणन को विस्तृत करने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका अहम होगी। यदि भविष्य ड्राइवर रहित कार का है तो सामान सिद्धांत बैंक खाते पर भी लागू होगा।

वर्ष 2023 में सबसे अधिक चर्चा जिस तकनीक की हो रही है वह है चैटजीपीटी! चैटजीपीटी हर क्षेत्र को प्रभावित करने की क्षमता रखता है एवं सूचना को व्यवस्थित रूप से प्रदान करने में एक मील का पत्थर साबित हो रहा है।

यह तकनीक बैंकों के लिए मुनाफे का सौदा साबित होने जा रहा है क्योंकि अभी ये संस्थाएं ग्राहक के सवालों के जवाब देने के लिए अच्छा-खासा खर्च ग्राहक कॉल सेंटर पर खर्च करता है। आनेवाले समय में कॉल सेंटर की जगह उन्नत चैटजीपीटी ग्राहक शिकायतों के समाधान में महती भूमिका निभाने जा रहा है।

वर्ष 2030 तक चैटजीपीटी निम्नलिखित रूप से बैंकिग को प्रभावित करेगी

- ✓ अनुपालन के स्तर पर
- ✓ ग्राहक संतुष्टि के स्तर पर
- ✓ जोखिम प्रबंधन के स्तर पर
- ✓ ट्रेजरी के कार्यकलापों में
- ✓ मानव संसाधन के उचित समायोजन में
- ✓ ऋण की निगरानी में

उपर्युक्त बिन्दुओं के अलावा बैंकिंग उत्पादों के विपणन में भी चेटजीपीटी की अहम भूमिका रहेगी। भारत में सरकारी विभागों में राजभाषा क्रियान्वयन भी एक चुनौती रहा है। बैंकिग भी इसके अंतर्गत आता है। चेटजीपीटी राजभाषा क्रियान्वयन को एक नई दिशा प्रदान करेगा।

स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के मुताबिक चैट जीपीटी 3 को 175 बिलियन पैरामीटर्स के आधार पर तैयार किया है। जबकि जीपीटी-2 को बनाने में 1.5 बिलियम पैरामीटर्स का इस्तेमाल हुआ था। जिसकी वजह से ये उन कामों को करने में भी सक्षम है जिनके लिए इसे साफतौर पर प्रशिक्षित नहीं किया गया है जैसे अंग्रेजी से फ्रेंच में वाक्यों का अनुवाद करना आदि। अतः वर्ष 2023 तक राजभाषा हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में काम करना और भी सहज हो जाएगा।

2030 में भारतीय बैंकिंग एवं अनुपालन

बैंकों को अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने और ग्राहकों, निवेशकों

और विनियामकों का विश्वास जीतने के लिए एक अच्छी अनुपालन संस्कृति का प्रदर्शन करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। अगर पारिभाषिक रूप में कहें तो विभिन्न कानूनों, नियमों, विनियमों और अनेक आचार संहिताओं, जिसमें कुछ स्वैच्छिक कमी होती है, का पालन करना ही अनुपालन है। गैर-अनुपालन का पता लगा पाने और उसको रिपोर्ट करने में विफलता/ विलंब, लगातार निम्न स्तरीय अनुपालन, अपर्याप्त कवरेज के संदर्भ में अनुपालन परीक्षण और सीमित लेनदेन परीक्षण की अक्षमता, समस्या की जड़ का समाधान नहीं करने से लगातार अनियमितताएं और अनुपालन की निरंतरता को सुनिश्चित नहीं किया जाना जैसी समस्याएं देखी गई हैं। अनुपालन एक गतिशील प्रक्रिया है। केवाईसी, एएमएल आदि अनुपालन से संबंधित क्रियाएं जब ब्लॉक चेन, मशीन लर्निंग का उपयोग करेंगी तब ये और भी अधिक विस्तृत हो जाएगी।

2030 में भारतीय बैंकिंग एवं मानव संसाधन

हालांकि भविष्य में बैंकिंग का ज्यादा काम तकनीक के सहारे होगा किंतु मानव बल की उपयोगिता घटेगी ऐसा नहीं होगा। मानव सदा ही मशीनों से ऊपर की चीज़ है। चूंकि बैंकिग एक ग्राहकोन्मुख कार्य है और हमारे ग्राहक मशीन न होकर मानव हैं। अतः वे मानवीय स्पर्श या मानवीय संवेदना को ज्यादा तरजीह देते हैं। वर्ष 2023 तक बैंक का कार्य बल (वर्क फोर्स) ट्रांजेक्शनल बैंकिंग से रिलेशनशिप बैंकिंग की तरफ उन्मुख होगा। इसके लिए कर्मचारियों एवं अधिकारियों को मशीनी एवं विषय जानकार के साथ सॉफ्ट स्किल में भी निष्णात होना होगा। आज के समय में बैंकों में सबसे ज्यादा ग्राहक को शिकायत कर्मचारियों के बुरे व्यवहार से रहती है। इसके लिए 2030 तक उचित और उन्नत प्रशिक्षण आदि के माध्यम से स्टाफ को अधिक संवेदनशील बनाया जाएगा। वर्ष 2023 तक सरकारी बैंकों के स्टाफ के व्यवहार में निजी / विदेशी बैंकों के स्टाफ के व्यवहार की तरह ही पेशेवराना पुट दिखेगा। कार्य संतुष्टि, कार्य जीवन संतुलन एवं सेहत-प्रसन्नता के मानकों पर युवा बैंकों का चयन करियर के रूप में करेंगे, न कि केवल वेतन देखकर।

2030 में भारतीय बैंकिंग एवं डिजिटल ऋण संस्कृति

बीते कुछ वर्ष में भारत के डिजिटल ऋण बाजार में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है, जहाँ एक ओर वित्तीय वर्ष 2015 में भारत में डिजिटल ऋण बाजार का कुल मूल्य 33 बिलियन डॉलर था, वहीं वित्तीय वर्ष 2020 में यह बढ़कर 150 मिलियन डॉलर पर पहुँच गया। वर्ष 2023 तक यह 350 बिलियन से भी ऊपर चला गया है। यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत एक डिजिटल ऋण क्रांति के कगार पर खड़ा है और इस क्रांति को सफल बनाने के लिए यह सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है कि ऋण व्यवस्थित और और वैध तरीके से प्रदान किया जाए।

भविष्य में विनियामक एवं सरकार कुछ कड़े कानून लाएंगी जिसके माध्यम से यह तय किया जा सकता है कि सेवा प्रदाताओं द्वारा किस प्रकार का डेटा एकत्रित किया जाएगा और उस डेटा का उपयोग किस कार्य के लिए किया जाएगा।

भविष्य में डिजिटल ऋणदाताओं को सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और उपभोक्ता संरक्षण के सिद्धांतों को रेखांकित करने वाली आचार संहिता का विकास होगा साथ ही इस संबंध में एक एजेंसी बनाई जा सकती है, जो कि सभी डिजिटल ऋण समझौतों और उपभोक्ता/ ऋणदाता क्रेडिट हिस्ट्री को ट्रैक करने में सक्षम होगी।

2030 में भारतीय बैंकिंग एवं साइबर सुरक्षा

प्राइवेसी इंटरनेशनल के एडवोकेसी डायरेक्टर एडिन ओमानोविच कहते हैं, आने वाले 100 सालों में दुनिया के सामने दो बड़ी चुनौतियां होगी - पहला, जलवायु परिवर्तन रोकना और दूसरा, तकनीक के साथ कदम मिलाना। मानव और तकनीक के बीच संबंध परिवर्तित हो रहा है और आने वाले समय में तकनीक हमारी जिंदगी का सबसे अहम हिस्सा होने वाली है। बैंकिंग में साइबर सुरक्षा एक बड़ी चिंता का विषय है। आज की साइबर सुरक्षा तकनीकों के पुरानी पड़ते ही भविष्य में उच्च स्तरीय तकनीकों के साथ साइबर सुरक्षा के उच्च मानदंडों को प्राप्त करना होगा।

भविष्य की बैंकिंग में साइबर सुरक्षा के लिए बिंदु ध्यानार्थ है:

- ✓ नेटवर्क सुरक्षा निगरानी
- ✓ सॉफ़्टवेयर सुरक्षा
- ✓ जोखिम प्रबंधन
- ✓ महत्वपूर्ण प्रणालियों की सुरक्षा

निष्कर्ष :-

भारत की प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2030 तक करीब 70 फीसदी बढ़ने की संभावना है। एक रिसर्च रिपोर्ट में कहा गया है कि 2030 तक बढ़कर 4,000 डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है। रिसर्च में कहा गया है कि आय में बढ़ोतरी से देश को 6 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने में मदद मिलेगी। अतः भारतीय बैंकिंग भी इसी गति में फ्युचर रेडी अर्थात् भविष्य के लिए तैयार रहेगी। व्यवसाय सुगमता (इज़ ऑफ डूइंग बिजनेस) के बढ़ते चरण एवं सरकार के विभिन्न पहलों से लग रहा है कि 2030 तक भारतीय बैंकिंग की पताका विश्व मानचित्र पर अवश्य लहराएगी एवं रैंकिंग में गुणात्मक सुधार भी होगा।।

***

नराकास पुरस्कार एवं सम्मान

अंचल कार्यालय, भोपाल

वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक),भोपाल से अंचल कार्यालय,भोपाल को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। दिनांक 25 अगस्त, 2023 को आयोजित नराकास (बैंक),भोपाल की 78 वीं बैठक में बैंक की ओर से उक्त पुरस्कार महाप्रबंधक (अंचल प्रमुख),भोपाल अंचल श्री संजीव मेनन ने नराकास (बैंक),भोपाल के अध्यक्ष एवं सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया के फील्ड महाप्रबंधक श्री तरसेम सिंह जीरा के कर कमलों से ग्रहण किया। उक्त अवसर पर श्री हरीश सिंह चौहान, सहायक निदेशक, कार्यान्वयन, क्षेत्रीय कार्यान्वयन, कार्यालय, मध्य तथा विभिन्न बैंकों एवं बीमा कंपनियों के कार्यालय प्रमुख उपस्थित रहे।

अंचल कार्यालय, चंडीगढ़

दिनांक 27 जुलाई, 2023 को चंडीगढ़ बैंक नराकास द्वारा छमाही बैठक का आयोजन किया गया जिसमें वार्षिक अंतर बैंक राजभाषा शील्ड 2022-23 के पुरस्कारों की घोषणा की गई। वार्षिक अंतर बैंक राजभाषा शील्ड 2022-23 के अंतर्गत अंचल कार्यालय, चंडीगढ़, बैंक ऑफ़ बड़ौदा को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ की ओर से श्री राजेय भास्कर, उप अंचल प्रमुख द्वारा श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, भारत सरकार तथा श्री विवेक श्रीवास्तव, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिज़र्व बैंक के कर कमलों से पुरस्कार ग्रहण किया गया।

अंचल कार्यालय, बेंगलूरु

दिनांक 21 जुलाई, 2023 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), बेंगलूरु की 75वीं अर्ध-वार्षिक बैठक के दौरान अंचल कार्यालय की श्रेणी में अंचल कार्यालय-बेंगलूरु को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। केनरा बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री सत्यनारायण राजू के कर कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते हुए बेंगलूरु अंचल के महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री देबब्रत दास, बेंगलूरु अंचल की राजभाषा अधिकारी सुश्री एम.नीना देवस्सी।

बड़ौदा अकादमी, बेंगलूरु

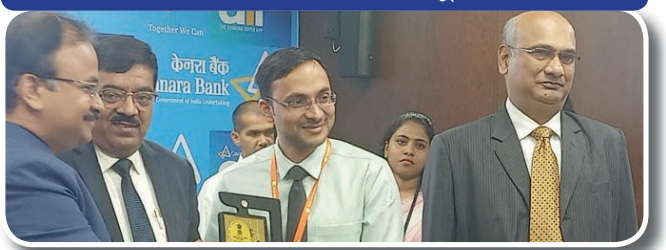

दिनांक 21 जुलाई, 2023 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), बेंगलूरु की 75वीं अर्ध-वार्षिक बैठक के दौरान कर्मचारी प्रशिक्षण केंद्र श्रेणी में बड़ौदा अकादमी, बेंगलूरु को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। केनरा बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री सत्यनारायण राजू के कर कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते हुए बेंगलूरु अंचल के महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री देबब्रत दास और बड़ौदा अकादमी, बेंगलूरु के मुख्य प्रबंधक एवं संकाय श्री शेषांत कुमार।

क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू

दिनांक 17 जुलाई, 2023 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की छमाही बैठक में बैंक ऑफ़ बड़ौदा पुरानी मंडी, जम्मू को राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता 2022-2023 के अंतर्गत तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार पुरानी मंडी शाखा के शाखा प्रमुख श्री दीपक कोहली द्वारा क्षेत्रीय निदेशक एवं अध्यक्ष नराकास, जम्मू, भारतीय रिज़र्व बैंक (जम्मू कश्मीर और लद्दाख) श्री कमल प्रसाद पटनायक के कर-कमलों से ग्रहण किया गया। इस अवसर पर श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक, (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तर-I), भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली भी उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग

वित्तीय वर्ष 2022-23 के उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,दुर्ग से क्षेत्रीय कार्यालय,दुर्ग को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. दिनांक 22/08/2023 को आयोजित नराकास,दुर्ग की 57 वीं बैठक के दौरान बैंक की ओर से उक्त पुरस्कार श्री अनंत माधव, क्षेत्रीय प्रमुख, दुर्ग ने भिलाई इस्पात संयंत्र के निदेशक एवं नराकास, दुर्ग के अध्यक्ष श्री अनिबार्न दासगुप्ता के कर-कमलों से ग्रहण किया. उक्त अवसर पर श्री हरीश सिंह चौहान,सहायक निदेशक, कार्यान्वयन, क्षेत्रीय कार्यान्वयन, कार्यालय, मध्य तथा नराकास, दुर्ग के सदस्य कार्यालयों के कार्यालयाध्यक्ष तथा अन्य स्टाफ उपस्थित थे.

नराकास पुरस्कार एवं सम्मान

क्षेत्रीय कार्यालय, अमरावती

दिनांक 25.08.2023 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अमरावती द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-2023 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए अमरावती क्षेत्रीय कार्यालय को शील्ड और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस शील्ड और प्रशस्ति पत्र को राजभाषा अधिकारी सुश्री नंदिनी साव द्वारा स्वीकार किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु-दक्षिण

दिनांक 21 जुलाई, 2023 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), बेंगलूरु की 75वीं अर्ध-वार्षिक बैठक के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय की श्रेणी में क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु-दक्षिण को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। केनरा बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री सत्यनारायण राजू के कर कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते हुए बेंगलूरु दक्षिण क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री उमाकांत पाढी, समिति के सदस्य सचिव श्री ई.रमेश, बेंगलूरु-दक्षिण क्षेत्र की राजभाषा अधिकारी सुश्री अमिता ब्रह्मा।

क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु

दिनांक 23 अगस्त, 2023 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), मैसूरु की 22वीं अर्ध-वार्षिक बैठक में राजभाषा हिन्दी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु को 'राजभाषा शील्ड सम्मान' के अंतर्गत बैंक वर्ग के अधीन तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। पुरस्कार ग्रहण करते हुए क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु के राजभाषा अधिकारी श्री जगदीश प्रसाद।

क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु आगरा क्षेत्र को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आगरा से 'प्रथम पुरस्कार' प्राप्त हुआ है। साथ ही, आगरा क्षेत्र की तिमाही ई-पत्रिका ताज शिखर को भी उक्त समिति से तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। ये पुरस्कार दिनांक 26 सितंबर, 2023 को आगरा क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री सुंदर सिंह तथा राजभाषा प्रभारी श्री अम्बरीश वर्मा ने नराकास (बैंक व बीमा) आगरा की आयोजित छमाही बैठक के दौरान राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के सहायक निदेशक श्री अजय चौधरी व नराकास अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक, केनरा बैंक श्री जोगेंद्र सिंह के कर कमलों से प्राप्त किए।

क्षेत्रीय कार्यालय, नाशिक

दिनांक 08 सितंबर, 2023 को नराकास, नाशिक द्वारा राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सदस्य बैंकों में वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान नराकास स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करने हेतु बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, नाशिक को राजभाषा शील्ड के तहत प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मुख्य प्रबंधक, श्री प्रसन्ना पुरोहित एवं राजभाषा अधिकारी सुश्री प्राजक्ता गेडाम ने पुरस्कार ग्रहण किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी

राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु दिनांक 25 सितंबर, 2023 को पणजी क्षेत्र की वास्को मुख्य शाखा को वर्ष 2022-23 हेतु नराकास दक्षिण गोवा से द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार शाखा प्रबंधक श्री प्रशांत पी. शिंदे ने डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम), राजभाषा विभाग, भारत सरकार की उपस्थिति में ग्रहण किया।

नराकास पुरस्कार एवं सम्मान

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत

दिनांक 22 अगस्त, 2023 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), सूरत की 25वीं छमाही बैठक में वित्तीय वर्ष 2022-2023 के दौरान नराकास स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करने हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत शहर को 'प्रथम पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, अंकलेश्वर

दिनांक 27 जुलाई, 2023 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), अंकलेश्वर की छमाही बैठक में सदस्य कार्यालयों/ शाखाओं में वित्तीय वर्ष 2022-2023 के दौरान नराकास स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करने हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच को 'प्रथम पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। कार्यालय की ओर से यह सम्मान भरूच क्षेत्र के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री डी. के. चौधरी और क्षेत्र के वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री कार्तिक कुमार ने ग्रहण किया।

नराकास, बालोद

दिनांक 24 जुलाई, 2023 को बैंक ऑफ़ बड़ौदा के संयोजन एवं अग्रणी जिला प्रबंधक, बालोद श्री प्रणय दुबे की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बालोद की 18वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. उक्त बैठक के दौरान श्री भबानी संकर परिडा, क्षेत्रीय प्रमुख, धमतरी क्षेत्र, श्री चंदन वर्मा, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा, अंचल कार्यालय, भोपाल तथा नराकास, बालोद के सदस्य कार्यालयों के कार्यालयध्यक्ष तथा अन्य स्टाफ शामिल रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ठाणे की 15वीं बैठक में ठाणे पश्चिम शाखा को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु वर्ष 2022-23 का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। शाखा प्रमुख, श्री सुनील कुमार को डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम), मुंबई द्वारा शील्ड और प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया।

सप्ताह का पहला दिन

सप्ताह में एक दिन बंद रहता था स्कूल
उस दिन छुपकर आराम करती थी किताबें
डूबे रहते हम सब सारा दिन मस्ती में
धोती रहती माँ हमारी पोशाकें और जुराबें

उन दिनों हम अलग ही खुमार में रहते थे
बेसब्री से सप्ताह के पहले दिन का इंतज़ार करते थे
यारों की टोली में दिनभर घूमा करते थे
गली - मुहल्ला आंगन - छत पर हो - हल्ला करते थे

बचपन बीता यौवन बीता अब इक बचपन संवार रही हूं
घर से ऑफिस ऑफिस से घर सारे चक्र संभाल रही हूं
माँ की छवि थी जो मन में अब खुद में उतार रही हूं
हर लम्हा हर जगह न जाने कितने ले अवतार रही हूं

पर अब भी मैं बचपन सा इंतज़ार करती हूं
थक जाती हूँ दौड़ भाग में ये इकरार मैं करती हूं
यारों का साथ माँ का प्यार कभी नहीं भूलती हूं
इतवार, सप्ताह के पहले दिन मैं अब भी तेरा इंतज़ार करती हूं

श्रीमती रेणुबाला मिंज
व्यवसाय सहयोगी
क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

फिशिंग: डिजिटल धन सुरक्षा की चुनौती

श्रीमती शिल्पा चंद्रिकापुरे
वरिष्ठ प्रबंधक एवं संकाय,
बड़ौदा अकादमी, भोपाल

भारत में बैंकिंग धोखाधड़ी इतनी बार और बड़े पैमाने पर होती है कि यह अब ज्यादातर लोगों को आश्चर्यचकित नहीं करती हैं। उदाहरण के लिए, वित्त वर्ष 2020-21 को लें, जिसके दौरान 83,000 से अधिक बैंकिंग धोखाधड़ी हुई, जिसमें 1.38 लाख करोड़ रुपये का गबन हुआ। इसी अवधि के दौरान वसूली 1,000 करोड़ रुपये से थोड़ी अधिक है, जो बहिर्वाह के एक प्रतिशत से भी कम है। (स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक)

सोशल इंजीनियरिंग तकनीक एक आवश्यक साइबर सुरक्षा गतिविधि है जिनका उपयोग व्यक्तिगत या गोपनीय जानकारी को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इन तकनीकों का उपयोग धोखेबाजी, आपत्तिजनक उद्देश्यों के लिए या संगठनों और व्यक्तिगत व्यक्तियों को धोखेबाजों की धोखाधड़ी से बचाने के लिए किया जा सकता है। इन तकनीकों का उपयोग मानव मनोबल, सामाजिक उपयोगिता और जानकारी की प्राप्ति की प्रक्रिया में किया जाता है, जो साइबर अपराधियों को विकल्प और विफलता के रूप में प्राप्त की जाती है।

फिशिंग का शब्दिक अर्थ है मछली पकड़ने की प्रक्रिया और इस शब्द का उपयोग इंटरनेट पर डेटा और व्यक्तिगत जानकारी को चुराने की प्रक्रिया को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। फिशिंग एक प्रकार की साइबर धोखाधड़ी होती है जिसमें धोखेबाज व्यक्तिगत या वित्तीय जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत संपर्क बनाते हैं। फिशिंग की शुरुआत 1990 के दशक के आस-पास हुई थी और तब से यह एक बड़ी साइबर जोखिम बन चुका है। उदाहरण के लिए, URL "www.bankofbaroda.com" इसके बजाय निम्न के रूप में प्रकट हो सकता है: www.bankofbadoda.com|

फिशिंग का प्रारंभिक दौर (1990): फिशिंग की शुरुआत इंटरनेट के प्रारंभिक दिनों में हुई थी, जब एक व्यक्ति यूज़र्स से व्यक्तिगत जानकारी का आग्रह करता था। इसके लिए उसने जालसाजी तरीके से ईमेल या फेक वेबसाइट्स का उपयोग किया था।

प्रगति और विवाद (2000): 2000 के दशक में, फिशिंग हमले और विशेषज्ञता दोनों में बढ़ोत्तरी हुई। धोखेबाज अब बैंकों, वित्तीय संस्थाओं, ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों, और सामाजिक मीडिया साइट्स की नकल करने लगे।

आधुनिक फिशिंग (2010 से वर्तमान में): आज के समय में, फिशिंग हमले विशेषज्ञ तरीकों से नियंत्रित हो रहे हैं और वे साइबर सुरक्षा उपायों का उपयोग करते हैं। यहां तक कि सोशल इंजीनियरिंग, एक तरीका जिसमें धोखेबाज व्यक्तिगत जानकारी को प्राप्त करने के लिए प्राधिकृत संगठनों की नकल करते हैं, भी फिशिंग का हिस्सा बन चुका है।

भारत में भी फिशिंग हमले बढ़ते जा रहे हैं और लोगों को साइबर सुरक्षा के मामले में जागरूक होना महत्त्वपूर्ण है। अच्छी साइबर सुरक्षा प्रैक्टिस का पालन करने से इस जोखिम को कम किया जा सकता है और डिजिटल संभावनाओं का सही तरीके से उपयोग किया जा सकता है।

फिशिंग के प्रकार :

फिशिंग विभिन्न रूपों में हो सकता है, लेकिन उसके मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं:

1. **स्पीयर फिशिंग (Spear Phishing):** इसमें आपके पासवर्ड और व्यक्तिगत जानकारी का लक्ष्यभूत आपके प्राधिकृत संगठनों या व्यक्तिगत खातों को हमला करने का प्रयास किया जाता है।
2. **फिशिंग ई-मेल (Phishing Emails):** इसमें विक्षिप्त ई-मेल मैसेजों का प्रयोग किया जाता है जो आपको यह दिखाने की कोशिश करते हैं कि वे वित्तीय संस्था या सरकारी संगठन के रूप में दिखते हैं और आपसे व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त करने के लिए आपके साथ कुछ कार्रवाई करने की कोशिश करते हैं।
3. **फिशिंग वेबसाइट्स (Phishing Websites):** इसमें विक्षिप्त वेबसाइट्स का उपयोग किया जाता है जो वित्तीय संस्थाओं, ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों या अन्य ऑनलाइन सेवाओं की तरह दिखते हैं, लेकिन वे आपके व्यक्तिगत जानकारी को चुराने का उद्देश्य रखते हैं।

आइए जानते हैं अतीत में हुए कुछ प्रसिद्ध फ़िशिंग हमले के बारे में –

1995 में, एक साइबर क्राइम केस ने अमेरिका में बड़ा हड़कंप मचाया जब सिक्योरिटी एक्सपर्ट और हैकर केविन मिटनिक को एफबीआई (फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन) द्वारा गिरफ्तार किया गया। केविन मिटनिक ने अपने साइबर सफर की शुरुआत बचपन में की थी। उन्होंने कंप्यूटरों में रुचि दिखाई और योजनाओं को अपनी रुचि के रूप में बदल दिया। केविन ने अपने साइबर कैरियर की शुरुआत सोशल इंजीनियरिंग तकनीकों का उपयोग करके किया। उन्होंने विभिन्न ऑर्गनाइजेशनों के सिस्टमों में घुसकर गोपनीय जानकारी का पता लगाया और बड़ी मात्रा में डेटा चोरी की। 1995 में, एफबीआई को केविन मिटनिक के खिलाफ सबूत मिले और उनकी गिरफ्तारी के लिए कार्रवाई करने का फैसला किया गया। एक बड़ा मीडिया धमाका था। केविन को अदालत में उनके साइबर अपराधों के लिए दो वर्षों की सजा सुनाई गई, जिसमें उन्हें कंप्यूटर अपराध के आरोप में दोषी पाया गया।

बदलाव: केविन की गिरफ्तारी ने उनके जीवन को बदल दिया। वे अब एक सुरक्षा सलाहकार बन गए हैं और साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में अपनी जानकारी और अनुभव को साझा करते हैं। केविन मिटनिक की कहानी एक प्रेरणास्पद उदाहरण है कि यदि व्यक्ति अपनी जानकारी और कौशल का सही दिशा में उपयोग करें, तो वे साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में अपना जीवन बदल सकते हैं।

इस तरह के कई मामले हैं, आइए उनमें से कुछ को बारिकी से देखें –

1. **टारगेटडॉटकॉम (Target.com)** फिशिंग मामला (2013): 2013 में, एक बड़ी फिशिंग हमले का शिकार बनी Target.com, जो एक पॉप्युलर ऑनलाइन खरीददारी साइट है। हैकर्स ने बड़े तरीके से लाखों ग्राहकों की व्यक्तिगत जानकारी, जैसे कि क्रेडिट कार्ड जानकारी, पासवर्ड, और पूरे खाते की जानकारी को चुराने का प्रयास किया। इस हमले के परिणामस्वरूप, लाखों लोगों की वित्तीय जानकारी का उपयोग अवैध तरीके से हुआ और कई लोगों के खातों से पैसे चोरी हुई।
2. **गूगल फिशिंग (Google Phishing) (2017):** 2017 में, एक मामूली लगने वाले फिशिंग हमले में, धोखेबाजों ने गूगल के रूप में आकर्षक दिखने वाले ई-मेल भेजे और लोगों से उनके जीमेल खाते की जानकारी पूछी। यह ई-मेल गूगल के आधिकारिक ईमेलों की तरह दिखाई देता था, लेकिन वास्तविकता में यह एक धोखाधड़ी की जानकारी चुराने का प्रयास था।
3. **फर्जी बैंक वेबसाइट्स का मामला (2015):** 2015 में कई बैंकों के नाम पर फिशिंग वेबसाइट्स की खोज हुई, जिनमें हैकर्स ने लोगों से उनकी वित्तीय जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत जानकारी का पूरी तरह से उपयोग किया। इनमें से कुछ वेबसाइट्स वास्तविक बैंकों की तरह दिखाई देती थी और लोगों को फर्जी तरीके से लॉगिन करवाई जाती थीं।
4. **फिशिंग ई-मेल के मामले (2020):** 2020 में, कई कंपनियों को फिशिंग ईमेल के माध्यम से हमला किया गया। इन ई-मेलों में, एक्सीक्यूटिव्स और कर्मचारियों से जानकारी प्राप्त करने के लिए उनके लॉगिन डिटेल्स या अन्य व्यक्तिगत जानकारी की मांग की गई। इसके परिणामस्वरूप, कई कंपनियों की व्यक्तिगत और गोपनीय डेटा का लाभ उठाया गया।
5. **हेडलाइंस बैंक का आत्मघाती फिशिंग हमला (2016):** 2016 में, हेडलाइंस बैंक पर एक घातक फिशिंग हमला हुआ जिसमें हैकर्स ने बैंक के ग्राहकों को धोखाधड़ी के रूप में अपनी आधिकारिक वेबसाइट के झूठे लिंक पर क्लिक करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके परिणामस्वरूप, हैकर्स ने ग्राहकों की व्यक्तिगत जानकारी, जैसे कि खाता जानकारी और पासवर्ड को चुराया और उनके बैंक खातों से पैसे चोरी किए।
6. **एक्जाइट इंडियना बैंक का फिशिंग हमला (2018):** 2018 में, एक्जाइट इंडियना बैंक पर एक बड़ा फिशिंग हमला हुआ, जिसमें हैकर्स ने बैंक के कर्मचारियों को जिम्मेदार बनाया और उन्हें बैंक के सिस्टम में उलझाया। इन हैकर्स ने बैंक के ग्राहकों की वित्तीय जानकारी को चुराया और बड़ी मात्रा में पैसे चोरी किए।
7. **पोलिश बैंक हमला (Polish Bank Attack) :** हमलों की एक नई लहर का एक हिस्सा था जिसने 31 देशों में वित्तीय संगठनों को लक्षित किया। हमलावरों ने पूर्व-चयनित लक्ष्यों को संक्रमित करने के लिए हैक की गई वेबसाइटों का इस्तेमाल किया, जिसे तकनीकी रूप से वाटरिंग होल हमले के रूप में जाना जाता है। पोलिश बैंक ने 100 से अधिक वित्तीय संगठनों को निशाना बनाया। हालांकि, किसी भी संक्रमित बैंक से धन चोरी होने का कोई सबूत नहीं है।
8. **सोसिटेज जनरल बैंक का फिशिंग हमला (2015):** 2015 में, सोसिटेज जनरल बैंक पर फिशिंग हमला हुआ जिसमें हैकर्स ने बैंक के ग्राहकों को फर्जी ईमेल भेजकर उनकी व्यक्तिगत और खाता जानकारी की मांग की।

धोखेबाजों ने उनके खातों से पैसे चोरी किए और लोगों को बड़ा नुकसान पहुँचाया।

भारत में फिशिंग की कुछ कहानियां

1. **इंडियन बैंक अकाउंट धोखाधड़ी (2017):** 2017 में, एक धोखाधड़ी कर्ता ने भारत के एक बड़े बैंक के ग्राहकों को फर्जी ईमेल भेजकर धोखाधड़ी का प्रयास किया। ई-मेल में ग्राहकों से उनके बैंक खाता और आधार जानकारी की मांग की गई और उन्हें फर्जी लिंक पर क्लिक करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। बहुत सारे ग्राहक इस धोखाधड़ी का शिकार बने और उनके बैंक खातों से पैसे चोरी हुए।
2. **मोबाइल वॉलेट फिशिंग (2020):** 2020 में, एक ग्रुप धोखेबाजों ने भारत के विभिन्न राज्यों में मोबाइल वॉलेट यूजर्स को निशाना बनाया। वे विश्वसनीय रूप से दिखने वाले फेक ऐप्स का उपयोग करके यूजर्स के मोबाइल वॉलेट से पैसे चुराते थे। इससे कई लोगों के पैसे गायब हो गए।
3. **आधार कार्ड फिशिंग (2018):** 2018 में, भारत के आधार कार्ड पर एक फिशिंग हमला हुआ, जिसमें धोखेबाजों ने लोगों को अपने आधार कार्ड और व्यक्तिगत जानकारी की मांग की। वे फर्जी वेबसाइट्स का उपयोग करके आधार डेटा को चुराते थे और इसका गलत उपयोग करते थे। इसके परिणामस्वरूप, लोगों की व्यक्तिगत जानकारी का लाभ उठाया गया और उनके आधार कार्ड का गलत उपयोग हुआ।
4. **बैंक ऑफ़ बड़ौदा के साइबर हमले की घटना (2016):** जी हां, पिछले कुछ वर्षों में बैंक ऑफ़ बड़ौदा साइबर हमलों का शिकार भी हुआ है।

   2016 के भारतीय बैंक डेटा उल्लंघन की सूचना अक्तूबर, 2016 में मिली थी। यह अनुमान लगाया गया था कि 3.2 मिलियन डेबिट कार्ड हैक किए गए थे। एसबीआई, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई, यस बैंक और एक्सिस बैंक सहित प्रमुख भारतीय बैंक सबसे ज्यादा प्रभावित हुए। यह सेंधमारी महीनों तक पकड़ में नहीं आई और पहली बार इसका पता तब चला जब कई बैंकों ने चीन और अमेरिका में अपने ग्राहकों के कार्ड के धोखाधड़ी से इस्तेमाल की सूचना दी, जबकि ये ग्राहक भारत में थे। सबसे बड़े भारतीय बैंक, भारतीय स्टेट बैंक ने लगभग 6,00,000 डेबिट कार्ड को अवरुद्ध करने और बदलने की घोषणा की। एसआईएसए सूचना सुरक्षा द्वारा किए गए एक ऑडिट में बताया गया है कि यह उल्लंघन हिताची पेमेंट सिस्टम के भुगतान गेटवे नेटवर्क में इंजेक्ट किए गए मैलवेयर के कारण था। इसके अलावा, 2016 में, बैंक ऑफ़ बड़ौदा एक और बड़े साइबर हमले का शिकार हुआ था, जिसमें बैंक के एटीएम मशीनों को हैक किया गया और दुर्भाग्यवश हजारों ग्राहकों के खातों से पैसे चोरी किए गए।

   इस हमले के तहत, साइबर अपराधी ने एटीएम मशीनों के कंप्यूटर सिस्टम में जाने का तरीका खोजा और वहां से पैसे चोरी करने के लिए मशीनों को हैक किया। वे बैंक के ग्राहकों के पिन और कार्ड जानकारी को भी अद्वितीय तरीके से चुराने में सफल रहे।

   इस हमले के बाद, बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने तुरंत साइबर सुरक्षा में सुधार करने पर ध्यान केंद्रित किया और ग्राहकों की सुरक्षा को मजबूत किया। इसके साथ ही, सरकारी अधिकारियों और साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों ने इस घटना की जांच की और दोषियों को पकड़ने के लिए कई कदम उठाए। इस घटना से सीखते हुए, साइबर सुरक्षा का महत्त्व और इसे सुरक्षित रखने की आवश्यकता को बढ़ावा दिया गया है, खासकर बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के लिए। साइबर अपराध द्वारा होने वाले नकारात्मक प्रभावों के बावजूद, हम इस समस्या को सकारात्मक दृष्टिकोण से भी देख सकते हैं। साइबर अपराधों के खिलाफ संघर्ष में हमारे पास कई तरीके हैं जिनका उपयोग कर हम सुरक्षित रह सकते हैं और इस समस्या को कम कर सकते हैं।

- प्रथम तथ्य यह है कि साइबर सुरक्षा के बारे में जागरूक होना हमारे लिए जरूरी है। व्यक्तिगत जानकारी को सुरक्षित रखने के लिए हमें मजबूत पासवर्ड का उपयोग करना, साइबर ह्यूजिंग का पालन करना और फिशिंग हमलों से बचाव के उपायों को अपनाना चाहिए।
- दूसरा, सरकार और साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों का साथ देना महत्त्वपूर्ण है। नियमों और कानूनों का पालन करने के साथ-साथ हमें साइबर सुरक्षा को बढ़ावा देने वाले प्रोजेक्ट्स और कैम्पेन्स का समर्थन करना चाहिए।
- साइबर अपराध के खिलाफ लड़ते समय, हमें निरंतर जागरूक रहना और तकनीकी सुधार करने का प्रयास करना चाहिए। हम समय-समय पर अपग्रेड्स करके और सबसे नवाचारी सुरक्षा उपायों का उपयोग करके अपनी डिजिटल सुरक्षा को मजबूत बना सकते हैं।

आखिरकार, साइबर अपराधों के बावजूद, हम सकारात्मक दृष्टिकोण रख सकते हैं कि यह हमें और अधिक जागरूक और सुरक्षित बनाने का मौका प्रदान करता है। यदि हम साइबर सुरक्षा के मामले में सतर्क रहते हैं और सभी साइबर जोखिमों के साथ निपटने के लिए योगदान करते हैं, तो हम सुरक्षित और संरक्षित डिजिटल मानव समाज की ओर बढ़ सकते हैं।

***

बॉब प्रतियोगिताएं

बैंक स्तर पर विभिन्न अवसरों पर विद्यालयों/महाविद्यालयों में अलग-अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनकी झलकियां यहां प्रस्तुत हैं :- संपादक

क्षेत्रीय कार्यालय, नाशिक

दिनांक 20 जुलाई, 2023 को नाशिक स्थित विकास मंदिर दिव्यांग विद्यालय में क्षेत्रीय कार्यालय, नाशिक द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अंचल कार्यालय, भोपाल

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा दिनांक 29 अगस्त, 2023 को केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3 में दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए 'किताबों से दोस्ती' विषय पर हिंदी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

नागपुर क्षेत्र की नरेंद्र नगर शाखा द्वारा दिनांक 21 जुलाई, 2023 को किड्ज़ी प्री-स्कूल में बॉब कविता पाठ एवं श्लोक पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे जिला

दिनांक 24 जुलाई, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे जिला द्वारा पिंपरी चिंचवड मनपा माध्यमिक विद्यालय केशवनगर व प्राथमिक विद्यालय पुणे में निबंध स्पर्धा का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर

बैंक के 116 वें स्थापना दिवस के अवसर पर जालंधर क्षेत्र की भोगपुर शाखा द्वारा दिनांक 20 जुलाई, 2023 को प्राथमिक विद्यालय भोगपुर में बॉब काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, अमृतसर

दिनांक 08 अगस्त, 2023 को अमृतसर क्षेत्र की डिजिटल बैंकिंग यूनिट लेह शाखा द्वारा सरकारी बालिका सीनियर सेकंडरी स्कूल में बॉब कविता प्रतियोगिता और वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो-II

दिनांक 25 अगस्त, 2023 को मूर एवेन्यू शाखा, कोलकाता मेट्रो-II क्षेत्र द्वारा जादवपुर बिजयगढ़ शिक्षानिकेतन विद्यालय में शब्द संग चित्रांकन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग

दिनांक 19 जुलाई, 2023 को रिसाली शाखा, भिलाई, दुर्ग क्षेत्र द्वारा शासकीय प्राथमिक शाला, रिसाली में कक्षा 5 एवं 8 के विद्यार्थियों के लिए बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

बॉब प्रतियोगिताएं

अंचल कार्यालय, बेंगलूरु

अंचल कार्यालय, बेंगलूरु द्वारा दिनांक 09 अगस्त, 2023 से दिनांक 14 अगस्त, 2023 तक आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर बेंगलुरु अंचल के स्टाफ के बच्चों के लिए देश भक्ति गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक 15 अगस्त, 2023 को स्वतंत्रता दिवस समारोह में कार्यपालक निदेशक श्री अजय के. खुराना के कर कमलों से बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

अंचल कार्यालय, बेंगलूरु

दिनांक 05 सितंबर, 2023 को अंचल कार्यालय, बेंगलूरु द्वारा सरकारी हिरिय प्राथमिक शाले, हेब्बाल केम्पापुरा, बेंगलूरु में बॉब चित्रकला प्रतियोगिता तथा हिंदी सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के 116वें स्थापना दिवस के अवसर पर मुरादाबाद शहर की आशियाना शाखा के माध्यम से शहर के स्थानीय विद्यालय में हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, हल्द्वानी

हल्द्वानी क्षेत्र द्वारा दिनांक 29 सितंबर, 2023 को केंद्रीय विद्यालय हल्द्वानी में कक्षा 9-12 तक के बच्चों के लिए हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी

पणजी क्षेत्र द्वारा दिनांक 11 सितंबर, 2023 को गोवा विश्वविद्यालय में हिंदी निबंध लेखन एवं हिन्दी काव्य वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

दिनांक 22 सितंबर, 2023 को लुधियाना क्षेत्र की बठिंडा, मुख्य शाखा द्वारा उच्च माध्यमिक स्कूल में बॉब निबंध प्रतियोगिता तथा वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद – I

दिनांक 19 अगस्त, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद-I की आदर्श शाखा साबरमती द्वारा केंद्रीय विद्यालय, साबरमती में कक्षा 6 से 8 एवं 9 से 12 के विद्यार्थियों हेतु काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, मेहसाना

दिनांक 14 सितंबर, 2023 को स्थानीय विद्यालय में क्षेत्रीय कार्यालय, मेहसाना के सौजन्य से हिंदी दिवस के अवसर पर दो प्रतियोगिताओं आशु भाषण और स्वरचित कविता पाठ का आयोजन किया गया।

भाषा एवं संस्कृति

कामाख्या पाण्डेय
कामाख्या पाण्डेय
प्रबंधक
फतेहपुर क्षेत्र

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो समूहों में रहना पसंद करता है। विश्व के समस्त जीवधारियों में केवल मनुष्य ही संस्कृति का निर्माता है। इस विशेषता का मूल कारण है भाषा। भाषा के ही माध्यम से एक पीढ़ी द्वारा संचित ज्ञान गंगा का प्रवाह भविष्य की पीढ़ियों तक होता है। प्रत्येक पीढ़ी की संस्कृति का विकास होता है। संस्कृति परिसर का वह भाग है जिसका निर्माण मानव स्वयं करता है।

भाषा के माध्यम से ही संस्कृति का निर्माण हुआ है। सृष्टि के आरंभ से ही मनुष्य ने अनेक तरह से अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं को व्यक्त करने का प्रयास किया। पहले तो हाव-भाव तथा संकेत चिह्नों से काम चला। बाद में उसी ने भाषा का रूप ग्रहण कर लिया। प्रत्येक भाषा में उसके बोलने वालों की सारी मान्यताएं, स्पष्ट तथा अस्पष्ट विचार, बौद्धिक और भावनात्मक क्रियाएं निहित रहती हैं। पुरातन समाज के सभी सांस्कृतिक तत्व उसकी भाषा के भंडार में सुरक्षित रहते हैं। इसलिए भाषा को बचाना बहुत जरूरी है क्योंकि एक भाषा के नष्ट होने का अर्थ है संस्कृति, विचार और एक जीवन पद्धति का मर जाना होता है।

कहावतें, पहेलियां, लोककथाएं, लोकगीत, प्रार्थना मंत्र, इत्यादि में समाज का संस्कार प्रदर्शित होता है। समाज की अंतर्मुखी वृत्तियों से परिचय प्राप्त करने के लिए भाषा का ज्ञान अत्यावश्यक है। संबंध सूचक शब्दावली से समाज में पारिवारिक और दूसरे संबंधों का पता चलता है। संस्कृति पर बाह्य प्रभावों के कारण जो परिवर्तन होता है वह भी भाषा में प्रतिबिंबित होता है। नए विचार और नई वस्तुएं जब व्यवहार में आने लगती हैं तो उनके साथ नए शब्द भी आते हैं। इस प्रकार संस्कृति और भाषा दोनों का समान रूप से विकास होता है। पुरातन संस्कृतियों में भाषाओं की विविधता तथा उनके स्वरूप की जटिलता में अनुसंधान के लिए असीम संभावनाएं हैं। जिस तरह भाषा के स्वरूप का विश्लेषण करने से हम सांस्कृतिक रहस्यों को सुलझा सकते हैं उसी प्रकार संस्कृतियों के संरचनात्मक तत्वों और प्रक्रियाओं के ज्ञान से हमें भाषा शास्त्र की कुछ समस्याओं पर व्यापक प्रकाश मिल सकता है।

भाषा हमारे दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग है। यह हमें एक दूसरे से जोड़ती है और हमें अपने विचार और भावनाओं को संचारित करने की अनुमति देती है। संस्कृति हमारे समाज का एक आधार है और यह हमें हमारी अनूठी पहचान देती है। संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। संस्कृति में कला, विज्ञान, संगीत, नृत्य और मानव जीवन की उच्चतम उपलब्धियां सम्मिलित हैं।

किसी एक साहित्यिक कृति का खो जाना या विकृत हो जाना, संस्कृति के किसी पक्ष का खो जाना या विकृत हो जाना है। इसी प्रकार एक भाषा का लुप्त हो जाना भी उसके साथ जुड़ी हुई समूची सांस्कृतिक विरासत का लुप्त हो जाना है। नित नएपन की होड़ में यदि हम अपनी भाषा के एक भी प्रतीक को मर जाने देते हैं, साहित्यिक धाराओं को लुप्त हो जाने देते हैं तो वस्तुतः हम अपनी संस्कृति की हत्या कर रहे होते हैं।

भाषा और संस्कृति का आपसी संबंध एक फूल और उसकी सुंगध समान है। भाषा यदि फूल है तो संस्कृति उसकी सुगंध है। जैसे फूल के मुरझाने के साथ उसकी सुगंध समाप्त हो जाती है, उसी प्रकार भाषा के मृत होने के साथ संस्कृति भी विलुप्त हो जाती है।

अगर भारत के संदर्भ में बात की जाए तो भारतीय संस्कृति का केंद्रीय मूल्य भारतीयता है। भारत एक बहुभाषी एवं संस्कृतिक विविधता वाला देश है। भारत के लोगों, संस्कृति और मौसम में भी विविधता प्रमुखता से दिखाई देती है। उत्तर में कश्मीर से दक्षिण में कन्याकुमारी तक, पश्चिम के रेगिस्तान से पूर्व के नम डेल्टा तक पर्वत पठार, झील नदियां, समुद्र, रेगिस्तान की जीवनशैलियां हमारे देश की भव्यता स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं। एक भारतीय का पहनावा, खान-पान और

भाषा आदि उसके उद्भव के स्थान के अनुसार अलग-अलग हैं।

भौगोलिक स्थिति के समान ही भारतीय संस्कृति भी अपनी विशालता के लिए प्रसिद्ध है। यहां के लोग अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं, अलग-अलग तरह के कपडे. पहनते हैं, भिन्न-भिन्न धर्मों का पालन करते हैं, अलग-अलग भोजन करते हैं फिर भी एक-दूसरे के सुख-दुख में लोग पूरे दिल से भाग लेते हैं, एक साथ खुशी या दर्द का अनुभव करते हैं। एक त्यौहार या एक आयोजन किसी घर या परिवार तक सीमित नहीं है। पूरा समुदाय या आस-पड़ोस एक अवसर पर खुशियां मनाने में शामिल होता है। इसी प्रकार एक भारतीय विवाह मेल-जोल का आयोजन है, जिसमें न केवल वर और वधु बल्कि दो परिवारों का भी संगम होता है। इसी प्रकार दुख में भी पड़ोसी और मित्र उस दर्द को कम करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। यह माना जाता है कि भारतीय संस्कृति यूनान, रोम, मिस्र, सुमेर और चीन की संस्कृतियों के समान ही प्राचीन है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। इसके साथ ही यह अपने-आप को बदलते समय के साथ ढालती भी आई है। यहां मुहम्मद इक़बाल की पंक्तियां (मूल रूप से उर्दू में लिखी गई) उल्लिखित हैं:-

''यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रोमां, सब गिर गए जहां से
अब तक मगर है बाकी नाम-ओ-निशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जहां हमारा''

भारतीय संस्कृति में प्राचीन गौरवशाली मान्यताओं एवं परंपराओं के साथ ही नवीनता का समावेश भी दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं का महासंगम है, जिसमें सनातन संस्कृति से लेकर आदिवासी, तिब्बत, मंगोल, द्रविड़, हड़प्पा और यूरोपीय धाराएं समाहित हैं। ये धाराएं भारतीय संस्कृति को इंद्रधनुषीय संस्कृति में परिवर्तित करती हैं। भारतीय संस्कृति समस्त मानव जाति का कल्याण चाहती है।

समन्वित रूप से भारतीय संस्कृति में विभिन्न विशेषताएं देखने को मिलती हैं। भारतीय संस्कृति में अध्यात्म एवं भौतिकता में समन्वय नजर आता है। भारतीय संस्कृति में प्राचीनकाल में मनुष्य के चार पुरूषार्थों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं चार आश्रमों- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास का उल्लेख है, जो आध्यात्मिकता एवं भौतिक पक्ष में समन्वय लाने का प्रयास है। उल्लेखनीय है कि भारतीय संस्कृति ने अनेक जातियों के श्रेष्ठ विचारों को अपने में समेट लिया है। भारतीय संस्कृति में यहां के मूल निवासियों के समन्वय की प्रक्रिया के साथ ही बाहर से आने वाले शक, हूण, यूनानी एवं कुषाण भी यहां की संस्कृति में घुल-मिल गए हैं। अरबों, तुर्कों और मुगलों के माध्यम से यहां इस्लामी संस्कृति का आगमन हुआ। इसके बावजूद भारतीय संस्कृति ने अपना पृथक अस्तित्व बनाए रखा और नवागत संस्कृतियों की अच्छी बातों को उदारतापूर्वक ग्रहण किया। आज हम भाषा, खानपान, पहनावे, कला, संगीत आदि हर तरह से वैश्विक संस्कृति के उदाहरण बने हुए हैं।

यहां के विभिन्न विचारकों एवं महापुरुषों ने भारतीय संस्कृति को समन्वित रूप प्रदान करने वाले विचार प्रस्तुत किए हैं। फिर चाहे बुद्ध, तुलसीदास हो या गांधी जी, इन सभी को भारतीय संस्कृति के नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा ये सभी चरित्र भारतीय संस्कृति को समन्वित स्वरूप देते हैं। भारत की विभिन्न कलाओं, जैसे- मूर्तिकला, नृत्यकला, चित्रकला, लोकसंस्कृति इत्यादि में भारतीय संस्कृति के समन्वित स्वरूप को देखा जा सकता है। विभिन्न धर्म, पंथों एवं वर्गों के लोगों का नेतृत्व इन कलाओं में दृष्टिगोचर होता है जैसे- मध्यकाल में।

विदित हो कि संस्कृति का स्वरूप 'साहित्य' में सबसे अधिक सामर्थ्यपूर्ण तरीके से अभिव्यंजित होता है। संस्कृति साहित्य का प्राण है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में संस्कृति के प्रभाव को देखा जा सकता है। यहां की संस्कृति के आधारभूत मूल्य दया, करूणा, प्रेम, शांति, सहिष्णुता, लचीलापन, क्षमाशीलता इत्यादि को भारतीय साहित्य में समुचित तरीके से अभिव्यक्ति दी गयी है। भारतीय संस्कृति का यह समन्वित रूप संस्कृत भाषा के माध्यम से रामायण, महाभारत, गीता, कालिदास-भवभूति-भास के काव्यों और नाटकों, के माध्यम से बार-बार व्यक्त हुआ है। भारत अनेक धर्मों, सम्प्रदायों, मतों और पृथक् आस्थाओं एवं विश्वासों का महादेश है, तथापि इसका सांस्कृतिक समुच्चय और अनेकता में एकता का स्वरूप संसार के अन्य देशों के लिए विस्मय का विषय रहा है। आज आवश्यकता है कि हम अतीत की सांस्कृतिक धरोहर को सहेजें और सवारें तथा उसकी मजबूत आधारशिला पर खड़े होकर नए मूल्यों व नई संस्कृति को निर्मित एवं विकसित करें।

भाषा हमारी पहचान है तो संस्कृति हमारा अभिमान है। आवश्यकता है कि अपनी भाषा में सीखने, पढ़ने, बोलने, काम करने को राष्ट्रीय गौरव के रूप में देखा जाए।

***

बॉब प्रतियोगिताएं

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो

कोलकाता मेट्रो क्षेत्र द्वारा दिनांक 25 अगस्त, 2023 को साहापुर हरेंद्रनाथ विद्यापीठ, जेम्स लांग सारणी, बेहाला, कोलकाता में बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, बर्द्धमान

दिनांक 05 अगस्त, 2023 को बर्द्धमान क्षेत्रीय कार्यालय के तहत आसनसोल आश्रम मोड़ शाखा द्वारा आसनसोल स्टेशन रोड स्कूल के बच्चों के लिए बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा दिनांक 14 सितंबर, 2023 को सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, भोपाल में स्नातक व स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों के लिए हिंदी व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो

दिनांक 26 जुलाई, 2023 को कोलकाता मेट्रो क्षेत्र द्वारा दम दम रोड गर्ल्स स्कूल, कोलकाता में विद्यार्थियों के लिए बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल

दिनांक 10 जुलाई, 2023 को करनाल क्षेत्र की पार्क रोड कैथल शाखा द्वारा ग्यारह रुद्री विद्या मंदिर स्कूल, कैथल में बॉब चित्रकला प्रतियोगिता तथा वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे जिला

दिनांक 18 अगस्त, 2023 को पुणे जिला क्षेत्र की मालशिरस शाखा के साथ मिल कर श्री भूलेश्वर महाविद्यालय में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु–दक्षिण

दिनांक 25 सितंबर, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु–दक्षिण द्वारा गुंजूर स्थित कृपानिधि कॉलेज ऑफ़ मेनेजमेंट में एमबीए के प्रथम वर्ष के छात्र–छात्राओं के लिए बॉब चित्रकला प्रतियोगिता एवं कन्नडा / हिंदी स्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

दिनांक 20 जुलाई, 2023 को आगरा क्षेत्र द्वारा प्राथमिक विद्यालय, दहतोरा के विद्यार्थियों के लिए बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

बॉब प्रतियोगिताएं

क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

दिनांक 20 जुलाई, 2023 को जयपुर क्षेत्र की आमेर रोड शाखा द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गोविंद नगर, परशुरामद्वारा, आमेर रोड जयपुर में बॉब प्रश्नोतरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा

दिनांक 27 जुलाई, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा द्वारा नगर निगम बालिका इंटर कॉलेज, गाजियाबाद में 'कविता वाचन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कुल 55 छात्राओं ने भाग लिया। विजेता छात्राओं को शाखा प्रमुख श्री सरजीत सिंह द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

क्षेत्रीय कार्यालय, गांधीनगर

दिनांक 31 जुलाई, 2023 को गांधीनगर क्षेत्र द्वारा प्राथमिक विद्यालय बोरिज में बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, भरतपुर

दिनांक 21 जुलाई, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, भरतपुर द्वारा राजकीय महिला उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बछामदी में चित्रकला एवं कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, गुड़गांव

दिनांक 20 जुलाई, 2023 को गुड़गांव क्षेत्र की एनआईटी चौक शाखा द्वारा सर्वोदय कन्या विद्यालय में कक्षा 8 से कक्षा 10 तक की छात्राओं के लिए बॉब भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 3 विजेता छात्राओं को पुरस्कृत किया गया एवं 50 छात्राओं को लंच बॉक्स एवं पानी की बोतलें प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, झुंझुनू

दिनांक 21 जुलाई, 2023 को दुलरासर शाखा द्वारा एम.जी.एम विद्यालय में हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर

दिनांक 27 जुलाई, 2023 को उदयपुर क्षेत्र की देवगढ़ शाखा द्वारा बारावलो का खेड़ा, देवगढ़ में तीन प्रतियोगिताओं बॉब चित्रकला प्रतियोगिता, बॉब निबंध लेखन प्रतियोगिता एवं सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, बीकानेर

बीकानेर क्षेत्र की सेरेरा शाखा द्वारा दिनांक 14 अगस्त, 2023 को विश्वास विद्या मंदिर, जवाहर नगर में 3 हिंदी प्रतियोगिताओं (हिंदी सुलेख प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता) का आयोजन किया गया।

विपश्यना – एक अविस्मरणीय अनुभव

सुश्री हर्षदा महाद्रुत
वरिष्ठ प्रबंधक
मुंबई मेट्रो मध्य क्षेत्र

विपश्यना या विपस्सना ध्यान, मन को स्वस्थ, शांत और निर्मल करने की वैज्ञानिक पद्धति है। आत्मनिरीक्षण की एक प्रभावकारी विधि, जिससे आत्मशुद्धि की जाती है। दूसरे शब्दों में इसे मन का व्यायाम कहा जा सकता है। 'विपस्सना' शब्द पाली भाषा के शब्द 'पस्सना' से बना है, जिसका अर्थ है 'देखना' (जो वस्तु जैसी है, उसे उसके सही रूप में देखना)। यह हजारों साल पहले की तकनीक है, जिसका उद्भव लगभग 2600 साल पहले महात्मा बुद्ध द्वारा किया गया। भगवान बुद्ध ने स्वयं 6 वर्ष कड़ी तपस्या करके इसे खोजा था। बीच में यह विद्या लुप्त हो गई। फिर दिवंगत सत्य नारायण गोयनका वर्ष 1969 में इसे म्यांमार से भारत लाए।

इस ध्यान विधि के द्वारा मनुष्य दुखों से हमेशा के लिए मुक्त हो जाता है। यह कोई जादू नहीं है, बल्कि विज्ञान है, जो वास्तविकता पर आधारित है। विपश्यना आत्म-अवलोकन के माध्यम से आत्म-परिवर्तन का एक मार्ग है। यह शरीर एवं मस्तिष्क के बीच गहन अंतरसंबंध पर ध्यान केंद्रित करता है।

विपश्यना दस-दिवसीय आवासीय शिविरों में सिखायी जाती है। शिविरार्थियों को अनुशासन संहिता का पालन करना होता है और इस अनुशासन संहिता एवं विधि को सीख कर इतना अभ्यास करना होता है जिससे कि वे लाभान्वित हो सकें। कहने को तो यह कोर्स 10 दिन का होता है, लेकिन कुल 12 दिन लगते हैं। 10 दिन पूरे और 2 दिन अधूरे। कोर्स 11वें दिन सुबह 7:30 बजे खत्म होता है। इस बारे में गोयनका जी के हिंदी-अंग्रेजी में रेकॉर्डेड ऑडियो टेप के जरिए निर्देश दिए जाते हैं। रोज रात को डेढ़ घंटे गोयनका जी का प्रवचन होता है, जिसमें विशुद्ध धर्म और ध्यान की बारीकियां समझाई जाती हैं। पहले तीन दिन बस यही करना होता है। चौथे दिन विपश्यना सिखाई जाती है और बाकी 7 दिन इसी का अभ्यास कराया जाता है। इससे इंसान सुख-दुख में भी संतुलन रख पाता है। उसकी छोटी-मोटी बीमारियां तो यूं ही दूर हो जाती हैं।

विपश्यना का यह कोर्स पूरी तरह मुफ्त है। रहने और खाने का भी पैसा नहीं लिया जाता है। शिविर का सारा खर्च पुराने साधकों के दिए गए दान से चलता है। साधकों को किसी प्रकार का कोई खर्च नहीं दिया जाता, ये साधक अपनी श्रध्दा से सेवा करते हैं। शिविर खत्म होने पर कोई चाहे तो भविष्य में आयोजित होने वाले शिविरों के लिए दान दे सकता है। दान उसी से लिया जाता है, जो पहले से यह कोर्स कर चुका हो।

विपश्यना ध्यान का मेरा अनुभव

मैं पिछले एक साल के दौरान विभिन्न कारणों से तनाव और मानसिक बीमारी से जूझ रही थी। मेरे बहुत करीबी दोस्त मेरे संघर्ष को देख रहे थे। एक बहुत करीबी मित्र ने मुझे विपश्यना ध्यान के बारे में बताया। मेरे सामने सवाल यह था कि 10 दिन बहुत ज्यादा होते हैं, बच्चे से दूर रहना, अपने काम से, घर से दूर रहना, यह सोच कर मैंने इस विषय पर ध्यान नहीं दिया। दिल से कहीं लग तो रहा था कि मुझे यह करके देखना चाहिए, लेकिन हिम्मत नहीं हो रही थी। मेरी दोस्त मुझे सलाह देती रही कि मेरे मानसिक स्वास्थ्य के लिए विपश्यना जरूरी है। फिर मैंने गूगल पर इसके विषय में अध्ययन किया और फिर सभी नियम व शर्तें समझीं। पता चला कि विपश्यना की बुकिंग इतनी आसानी से नहीं मिलती। फरवरी 2023 में मुझे मानसिक तनाव बहुत अधिक रहा, जिसके चलते मैंने व्यग्रता के साथ विपश्यना की बुकिंग के लिए कोशिश करनी शुरू की। वेबसाइट खुलने के बाद कुछ ही घंटों में मई 2023 तक की बैच बुकिंग फुल हो गई। किसी तरह मैंने जून 2023 के लिए बोरीवली के ग्लोबल पगोडा और इगतपुरी के धम्मगिरी केंद्र दोनों जगह की बुकिंग हेतु आवेदन किया। 21 मई 2023 को मेरे जन्मदिन पर अचानक रात 9 से 10 बजे के बीच मुझे बुकिंग कन्फर्मेशन का एसएमएस आया। मैं तो आश्चर्यचकित रह गई कि मुझे एक ही बार में कन्फर्मेशन मिल गया। यह तो मेरे लिए जन्मदिन का तोहफा ही था। जिससे भी विपश्यना के बारे में बात होती थी, वह कहते कि मैं खुशनसीब हूं, जो मुझे पहले ही बार में मौका मिल गया। ऐसे मौका छोड़ना नहीं चाहिए। घर पर सबको मानसिक रूप से तैयार करना होगा कि मैं 10-12 दिन घर पर नहीं रहूंगी, बच्चे को मनाना, घर के सारे काम बांटना, ऑफिस से छुट्टी लेना आदि, लेकिन धीरे-धीरे सब हो गया। जाने का दिन नजदीक आ रहा था और इरादा पक्का हो रहा था कि विपश्यना का अनुभव लेना ही है।

फिर वह दिन आ ही गया, जब मुझे जाना था। मेरी बच्ची

तो कह रही थी कि मम्मा मुझे छोड़ कर मत जाना पर स्वयं को मजबूत कर मैं निकल पड़ी। मैंने डोंबिवली से कसारा लोकल पकड़ी। कसारा से बाहर आकर इगतपुरी धम्मगिरी जाने के लिए टैक्सी पकड़ी। तब तक दिमाग में दुविधा थी, एक तरफ घर और बच्चे की फिक्र, लौट जाने की जरूरत और दूसरी तरफ धम्मगिरी जाने की जिज्ञासा। आज पहली बार मैं बिल्कुल अकेले ही कहीं जा रही थी। सोचते-सोचते मैं धम्मगिरी पहुंच गई।

धम्मगिरी विपश्यना केंद्र के प्रवेश द्वार पर पहुंच कर मुझे अत्यंत खुशी हुई। इगतपुरी की सुंदरता और मनोहर प्रकृति मंत्रमुग्ध करने वाली थी। आगे बढ़ते हुए मैं एडमिशन काउंटर पर पहुंची। वहां विश्व के विभिन्न स्थलों से 135 से अधिक महिलाएं थीं। एक सेविका (वहां स्वयंसेवक को सेविका कहा जाता है) ने मुझे दोपहर का भोजन अपनी सीट पर ही ग्रहण करने का आग्रह किया। तदनुसार, भोजन के बाद मैं पंजीकरण के लिए आगे बढ़ी। अब मोबाइल जमा करने का समय था। मैंने अपने घर पर आखिरी बार कॉल किया और माँ और पापा ने मुझे सभी चिंताएं छोड़ ध्यान केंद्रित करने को कहा। अपनी माँ की बात सुन मुझमें आत्मविश्वास आया और मैं चिंतामुक्त हो गई। फिर मैंने अपनी दोस्त को कॉल किया, जिसके कारण मैं आज यहां थी। उसने भी मुझे हिम्मत दी। उसकी बातों से हिम्मत पाकर मैंने अपना मोबाइल बंद किया और काउंटर पर सौंप दिया। यहां का नियम है कि इन 10 दिनों के दौरान आपको अपना मोबाइल फोन रखने की अनुमति नहीं होती है। आपकी इस यात्रा में वहां की सेविका आपको हर संभव सहयोग करने की कोशिश करती हैं। आगे बढ़ते हुए मुझे रहने के लिए कमरा दिया गया जो शेयरिंग आधारित था। मेरे कमरे में एक महिला पहले से ही मौजूद थी। फिर हमें शाम 5 बजे नाश्ता दिया गया और तभी हमें नियम और शर्तें समझायी गईं। इगतपुरी केंद्र के नियम तो जगजाहिर हैं, पर उनमें से मैं कुछ का यहां जिक्र करना चाहती हूं:

यहां हमें आर्य-मौन का कड़ाई से पालन करना पड़ता है। आर्य मौन अर्थात् आपको 10 दिन तक किसी से भी बात नहीं करनी है (न बोलकर, न इशारों से, और न ही लिखकर)। रात्रि भोजन नहीं- यहां आपको 2 बार नाश्ता और 1 बार खाना मिलेगा पर रात्रि में भोजन नहीं मिलेगा। आप अपने साथ मोबाईल, कोई इलेक्ट्रोनिक वस्तु, कोई किताब, पैन, कागज आदि नहीं रख सकते। फिर हमें शाम 7 से 8.30 बजे तक वीडियो क्लिप दिखाई गई, जिसमें इन 10 दिनों का महत्त्व बताया गया। उसके बाद हमें शील दिया गया।

शील पालन - यहां 10 दिन तक आपको पंचशील का पालन करना पड़ेगा, जो इस प्रकार हैं-

सत्य - आपको 10 दिन तक झूठ नहीं बोलना है।

अहिंसा - आप 10 दिन तक किसी भी जीव जन्तु को नहीं मारेंगे और न ही परेशान करेंगे। यहां तक कि आप मच्छर भी नहीं मार सकते।

अस्तेय - 10 दिन तक आप किसी प्रकार की कोई चोरी नहीं करेंगे। यहां तक कि सेंटर की फूल-पत्ती भी नहीं तोड़ सकते।

ब्रह्मचर्य - 10 दिन आप विपरीत लिंग के व्यक्ति से दूरी बनाकर रखेंगे।

नशा न करना - 10 दिन आप किसी भी प्रकार का कोई नशा नहीं करेंगे।

यहां शील लेने के बाद हम अपने कमरे में चले गए और दिन खत्म हो गया। रात को 9.30 बजे रोशनी बंद की। ये बात कुछ बन नहीं रही थी क्योंकि अपनी दिनचर्या में 9.30 बजे कार्यालय से घर पहुंचते थे, पर यहां तो अपनी आम दिनचर्या से बाहर आए थे न.... फिर शुरू हुई 10 दिनों की ये अभूतपूर्व यात्रा...

दिन की शुरुआत सुबह चार बजे जगने की घंटी से होती है और रात को नौ बजे तक साधना चलती है। दिन में लगभग दस घंटे ध्यान करना होता है लेकिन बीच में पर्याप्त विश्राम के लिए समय दिया जाता है। सुबह 11 बजे भोजन मिलता था और शाम 5 बजे कुरमिरा और चाय या दूध नाश्ते के तौर पर दिया जाता था। प्रतिदिन शाम को आचार्य गोयनकाजी का वीडियो पर प्रवचन होता है, जो साधकों को दिन भर के साधना अनुभव को समझने में मदद करता है। शाम 6 बजे के बाद कुछ खाने को नहीं मिलता है और न ही कुछ खाने की अनुमति है।

हर दिन लगातार 10-11 घंटे पैर मोड़कर और रीढ़ की हड्डी सीधी करके बैठने में परेशानी थी। मौन रहने में परेशानी लगी, पर 1-2 दिन में ये सब आदत में शामिल होने लगे। शिविर के दौरान सभी साधक आर्य मौन यानी शरीर, वाणी एवं मन का मौन रखते हैं। वे अन्य साधकों से संपर्क न करने के लिए सहमत होते हैं। हांलाकि साधकों को अपनी जरूरतों के लिए व्यवस्थापकों से एवं साधना संबंधी प्रश्नों के लिए सहायक आचार्य से बात करने की छूट होती है। पहले नौ दिन मौन का पालन करना होता है। दसवें दिन सामान्य जीवन प्रक्रिया में लौटने के लिए बात करना शुरु करते हैं। इस साधना में अभ्यास की निरंतरता ही सफलता की कुंजी है। मौन इस निरंतरता को बनाए रखने हेतु आवश्यक अंग है।

शिविर में गंभीरता, दृढ़ता से काम करना होता है। पहला सोपान-जिसमें साधना के दौरान पंचशील पालन करने का व्रत लेते हैं, अगला सोपान-नासिका से आते-जाते हुए अपनी बदलती नैसर्गिक सांस पर ध्यान केंद्रित करके मन पर स्वामित्व पाने के लिए आनापाना नाम की साधना का अभ्यास करना। फिर चौथे दिन तक मन कुछ शांत होता है, एकाग्र होता है एवं

विपश्यना के अभ्यास लायक होता है, तब विपश्यना तकनीक शुरू होती है, अर्थात् अपनी काया के भीतर संवेदनाओं के प्रति सजग रहना, उनके सही स्वभाव को समझना एवं उनके प्रति प्रतिक्रिया किए बिना समता रखना। शिविरार्थी दसवें दिन सहभागी साधक मंगल-मैत्री का अभ्यास सीखते हैं एवं शिविर-काल के अर्जित पुण्य का सभी प्राणियों को भागीदार बनाया जाता है।

इस तरह 10 दिन पूरे हुए। शुरू में कठिनाई तो आई पर शील लेने के बाद दृढ़ निश्चय किया, अतः 10 दिन सफलतापूर्वक पूरे हो गए।

विपश्यना का प्रत्यक्ष अनुभव लेने के बाद मैं यह कहना चाहती हूं कि अगर आप शांति प्राप्त करना चाहते हैं तो विपश्यना आपके लिए एकदम सही जगह है। मैं अशांत थी और विपश्यना में जाकर मुझे बहुत शांति मिली। अपने विकारों को दूर करने का तरीका मुझे मिल गया, राग-द्वेष दूर कर समता में रहना सीख लिया। अब दुख उतना दुखी नहीं करता, जितना पहले करता था। ऐसा लगता है कि जीवन जीने की एक कला मिल गयी है, जिस पर चलकर हम सुखी हो सकते हैं और सदा आनंदित रह सकते हैं।

विपश्यना आत्मदर्शन की एक विद्या है, जिसका अभ्यास करते हुए क्रमशः हमारे नए संस्कार बनना बंद हो जाते हैं और फिर पुराने संस्कार भी धीरे-धीरे क्षीण हो जाते हैं और इस तरह समता में स्थित होकर आप मुक्ति (निर्वाण) को प्राप्त कर लेते हैं।

विपश्यना का मेरा अनुभव अद्भुत रहा, जो मेरे लिए अविस्मरणीय रहेगा। मैं उस दोस्त के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूं जिसने मुझे विपश्यना की दीक्षा प्राप्त करने की सलाह दी और इस यात्रा में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहयोगी बनी। मैं मेरे घरवालों की आभारी हूं जिनकी वजह से मैं यह शिविर पूरा कर पाई। मैं सभी से यह कहना चाहूंगी कि आपको चाहे कोई मानसिक परेशानी हो या न हो, पर जीवन में एक बार विपश्यना का अनुभव अवश्य प्राप्त करें, आपके जीने का तरीका बदल जाएगा।

***

अपने ज्ञान को परखिए उत्तर (पृष्ठ सं. 46)

1.	ग	11.	घ
2.	ख	12.	ग
3.	ख	13.	ख
4.	क	14.	क
5.	ग	15.	ग
6.	घ	16.	ग
7.	क	17.	ख
8.	ग	18.	ग
9.	घ	19.	घ
10.	ख	20.	क

'नराकास राजभाषा सम्मान' क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की श्रेणी में वर्ष 2022-23 के लिए भारत सरकार के सर्वोच्च राजभाषा पुरस्कार 'नराकास राजभाषा सम्मान' के अंतर्गत 'क' भाषिक क्षेत्र में बैंक ऑफ़ बड़ौदा के संयोजन में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वाराणसी को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। दिनांक 15 सितंबर, 2023 को पुणे में आयोजित हिंदी दिवस समारोह 2023 एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में केरल के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान और माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री अजय कुमार मिश्रा के कर कमलों से यह पुरस्कार श्री कल्लोल बिस्वास, नराकास अध्यक्ष एवं क्षेत्रीय प्रमुख वाराणसी और सदस्य सचिव श्री प्रभात कुमार भारती ने ग्रहण किया।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, पटना और रांची का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 14 जुलाई, 2023 को रांची में क्षेत्रीय कार्यालय, पटना और क्षेत्रीय कार्यालय, रांची की निरीक्षण बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय समिति सदस्यों के साथ पटना अंचल प्रमुख एवं महाप्रबंधक, श्री सोनाम भूटिया, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह, पटना क्षेत्रीय प्रमुख, श्री शिव शंकर सिंह और रांची क्षेत्रीय प्रमुख श्री शंकर महतो उपस्थित रहे।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा अंचल कार्यालय, पुणे का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 11 से 13 सितंबर, 2023 को लोनावला में विभिन्न बैंकों/ कार्यालयों आदि के निरीक्षण संबंधी बैठक का आयोजन किया गया। दिनांक 13 सितंबर, 2023 को अंचल कार्यालय, पुणे की निरीक्षण बैठक सफलतापूर्वक संपन्न हुई। निरीक्षण बैठक के पश्चात अंचल की तिमाही हिंदी पत्रिका के अप्रैल-जून, 2023 अंक का समिति के माननीय सदस्यों द्वारा विमोचन किया गया। इस अवसर पर माननीय समिति सदस्यों के साथ श्रीमती मिनी टी. एम. महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, श्री चंद्रमणि त्रिपाठी, उप अंचल प्रमुख तथा श्री संजय सिंह, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) उपस्थित रहे।

कंठस्थ 2.0 अनुवाद सारथी प्रतियोगिता के विजेताओं का सम्मान

दिनांक 14-15 सितंबर, 2023 को पुणे में आयोजित हिंदी दिवस समारोह 2023 एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 01 जनवरी, 2023 से 31 जुलाई, 2023 तक आयोजित कंठस्थ 2.0 अनुवाद सारथी प्रतियोगिता में बैंक ऑफ़ बड़ौदा को दो पुरस्कार जांचकर्ता श्रेणी में 1. श्री विष्णु कुमार बिश्नोई, प्रबंधक (राजभाषा), प्रथम स्थान 2. सुश्री मोनिका सिंह, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), चतुर्थ स्थान और अनुवादक श्रेणी में तीन पुरस्कार 1. सुश्री नारायणी देवी, प्रबंधक (राजभाषा) द्वितीय स्थान 2. श्री अमित कुमार चौधरी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), तृतीय स्थान 3. श्री राजेश कुमार मेहतो, प्रबंधक (राजभाषा), चतुर्थ स्थान प्राप्त हुए। सभी विजेताओं को माननीय राज्यपाल (केरल), श्री आरिफ मोहम्मद खान और माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा के कर-कमलों से सम्मानित किया गया।

लघुकथा

ठंडी चाय का कप

सुश्री किरण भंडारी
वरिष्ठ प्रबंधक
लेखापरीक्षा एवं निरीक्षण
क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून

सुबह के 9:30 बज रहे थे, शहर का मौसम बेहद सुहावना था, हल्की-हल्की बारिश हो रही थी और मंद-मंद हवा चल रही थी। मौसम ऐसा कि किसी को भी आनंद आ जाए। अभी ऑफिस पहुंचने में 10 मिनट और बाकी थे पर स्वाति ना जाने क्यों खिन्न मन से कार भगाए जा रही थी। वह कार को जल्दी से पार्क कर ऑफिस पहुंच चुकी थी और जैसे ही ऑफिस के गेट पर पहुंची तो अनमने ढंग से अंदर की ओर मानो भागती सी चली गयी। ऑफिस के गार्ड ने 'गुड मॉर्निंग मैम'' बोला परंतु स्वाति बस सर हिलाते हुए अंदर की ओर चली गई। गार्ड ने सोचा - ''हर समय हंसती मुस्कुराती स्वाति मैडम को आज क्या हो गया?'' अपनी सीट की तरफ वह तेज कदमों से बढ़ी तो उसकी बहुत अच्छी सहेली रीति ने उसे मुस्कुराते हुए हैलो बोला और पूछा - ''आज तेरा मूड खराब क्यों लग रहा?'' स्वाति ने बस नकली-सी मुस्कुराहट दिखाई और बोला - ''लंच में बात करते हैं'' स्वाति फटाफट अपने काम पर लग गई। आज काफी ध्यान लगाने के बाद भी उसका मन काम में नहीं लग रहा था और उसे खुद पर गुस्सा भी आ रहा था। रीति दूर से स्वाति के हाव-भाव देख रही थी परंतु स्वाति से काम के समय व्यक्तिगत बातें करना मतलब अपने लिए परेशानी को दावत देने जैसा था। स्वाति की इमेज ऑफिस में बहुत अच्छी थी और उसे काम के वक्त किसी तरीके की गपबाजी पसंद नहीं थी। जैसे ही लंच का टाइम हुआ, रीति फटाफट उसके पास आ गई और बोली - ''अब बता मुंह क्यों सड़ा रखा है आज? सुबह से देख रही हूं। ऐसा लगता है जैसे कोई तूफ़ान आया हुआ है। लगता है मुस्कुराने के भी पैसे लगेंगे।'' स्वाति ने बात को टालते हुए बोला - ''ऐसे ही यार, आज थोड़ा ज्यादा काम था। सुबह तो मूड ही अपसेट हो गया।'' रीति देख रही थी कि उसकी सहेली का लंच के समय मूड अच्छा नहीं था। रोज की तरह लंच के टाइम जो वह चटर-पटर करती थी उस पर तो जैसे कर्फ्यू ही लग गया था।

रीति के काफी जोर देने पर स्वाति ने बोला - ''यार मुझे लगता है कि मुझे जितना काम करना चाहिए उतना मैं कर नहीं पा रही हूं। मुझसे ऑफिस और घर के बीच में एडजस्टमेंट नहीं हो पा रहा है और मुझे लगता है कि शायद मैं इतनी सक्षम नहीं हूं।'' रीति बोली - ''सभी लोग जानते हैं कि तुम बहुत अच्छा काम करती हो और कोई भी हर कार्य को सौ प्रतिशत नहीं दे पाता है। इसमें इतना मूड खराब करने की कोई जरूरत नहीं है।'' पर स्वाति थी कि वह मुंह बना कर बैठी हुई थी और बोलने लगी - ''रीति मुझे लग रहा है कि रोज की जिंदगी में बहुत सारी चीजें हैं जिन्हें मैं करने में सक्षम नहीं हो पा रही हूं। आज सुबह की ही बात ले लो, रोज की तरह आज भी मैंने चाय बनाई पर मैं पी नहीं पाई। कल ही मैंने सोचा था रोज सुबह आराम से 2 मिनट बैठकर चाय पियूंगी पर मुझसे हो ही नहीं पाया। शाम को सोचा सोने से पहले बच्ची को कहानियां सुनाउंगी पर वो भी नहीं हो पाया और इस कारण पूरी रात मुझे अपने आप पर गुस्सा आता रहा। मुझे लगा बाकी लोग तो सब करते हैं मुझसे क्यों नहीं हो पा रहा?'' यह कहते कहते स्वाति की आंखें भर आईं। रीति समझ रही थी कि उसकी सहेली परेशान है पर उसको लग रहा था कि स्वाति कुछ ज्यादा प्रतिक्रिया कर रही थी। रीति अभी अकेले रहती थी और पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त थी। रीति बोली - ''यार चाय की ही तो बात है। मुझे लगा था पता नहीं कौन सा तूफ़ान आ गया इतनी छोटी-सी बात पर इतना बवंडर। ऐसी छोटी-छोटी चीजों पर अगर तुम सोचती रहोगी तो जीवन में कैसे आगे बढ़ोगी।'' स्वाति ने बोला - ''यार सिर्फ चाय की बात नहीं है। मुझे यह लगता है कि मैं सारा कार्य अच्छे से करने में असमर्थ हो चुकी हूं और सोचती हूं शायद मुझमें ही कुछ कमी है क्योंकि बाकी लोगों से मैं पूछती हूं तो बोलते हैं हां हम तो ठीक से कर पाते हैं।'' इस बात को रीति ने बहुत हल्के से लिया और बोली - ''यार छोड़ ना। चल, मैं तो बहुत ही डर गई थी कि पता नहीं क्या हो गया है। पर अब मैं निश्चिंत हूं कि मेरी शेरनी तो ऐसे ही परेशान हो रही थी। तुम्हें मैं शाम को अच्छी सी कड़क चाय पिलाती हूँ।'' रीति ऐसा बोलती हुई अपनी सीट पर चली गई। उसके जाने के बाद स्वाति सोचती रही - ''क्या मैं सच में बात का बतंगड़ बना रही हूं? छोटी-सी बात पर इतनी ज्यादा झुंझलाहट मुझे क्यों हो रही है?'' फिर खुद को समझाती हुई सोचने लगी कि काफी दिनों से वह कोशिश कर रही थी कि सुबह की एक चाय घर के सब लोगों को देकर खुद भी तसल्ली से पी ले। लेकिन परिवार में सुबह-सुबह बहुत कुछ मैनेज करने के चक्कर में अक्सर उसकी चाय ठंडी हो जाती है और उसे भागते हुए ऑफिस निकलना

पड़ता है। पर आज अचानक से उसको लगा कि ठंडी चाय का कप शायद उसकी कार्य क्षमता पर प्रश्नचिह्न लगा रहा है। शायद लगातार ऐसा होनेसे वह खुद पर संदेह करने लगी कि वह ऑफिस और अपने घर के बीच संतुलन बनाने में सक्षम नहीं हो पा रही है और यह बात उसके दिल को बुरी तरह से कचोट रही थी। परन्तु रीति की बात सुनकर वह खुद को संयत करने की कोशिश करने लगी। लंच ब्रेक भी खत्म हो चुका था और वह अपने काम में लग गई।

इन दोनों की बातें बगल की कैबिन में बैठे मुक्ता जी सुन रहीं थी। मुक्ता जी स्वाति से काफी सीनियर थीं। उन्हें इस कंपनी में काम करते हुए लगभग 30 वर्ष हो चुके थे। ऑफिस में सब लोग कहते हैं कि मुक्ता जी अपने जमाने मैं काफी एक्टिव थीं। काम में तो एक्सपर्ट थी हीं बल्कि अन्य गतिविधियों में भी बढ़-चढ़ का भाग लेती थीं। बात करने का अंदाज भी उनका काफी अच्छा था। धीरे-धीरे अब वह उम्र के हिसाब से काफी शांत हो गईं थी। ऑफिस में सभी लोग उनकी काफी इज्जत करते थे और जरूरत पड़ने पर उनसे कॅरियर की और व्यक्तिगत सलाह भी लेते थे। स्वाति के चेहरे को देखकर और उन बातों को सुनकर मुक्ता जी समझ गईं थी कि स्वाति किस दौर से गुजर रही थी। उन्होंने स्वाति को बोला- ''स्वाति, शाम के टी ब्रेक में एक बार मुझसे मिल लेना।'' स्वाति मुस्कुराती हुई बोली - ''बिल्कुल मैडम''।

शाम के टी ब्रेक में स्वाति कैंटिन में गई। मुक्ता जी ने दो कॉफी का आर्डर पहले ही दे दिया था। वह तसल्ली से स्वाति की दिक्कत के बारे में पूछने लगीं। स्वाति ने धीरे-धीरे सभी बातें बता दीं कि किस तरीके से उसे लग रहा था कि वह अपने काम और घर में संतुलन नहीं बना पा रही और आज पता नहीं क्यों एक छोटी सी बात ने उसे विचलित कर दिया। स्वाति खुद ही बोलने लगी - ''मैडम शायद मैंने ओवररिएक्ट किया है और आपको भी परेशान कर दिया है। एक चाय की ही तो बात थी लेकिन पता नहीं क्यों मेरा मन बहुत विचलित है।'' मुक्ता जी ने गहरी सांस ली और स्वाति की ओर प्यार से मुस्कुरा कर बोलीं- ''स्वाति, परेशान मत हो। तुम जिस समय से गुजर रही हो काफी वर्ष पूर्व मैं उस दौर से गुजर चुकी हूँ। कई वर्षों के अनुभव ने मुझे सिखाया कि जीवन में सामंजस्य बनाना ही शायद जीवन जीना है। अन्यथा अगर आपको सामंजस्य ना बनाना पड़े तो फिर हम कुछ भी कार्य आसानी से कर सकते हैं। परन्तु तुम्हारा आज चाय की बात पर विचलित होना बहुत स्वाभाविक है। शायद लगातार ऐसा होने पर आज तुम इस स्थिति में पहुंच गई कि भावुक हो गई हो। सबसे अच्छी बात है कि इसका कोई कारगर हल भी सिर्फ तुम्हारे पास ही है। देखो, तुम सुबह से शाम तक काम में जूझती ही रहती हो, पहले ऑफिस फिर घर, बच्चे। ध्यान रहे कि कोई भी तुम्हारी सहायता के लिए स्वयं आगे नहीं आएगा। जब हम खुद को खुश रखेंगे तभी हम अपने आसपास के लोगों को भी खुश रख सकते हैं। खुद पर प्रश्नचिह्न लगाना बिल्कुल भी उचित नहीं है। जिस तरह से तुम घर और काम को मुस्कुराती हुई बखूबी निभा रही हो। अतः अपने पर संदेह करना बिल्कुल उचित नहीं है। यह आपको अच्छा कार्य करने से रोकेगा और एक नकारात्मक व्यक्ति बना देगा। इससे बेहतर है कि अपने रोजमर्रा के रूटीन का एक बार ध्यान से विश्लेषण करो और सोचो कि वह 05 मिनट क्या हैं जिनको आज नहीं करने से तुम पर बहुत ज्यादा फर्क नहीं पड़ता है। परंतु उन 05 मिनट की वजह से तुम अपनी चाय नहीं पी पाई और उसने तुम्हारा पूरा दिन खराब किया। रोजमर्रा के कई ऐसे काम होते हैं जो उस समय बहुत जरूरी नहीं होते पर हम अपनी प्रवृत्ति के कारण चाहते हैं कि हम उसको परफेक्ट कर दें इसी परफेक्ट करने की चाह में कुछ जरूरी काम हमसे छूट जाते हैं। ये काम होते तो छोटे हैं परंतु इनके परिणाम ज्यादा कष्टकारी होते हैं और फिर वह हमें कहीं ना कहीं झुंझलाहट देते हैं। हर व्यक्ति की संवेदनशीलता का स्तर समान नहीं होता है और उसको तुम्हारी यह चिंता अनावश्यक और बेफिजूल लगेगी पर इसका असर तुम्हारे कॅरियर, घर और व्यक्तित्व पर भी पड़े यह अच्छी बात नहीं है। ध्यान रहे कि अगर ठंडी चाय का कप तुम्हें इतनी परेशानी दे रहा है तो वास्तव में तुम्हें इस समस्या का समाधान करने की जरूरत है। किसी के लिए यह एकमात्र चाय का कप है लेकिन तुम्हारे लिए शायद अपने साथ समय बिताने के लिए बेशकीमती समय है। तो तुम कल से अपना रूटीन को दुबारा से देखो और 05 मिनट अपने लिए निकालो। ये 05 मिनट शायद आपको इतनी खुशी देंगे कि तुम्हारा पूरा दिन खुश रहेगा और कहा भी गया है कि एक खुश व्यक्ति ही घर और ऑफिस में अच्छा प्रदर्शन कर सकता है। ये छोटी बातें जरूर हैं लेकिन उनका दूरगामी नकारात्मक प्रभाव पड़े तो समय रहते उस पर कार्य करने की आवश्यकता है। स्वयं को समय देना इंसान का सबसे बड़ा दायित्व है। वह समय अगर मात्र 05 मिनट का भी हो और पूरे दिन को बेहतर बना सकता है तो तुम्हें वह समय जरूर देना चाहिए।''

मैडम मुक्ता के इस तरह प्यार से समझाने का स्वाति पर असर पड़ा और उसके चेहरे पर रौनक आ गई और उसने खुद से वादा किया कि सबको झुंझुलाहट दिखाने से बेहतर है कि खुद को प्राथमिकता दी जाए। आज वह मुस्कुराती हुई ऑफिस से निकली कि कुछ भी हो कल से वह अपने को 05 मिनट देगी और आज के बाद ठंडी चाय का कप उसे परेशान नहीं करेगा।

***

लघुकथा

जिंदगी का फलसफा

लीना परमार
व्यवसाय सहयोगी
कैलाशपुरी शाखा, आगरा

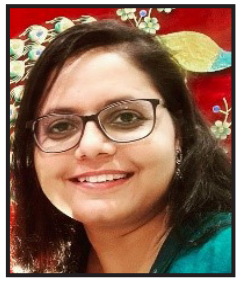

दोपहर के करीब 1 बज रहे होंगे। ग्राहकों की भीड़ बैंक काउंटर पर खड़ी अपनी बारी का इंतजार कर रही थी। श्रीमती राय अपने काउंटर पर रोज की तरह ग्राहकों का काम निपटा रहीं थी। व्यस्तता के कारण ग्राहकों से ध्यान हट नहीं पा रहा था। परन्तु काफी समय से एक बुजुर्ग उनके काउंटर के पास खड़ा था। बैंक की ओर से यह निर्देश था कि बिना किसी कार्य शाखा में खड़े किसी भी व्यक्ति से पूछताछ अवश्य की जाए कि कहीं वह कोई संदिग्ध व्यक्ति तो नहीं है। इसीलिए मैंने अपना कर्त्तव्य निभाते हुए आदर सहित उस बुजुर्ग से पूछा, ''जी सर, मैं आपकी कुछ मदद कर सकती हूँ क्या?''

जवाब मे उन्होंने अपना सिर हां में हिलाया और धीरे से बोला, ''मैडम जी, मुझे अपना खाता खुलवाना है यहाँ'' जवाब में श्रीमती राय ने कहा – ''इसमें कौन सी बड़ी बात है, आप काउंटर संख्या 2 पर जाइए, फार्म भरिए, पहचान पत्र, पते का प्रमाणपत्र और फोटो जमा कराइए, आज ही आपका खाता खुल जाएगा।'' मेरी बात सुनकर उन्होंने कहा कि मुझे कुछ बात भी करनी है आपसे ..

श्रीमती राय ने कहा, ''हाँ, बोलिए क्या बात है।'' मेरी बात सुनकर उन्होंने धीरे से कहा, ''मैडम, मेरी निजी समस्या है.'' ''हाँ, बोलिए न क्या बात है, मैं कुछ मदद कर पाऊँगी तो अवश्य करूँगी।'' इस पर वह बोला, ''मेरे दो बेटे हैं, मैं मजदूरी करता हूँ। मैंने अपने बड़े बेटे को पढ़ाया तथा उसकी शादी कर दी। वह प्राइवेट नौकरी करता है और मेरे घर में मेरे साथ ही रहता है। मेरी पत्नी शारीरिक रूप से कमजोर है। मेरा छोटा बेटा अभी पढ़ रहा है। बहू मेरी पत्नी के साथ बहुत ही बुरा व्यवहार करती है और बेटा भी उसी का पक्ष लेता है। मैं भी शारीरिक रूप से इतना सक्षम नही हूँ कि अब मजदूरी कर सकूँ। उनका व्यवहार हमारे प्रति अच्छा नहीं है। वे यहाँ तक कहते हैं कि हम तुम्हें मरवा देंगे तथा छोटे बेटे को भी मार देंगे।'' एक ही साँस में वह अपना सारा दर्द बयां कर गया। उसकी आंखें भर आईं थी जिन्हें आसानी से देखा जा सकता था।

बुजुर्ग ने आगे पूछा, ''मैडम, क्या ऐसा कोई उपाय है जिससे मेरे भरण-पोषण के लिए मुझे बेटे की कमाई का कुछ हिस्सा मिल सके तो मैं छोटे बेटे को भी पढ़ा सकूं। मेरे पास जमीन भी नहीं है बस एक घर है जिसके लिए भी वो कहता है उनके नाम कर दे। मैं अपना घर उसे दे दूंगा तो फिर हम कहां जाएंगे?'' उसकी कहानी सुनते ही श्रीमती राय का मन भी भर आया।

उन्होंने सबसे पहले उसे अपने बेटे के विरूद्ध कानूनी कार्यवाही करने की सलाह दी और बताया कि वह अपनी एक वसीयत बनवाएं जिसमें वह अपना घर अपने छोटे बेटे के नाम कर दें तथा साथ ही उसमें यह भी लिख दें कि वह उस मकान को कम से कम आगामी 20 साल तक न बेच सके। उसमें यह भी लिखा जाए जिससे उसकी शादी होगी उसकी स्वीकृति भी शामिल होगी। यदि उसे कुछ हो जाए तो वह मकान ट्रस्ट को चला जाए। इसके अलावा आप अपने नजदीकी पुलिस थाने में एक रिपोर्ट भी दर्ज करवाएं कि यदि मेरे तथा मेरे परिवार के साथ कोई अनहोनी होती है तो उसकी जिम्मेदारी मेरे बड़े बेटे और बहू की होगी।

यह सब सुनकर उन्होंने पूछा कि सचमुच ऐसा हो सकता है। मेरी बात सुनकर उनके चेहरे पर कुछ राहत महसूस हो रही थी और वे खुश होकर चले गए। उसके जाने के बाद मेरे मन में भी काफी देर तक उनकी बातें घूमने लगीं क्योंकि मेरे भी दो बेटे हैं और अपने बच्चों के लालन-पालन के लिए हम कितना कष्ट उठाते हैं। जीवन की अंतिम बेला में क्या हमारे बच्चे भी हमारे साथ ऐसा दुर्व्यवहार करेंगे? यह सवाल मन के किसी कोने में एक दबी हुई पीड़ा के साथ मेरे जेहन में भी कौंधने लगा।

***

हिंदी दिवस

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अंचलों / क्षेत्रों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताएं, कार्यक्रम, गतिविधियां, सम्मान समारोह आदि आयोजित किए गए। प्रस्तुत हैं कुछ झलकियाँ..... संपादक

अंचल कार्यालय,भोपाल

अंचल कार्यालय, चंडीगढ़

अंचल कार्यालय, बेंगलूरु

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

अंचल कार्यालय, बड़ौदा

अंचल कार्यालय, मुंबई

अंचल कार्यालय, पुणे

क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा शहर क्षेत्र–II

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई मेट्रो दक्षिण

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई मेट्रो पूर्व

क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुंबई

5 घंटे का नियम

सुमित गर्ग
मुख्य प्रबंधक एवं संकाय
बड़ौदा अकादमी, चंडीगढ़

5 घंटे का नियम सप्ताह में कम से कम एक घंटा स्वेच्छा से नई चीजें सीखने या विभिन्न गतिविधियों का अभ्यास करने की अवधारणा है। ऐसा करने से आपको नए कौशल और ज्ञान अर्जित करने में मदद मिल सकती है, जिससे व्यक्तिगत और पेशेवर विकास दोनों हो सकते हैं। हम सभी के पास दिन के समान 24 घंटे उपलब्ध हैं। हम उन घंटों के साथ जो करते हैं वह हमारी रूचि-अभिरूचि के अनुसार भिन्न होता है, लेकिन हममें से प्रत्येक के पास अवकाश में बिताने के लिए कम से कम कुछ घंटे होते हैं। 5 घंटे का नियम हमें सप्ताह में 5 घंटे और प्रतिदिन कम से कम एक घंटा सीखने, प्रयोग करने और चिंतन एवं विश्लेषण हेतु समर्पित करने के लिए कहता है। यह दुनिया के सबसे अमीर और सबसे सफल लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली ट्रिक है।

अपना 5 घंटे का नियम शुरू करने के लिए यहां तीन आसान चरण दिए गए हैं

किताबें पढ़ें: स्पेसएक्स के संस्थापक एलन मस्क ने पढ़कर सीखा रॉकेट बनाना दूसरी ओर, बिल गेट्स साल में कम से कम 50 किताबें पढ़ने के लिए जाने जाते हैं और कहा जाता है कि वे छुट्टियों में भी अपने साथ किताबें लेकर चलते हैं। बस एक किताब उठाएं और शुरू करें। तेज पाठक न भी बनें पर एक अध्याय जरूर पढ़ें। किताबें पढ़ने के लिए नई एवं सरल भाषा वाली पुस्तकों से शुरुआत करें। लेकिन अभी से शुरू करें।

चिंतन करें: बिना चिंतन किए बहुत अधिक ज्ञान का उपभोग करना भारी पड़ सकता है। पढ़ना या सीखना हमेशा बिंबों के साथ होना चाहिए। किताब पढ़ने के बाद अपने विचार लिखने की कोशिश करें। आप अपने मन में आने वाले किसी भी प्रश्न को लिख सकते हैं और आप जल्द ही देखेंगे कि आप दिन की घटनाओं पर सफलतापूर्वक विचार कर सकते हैं और तदनुसार कार्रवाई कर सकते हैं।

प्रयोग करें: सभी सफल लोगों में एक सामान्य चीज होती है वो है प्रयोग करने का विश्वास। यदि एलन मस्क प्रयोग करने की हिम्मत नहीं करेंगे, तो स्पेसएक्स अंतरिक्ष में रॉकेट लॉन्च करने वाली और पृथ्वी पर वापस लौटने वाली पहली निजी कंपनी नहीं होगी। यदि जैक मा ने अलीबाबा के साथ प्रयोग नहीं किया होता, तो वह गोल्डमन सॅक्स और सॉफ्ट बैंक को इसके शुरुआती निवेशकों के रूप में सुरक्षित नहीं कर पाते। वह किताबों से प्राप्त ज्ञान को वास्तविक जीवन परिदृश्यों में लागू करने की भी सिफारिश करते हैं।

5 घंटे के नियम का उपयोग करने के लाभ

- नई जानकारी प्राप्त करें
- मौजूदा जानकारी को ताजा करें
- अपने मौजूदा कौशल का विकास करें
- अपनी सीखने की गति में सुधार करें
- नए जुनून और शौक खोजें
- अपने निजी जीवन में सुधार करें

5 घंटे के नियम का उपयोग करने का तरीका

हर दिन एक उपयुक्त समय तय करें:

आप पहले यह निर्धारित करके 5-घंटे के नियम को लागू करना शुरू कर सकते हैं कि सीखने, चिंतन करने या प्रयोग करने के लिए दिन का कौन सा समय आपके लिए सबसे उपयुक्त है। यह आपके शेड्यूल, आपके चरम उत्पादकता घंटों या आपके शेड्यूल को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों पर निर्भर हो सकता है। दिन का सही समय तय करना और इन गतिविधियों के लिए अपने शेड्यूल में जगह बनाना 5-घंटे के नियम का सफलतापूर्वक उपयोग करने की दिशा में पहला कदम है।

सूचना स्रोत खोजें:

पुस्तकों के अलावा, जानकारी के कई अन्य स्रोत हैं जिनका उपयोग आप उन विषयों के बारे में जानने के लिए कर सकते हैं जिनमें आपकी रुचि है। ऑडियोबुक एक दोहराई जाने वाली गतिविधि, जैसे कि ड्राइविंग, व्यायाम या अपने घर की सफाई करते समय किसी पुस्तक से जानकारी प्राप्त करने का एक प्रभावी तरीका है। आप पढ़ने के अलावा सीखने के अन्य तरीकों

का भी उपयोग कर सकते हैं, जैसे सूचनात्मक वीडियो देखना और पॉडकास्ट सुनना।

प्रतिबिंबित करने के तरीके खोजें:

एक बार जब आपने प्रतिबिंब के लिए अपने दिन से समय निकाल लिया, तो अगला कदम यह तय करना है कि क्या प्रतिबिंबित करना है और इसे कैसे करना है। सबसे आम तरीका है अपने विचारों और विचारों को विभिन्न रूपों में लिखना, जैसे निबंध या एक पत्रिका। वैकल्पिक रूप से, आप उन विचारों को साझा करने और दूसरों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए ऑनलाइन मंचों का उपयोग कर सकते हैं।

विभिन्न प्रकार के विषयों का अन्वेषण करें:

उन चीजों के बारे में सीखना जो आपको पेशेवर रूप से विकसित करने में मदद कर सकते हैं और व्यक्तिगत रूप से उन विषयों की खोज करते हैं जो आपकी रुचि रखते हैं और आपको अपने कौशल सेट और ज्ञान के आधार को विकसित करने में सक्षम बनाते हैं। आप अपने पांच साप्ताहिक घंटों में से कुछ का उपयोग इस बात पर विचार करने के लिए कर सकते हैं कि आपको क्या सीखना चाहिए और क्या प्रयोग करना चाहिए। हालांकि आमतौर पर यह सलाह दी जाती है कि इन पांच घंटों के दौरान अपना अधिकांश समय उन विषयों के बारे में सीखने में व्यतीत करें जो सीधे आपकी नौकरी से संबंधित हैं, पूरी तरह से नए विषयों के संबंध में सीखने से आपके ज्ञान का विस्तार होता है और आपको नए विचारों के बारे में पता चलता है।

सुनिश्चित करें कि आप सुसंगत हैं:

5 घंटे का नियम तभी सकारात्मक परिणाम दे सकता है जब आप लगातार लंबी अवधि तक अभ्यास करते हैं। इसका मतलब है कि आपको उस समय को अलग-अलग तरीकों से खर्च करने के विभिन्न अवसरों का विरोध करने के लिए आत्म-अनुशासन की आवश्यकता है, जो आपके दीर्घकालीन विकास के लिए उतना सहायक नहीं हो सकता है। आप लघु और दीर्घकालीन ज्ञान लक्ष्य निर्धारित करके प्रतिबद्ध रहने की अपनी बाधाओं में सुधार कर सकते हैं।

सोशल मीडिया और स्ट्रीमिंग सेवाओं पर घंटों बिताने से हमारी खुशी थोड़े समय के लिए बढ़ सकती है लेकिन ये चैनल हमारी दीर्घकालिक खुशी को बढ़ाने के लिए कुछ नहीं करते हैं। अपने ज्ञान और रचनात्मकता को बेहतर बनाने के लिए पाँच घंटे के नियम का प्रयास करें।

***

मुझे गर्व है कि मैं बी ओ बी हूं

मुझे गर्व है कि मैं बी ओ बी हूं
असहायों का सहारा हूं, तो किसानों का किनारा हूं
उन्नति की राह हूं, तो ज़िंदगी की रफ्तार हूं
भरोसा हूं, तो हिम्मत भी हूं

मुझे गर्व है कि मैं बी ओ बी हूं
116 वर्षों का हमसफ़र हूं, महाराज सयाजीराव की देन हूं,
तो हिंदुस्तान का विश्वास हूं, हौसलों की उड़ान हूं,
चाहो तो आजमा लो मैदान में, मैं ही तो बाजीगर हूं

मुझे गर्व है कि मैं बी ओ बी हूं
व्यापारियों की आवाज़ हूं, तो किसानों की बुनियाद हूं
भारत का अभिमान हूं, तो विदेशों में भी पहचान हूं
रुपयों की दुकान हूं, तो जरूरतों का भाव हूं

मुझे गर्व है कि मैं बी ओ बी हूं
उम्मीदों का उजियारा हूं, तो अंधेरे में उजाला हूं
गरीब की झोली हूं, तो जन-धन की बचत हूं
मां की दवा हूं, तो बेटी की फीस हूं

मुझे गर्व है कि मैं बी ओ बी हूं
किसी का आवास हूं, तो रोजगार भी हूं
शिक्षा हूं तो, पथ की राह भी हूं
किसान की फसल हूं तो, सृजन का बीज भी हूं

मुझे गर्व है कि मैं बी ओ बी हूं
एक पहर भर कभी भी ना रुका हूं, कहीं न कहीं उदयीमान हूं
जुनून इस कदर है, मेरे साथियों में
आर्थिक विकास के पथ पर चलायमान हूं
मुझे गर्व है कि मै बी ओ बी हूं ।

ऋषिराज मीना
प्रबंधक
वसूली विभाग,
क्षे.का., सवाई माधोपुर

हिंदी दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय, मंड्या

क्षेत्रीय कार्यालय, सुलतानपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, पीलीभीत

क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी

क्षेत्रीय कार्यालय, अमरावती

क्षेत्रीय कार्यालय, नाशिक

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद क्षेत्र–II

क्षेत्रीय कार्यालय, खेड़ा

क्षेत्रीय कार्यालय, गांधीनगर

क्षेत्रीय कार्यालय, झुंझुनू

क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

क्षेत्रीय कार्यालय, बांसवाड़ा

अमृतसर का स्वर्ण मंदिर
(मानव सेवा भाव का अनूठा संगम)

सुंदर लाल पटेल
लिपिक, हांडी चौक शाखा, रायगढ़
क्षेत्रीय कार्यालय, बिलासपुर

भारत को देवी-देवताओं का देश कहा जाता है, क्योंकि विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाले भारतवासियों का ईश्वर के प्रति अपार विश्वास देखने को मिलता है। यही कारण है कि हमारे देश में अत्यधिक संख्या में मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, गिरिजाघर व अन्य धार्मिक स्थल पाए जाते हैं। इन धार्मिक स्थलों के माध्यम से लोगों के आस्था व विश्वास को बल मिलता है। वर्ष 2014 में मैं और मेरे तीन दोस्तों ने देश के अलग-अलग हिस्सों में घूमने की योजना बनाई थी। चूंकि उस समय हम चारों की शादी नहीं हुई थी इसलिए हम सभी घर की पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त थे और हम सभी ने बड़ी आसानी से 13 दिन की यात्रा पर जाने के निर्णय को अमली जामा पहना लिया। हमने अपनी योजना में दिल्ली, मनाली, वैष्णो देवी, बाघा बॉर्डर और अमृतसर के स्वर्ण मंदिर को शामिल किया था। इस यात्रा के दौरान हमें देश के विभिन्न हिस्सों में जाने तथा वहां के रहन-सहन और संस्कृति को जानने व समझने का मौका मिला। उक्त सभी स्थानों में से अमृतसर के स्वर्ण मंदिर का दर्शन हम सभी के लिए एकदम महत्त्वपूर्ण व यादगार है।

अमृतसर का स्वर्ण मंदिर : हमने अपनी यात्रा के अंतिम तीन दिनों को अमृतसर के स्वर्ण मंदिर के लिए रखा था। दस दिनों की थकावट भरी यात्रा के बाद हम सभी शारीरिक और मानसिक रूप से थक कर चूर हो गए थे। किंतु अंतिम तीन दिनों ने हमें फिर से तरोताजा व ऊर्जावान बना दिया था। इसका एकमात्र कारण अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में लोगों का नि:स्वार्थ रूप से मानव सेवा भाव है। हम जैसे ही अमृतसर के स्वर्ण मंदिर के द्वार पर पहुंचे, द्वार पर खड़े दो प्रहरियों ने हमें पैरों की तरफ इशारे करते हुए कहा कि पद प्रक्षालन करके व माथे पर साफा बांधकर प्रवेश करें। इससे पहले कि हम कुछ बोल पाते एक सरदार जी ने हमें लोहे के बड़े कुंड की ओर इशारा करते हुए बताया कि इस कुंड में बहुत सारे साफे हैं, आप लोग इसमें से ले लीजिए और सिर पर बांधकर अंदर प्रवेश करिए। वैसे तो हमने पिछले 10 दिनों में देखा था कि धार्मिक स्थल के आस-पास खूब सारे दुकानदार पूजा सामग्रियों को मनमाने दामों में बेचते हैं किंतु स्वर्ण मंदिर एक मात्र पवित्र स्थल है जिसके परिसर के अंदर किसी भी प्रकार की कोई भी दुकान नहीं है। कई सारे श्रद्धालु सिर पर साफा बांधकर मंदिर में जाते हैं और निकलने के बाद एक बहुत बड़े कुंड में सावधानी से वापस रखते हैं जिससे दूसरे श्रद्धालु बिना कोई खर्च करे मंदिर के दर्शन कर सकें। हमने कई सारे धार्मिक स्थलों में अंदर जाने के लिए निर्धारित शुल्क व जूता चप्पल, बेल्ट, मोबाइल, कैमरा व अन्य सामग्री के लिए मना करते व अतिरिक्त शुल्क लेते देखा है। किंतु इस पवित्र मंदिर में ऐसी कोई भी प्रणाली नहीं थी।

श्रद्धालुओं का नि:स्वार्थ सेवा भाव : मुख्य दरवाजे से अंदर प्रवेश करने पर हमने देखा कि श्रद्धालुओं के जूते-चप्पल रखने के लिए बहुत ही सुव्यवस्थित व्यवस्था है। आगंतुकों के जूते-चप्पल रखने के लिए बहुत बड़े-बड़े दो कमरे हैं, जिसमें मंदिर का कोई भी कर्मचारी कार्यरत नहीं है बल्कि आम श्रद्धालु ही जूता चप्पल स्टैंड में आने वाले सभी श्रद्धालुओं के जूते-चप्पल को निशुल्क व सुरक्षित रखने का काम करते हैं। उनके द्वारा आगंतुक श्रद्धालुओं के जूते-चप्पल को बाकायदा हाथ फैलाकर मांगा जाता है तथा आप जैसे ही अपने पादुका उनको देंगे वह अपने कपड़े से उसे साफ करके एक खाने में रख देते हैं व आपको संबंधित टोकन प्रदान कर देते हैं। नि:स्वार्थ रूप से इस प्रकार का सेवा भाव देखकर हमारे आंख में स्वाभाविक आंसू आ गए। अपने जूते-चप्पल रखने के बाद जैसे ही हम मुख्य मंदिर की ओर आगे बढ़े, तो हमने देखा कि एक महिला श्रद्धालु नीचे जमीन पर गिरे हुए धूल-कचरे को अपने दुपट्टे से साफ करके एकत्रित कर रही थी। इस श्रद्धालु का धूल उठाने का भाव ऐसा था मानो वह बहुत ही कीमती सामान एकत्र कर रही हो। उसी के बगल में हमने देखा कि एक महिला व एक पुरुष श्रद्धालु पूरे फर्श को पोंछा लगा रहे थे। उन दोनों की काम करने की प्रणाली से लग रहा था कि उन दोनों के बीच पति-पत्नी का रिश्ता है।

मानव सेवा भाव का प्रतीक: स्वर्ण मंदिर में हमारे द्वारा दर्शन करने का महीना नवंबर था और महीने की 3 तारीख थी। मुझे वह दिन अच्छी तरह से इसलिए याद है क्योंकि वह मेरा जन्मदिन था। ठंड के महीने में संगमरमर का फर्श बहुत ही ठंडा रहता है, अतः श्रद्धालुओं को सुविधा पहुंचाने के लिए कुछ श्रद्धालु बहुत ही सुंदर व लाल रंग के कालीन बिछाने का काम कर रहे थे। मुझे उस फर्श का रंग इसलिए याद है क्योंकि वह मेरे

नाम के अनुरूप सुंदर व लाल था। थोड़ी दूर चलने के बाद हमने देखा कि एक बुजुर्ग सरदार जी, स्वर्ण मंदिर के तालाब के पानी की निस्वार्थ भाव से सफाई कर रहे थे। यह श्रद्धालु भी तालाब के अंदर डुबकी लगाकर कचरे को इस प्रकार समेट कर निकल रहे थे मानो उन्हें कोई अनमोल वस्तु मिल गई हो। लोगों का इस प्रकार का सेवा भाव देखकर हम बहुत ही आनंदित हो रहे थे। मुख्य मंदिर की ओर बढ़ने पर हमने देखा कि एक कोने पर चार-पांच बच्चे अपने अपने माता-पिता के साथ पानी पिलाने का काम कर रहे थे। वे बच्चे सभी श्रद्धालुओं को एक कटोरी में पानी भरकर पीने के लिए दे रहे थे। प्यासे श्रद्धालु जब पानी पी लेते थे तो वे बच्चे अपना हाथ फैला कर उनकी जूठी कटोरी को मांग कर ले लेते थे। वहीं ठीक बगल में कुछ श्रद्धालु उनकी जूठी कटोरियों को बड़े ही श्रद्धा भाव से धो रहे थे मानो यही उनकी पूजा हो। इस प्रकार की निस्वार्थ भाव से सेवा प्रणाली को देखकर हमारे मन को बहुत ही सुकून मिल रहा था।

स्वर्ण मंदिर का गर्भ गृह : इन सब के बाद हम अंततः मंदिर के गर्भगृह की ओर आगे बढ़ने लगे। स्वर्ण मंदिर में तालाब के ठीक बीच में गर्भगृह है। वहां तक जाने के लिए लगभग 40-50 मीटर पैदल जाना रहता है। अन्य तीर्थ स्थलों के समान यहां भी बहुत लोग थे, किंतु यहां पर श्रद्धालुओं के लिए ऐसी सुव्यवस्था रहती है कि बिना किसी धक्का-मुक्की के और बिना किसी व्यवधान के आप बमुश्किल 2 से 3 मिनट में गर्भगृह तक पहुंच सकते हैं। गर्भगृह में शबद कीर्तन का ऐसा मनोरम माहौल बना रहता है कि आप भी पूर्ण श्रद्धा के साथ शांति से बैठ कर कीर्तन में हिस्सा लेने के लिए मजबूर हो जाएंगे। मंदिर में ऐसी भी स्वच्छंदता है कि आप चाहें तो गर्भगृह के दूसरे माले में सीढ़ी के माध्यम से चढ़कर शबद कीर्तन का आनंद ले सकते हैं। मंदिर का इस प्रकार का खुलापन हमने पहली बार देखा था।

स्वर्ण मंदिर का अनमोल भोग : शबद कीर्तन के बाद हम सभी गर्भगृह से बाहर निकले। वहां प्रसाद घर से प्रसाद की थाली लेकर हम सभी दोस्तों ने उसे बांट कर खा लिया। किसी भी धार्मिक स्थल के आसपास की दुकानों से मिलने वाली प्रसाद अत्यंत महंगे होते हैं। किंतु स्वर्ण मंदिर में ऐसा नहीं था। हमने केवल पचास रूपये में एक थाली भर हलवा प्रसाद के रूप में लिया था। जिसमें से शुद्ध देसी घी निथर रहा था। यदि इस प्रसाद का वास्तविक मूल्य निकाला जाए तो वह तीन सौ रुपये से भी ज्यादा होगा। जब हम सभी दोस्त प्रसाद खा रहे थे तभी एक अधेड़ उम्र के सरदार जी हमें देख रहे थे। हमारे प्रसाद खाकर खत्म करने के बाद वह सरदार जी हमारे नजदीक आए और हमारी थाली की ओर इशारा करते हुए कहा कि बेटा यह भोग है जिसे पहले भगवान को चढ़ाया जाता है और उसके बाद आपको प्रसाद मिलता है जिसे श्रद्धा भाव से खाना होता है। आपकी थाली वहीं जमा हो जाती है और आपको एक पत्तल के दोने में प्रसाद मिलता है। हम सभी ने सरदार जी से अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी तो उन्होंने कहा कि कोई बात नहीं अक्सर यह गलती लोगों से हो जाती है। फिर हमने कहा कि जूठी थाली का क्या करें? सरदार जी ने एक कोने की ओर इशारा करते हुए कहा कि वहां जाकर थाली जमा कर दीजिए। हम सभी बहुत डरे हुए थे कि हमारी जूठी थाली को देखकर कौन क्या कहेगा? कोने में एक महिला श्रद्धालु पानी पीने की कटोरी को धो रही थी, हम जैसे ही उनके पास पहुंचे उस महिला श्रद्धालु ने हमारे कुछ कहने से पहले ही अपना हाथ फैलाकर हमसे जूठी थाली को मांगा लिया। उन्हें ऐसा करते देख हम लोग अत्यंत आश्चर्य चकित हो गए। इसके बाद हमने एक और थाली का भोग लिया और गर्भ गृह के मुख्य द्वार के पास पहुंचे। वहां पर दो प्रहरी एक कुंड के पास एक-एक तलवार लिए खड़े थे। हमने जैसे ही भोग उनकी तरफ बढ़ाया, प्रहरी ने अपनी तलवार से हमारे भोग पर काट लगाया और भोग को कुंड में अर्पण कर दिया। इसी पवित्र कुंड से प्रहरी ने प्रसाद निकाला और एक पत्तल के दोने में हमें दे दिया।

नर सेवा ही नारायण सेवा है: पवित्र प्रसाद को हाथ में लेकर हम सभी अपने होटल के लिए निकल रहे थे कि हमने देखा कि दीवार किनारे दो बुजुर्ग सरदार बैठकर आपस में बातें कर रहे थे। उनमें से एक सरदार जी ने हमें अपने पास बुलाया। वे हमें प्रसाद ले जाने के लिए एक थैला देने लगे। लेकिन हम लोग डर गए थे, कि कहीं वह थैले के अनाप-शनाप पैसा ना मांगने लगे। किंतु सरदार जी ने हमें बताया कि डरने की कोई बात नहीं है। यह थैला बिल्कुल नि:शुल्क है। सरदार जी ने आगे भी बताया कि इस स्वर्ण मंदिर परिसर के अंदर आपको किसी भी व्यक्ति को किसी भी प्रकार का कोई शुल्क देना नहीं पड़ता है। यहां सभी श्रद्धालु केवल सेवा भाव से ही आते हैं। आप लोग निश्चिंत होकर लंगर से खाना खाकर घर जाना। हम सभी लंगर की ओर जाने लगे हमने देखा कि हजारों लोगों के लिए दिन भर खाना खाने की व्यवस्था रहती है। हम सभी भारतीयों के लिए अत्यंत गर्व की बात है कि अमृतसर के स्वर्ण मंदिर का रोज चलने वाला यह लंगर, दुनिया भर में एकमात्र और सबसे बड़ा लंगर है। इस लंगर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस पूरी व्यवस्था में अपना श्रमदान देने वाले अधिकांश लोग एक आम श्रद्धालु होते हैं। अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में इस प्रकार का नि:स्वार्थ भाव देखकर ऐसा लगता है मानो यहां पर सभी श्रद्धालु, नारायण के रूप में नर की सेवा करने के लिए आते हैं। स्वर्ण मंदिर के दर्शन के बाद हम सभी दोस्त पिछले ग्यारह साल से लोगों से स्वर्ण मंदिर के नि:स्वार्थ सेवा भाव के बारे में ही बताते रहते हैं। हम सभी दोस्त हर किसी को स्वर्ण मंदिर के कम से कम एक बार दर्शन जरूर करने की सलाह देते नहीं थकते हैं।

***

हिंदी दिवस

अंचल कार्यालय, बरेली

क्षेत्रीय कार्यालय, मेहसाना

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु–मध्य

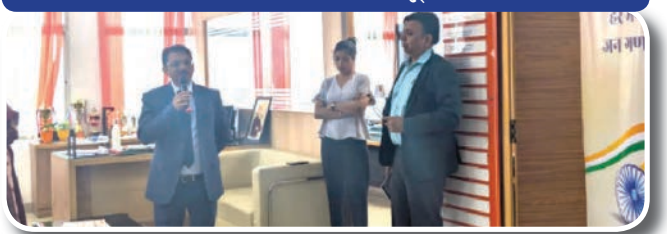

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु–ग्रामीण

क्षेत्रीय कार्यालय, अमृतसर

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद–I

क्षेत्रीय कार्यालय, हिसार

क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर

क्षेत्रीय कार्यालय, बीकानेर

क्षेत्रीय कार्यालय, सवाई माधोपुर

स्थाई स्तंभ

अपने ज्ञान को परखिए

1. प्रतिवर्ष 15 अक्टूबर को दुनियाभर में किस महापुरुष के जन्मदिन पर 'विश्व छात्र दिवस (World Students Day)' मनाया जाता है?
(क) डॉ. भीमराव अम्बेडकर (ख) डॉ. जोजिला वाटसन
(ग) डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम (घ) डॉ. अंजेला एंडरसन

2. हाल ही में, आयोजित हुए एशियन गेम्स (Asian Games) 2023 में भारत ने कुल कितने पदक जीते है?
(क) 104 (ख) 107
(ग) 109 (घ) 113

3. प्रतिवर्ष दुनियाभर में 'अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस (World Translation Day)' किस तारीख को मनाया जाता है?
(क) 28 सितम्बर को (ख) 30 सितम्बर को
(ग) 01 अक्तूबर को (घ) 02 अक्तूबर को

4. हाल ही में, किस राज्य / केंद्रशासित प्रदेश में स्थित 'उधमपुर रेलवे स्टेशन' का नाम बदलकर 'शहीद कैप्टन तुषार महाजन रेलवे स्टेशन' रखा गया है?
(क) जम्मू कश्मीर (ख) पंजाब
(ग) पुदुच्चेरी (घ) उत्तरप्रदेश

5. निम्नलिखित में से किस भारतीय स्थल को यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट की सूची में शामिल किया गया है?
(क) स्टेचू ऑफ़ इक्वालिटी (ख) भारतमंडपम
(ग) शांतिनिकेतन (घ) स्टेचू ऑफ़ यूनिटी

6. हाल ही में, भारत का पहला सौर मिशन सफलतापूर्वक लांच हुआ है, जिसका नाम है?
(क) कलाम एम1 (Kalam M1) (ख) अटल के1 (Atal K1)
(ग) सूर्य ए1 (Surya 1) (घ) आदित्य एल1 (Aditya L1)

7. निम्नलिखित में से किस देश ने दुनिया की पहली एथनॉल से चलने वाली कार लांच की है?
(क) भारत (ख) ऑस्ट्रेलिया
(ग) जापान (घ) जर्मनी

8. किस राज्य में भारत का पहला एआई (I) आधारित स्कूल खोला गया है?
(क) गुजरात (ख) महाराष्ट्र
(ग) केरल (घ) मध्यप्रदेश

9. मधुमक्खी के छत्ते की कोशिकाएं आमतौर पर इनमें से किस आकार की होती हैं?
(क) त्रिकोण (ख) अष्टकोण
(ग) पंचकोण (घ) षट्कोण

10. इनमें से कौन सा राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश में स्थित है?
(क) जिम कॉर्बेट (ख) कान्हा
(ग) गिर (घ) काजीरंगा

11. भारत और किस देश के बीच झूलाघाट सस्पेंशन ब्रिज पूरी तरह से चालू हो गया है?
(क) भूटान (ख) बांग्लादेश
(ग) श्रीलंका (घ) नेपाल

12. किस राज्य की सरकार द्वारा भारत का पहला कृषि डेटा एक्सचेंज (DeX) लांच किया गया है?
(क) महाराष्ट्र (ख) ओडिशा
(ग) तेलंगाना (घ) छत्तीसगढ़

13. पोम्फ्रेट और रावस किसके उदाहरण हैं?
(क) कीड़े (ख) मछली
(ग) खरगोश (घ) पक्षी

14. हाल ही में विश्व का नंबर 1 पंक्चुअल एयरपोर्ट कौनसा बना है?
(क) केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, बेंगलूरु, भारत
(ख) साल्ट लेक सिटी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, यूटा, अमेरिका
(ग) राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, हैदराबाद, भारत
(घ) हमाद अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, दोहा, कतर

15. महाराष्ट्र में पश्चिमी घाट को इनमें से किस नाम से बुलाया जाता है?
(क) विंध्य (ख) पूर्वांचल
(ग) सह्याद्रि (घ) अरावली

16. इनमें से कौन सा ओलंपिक खेल नहीं है?
(क) फुटबॉल (ख) हॉकी
(ग) शतरंज (घ) गोल्फ

17. हाल ही में सरकार ने 'प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना' के तहत सब्सिडी बढ़ाकर कितने रुपये प्रति सिलिंडर कर दिया है?
(क) 200 रुपये (ख) 300 रुपये
(ग) 400 रुपये (घ) 500 रुपये

18. नेशनल स्मार्ट सिटी कॉन्क्लेव में किसे सर्वश्रेष्ठ स्मार्ट सिटी का स्थान मिला है ?
(क) मुंबई (ख) हैदराबाद
(ग) इंदौर (घ) बेंगलूरु

19. हाल ही में ऑनलाइन गेमिंग और कैसिनो पर कितने प्रतिशत जीएसटी (GST) लगाया गया है?
(क) 15% (ख) 18%
(ग) 24% (घ) 28%

20. भारत और किस देश के बीच वार्षिक नौसेना समुद्री द्विपक्षीय अभ्यास सिम्बेक्स (SIMBEX) शुरू हुआ?
(क) सिंगापुर (ख) श्रीलंका
(ग) जापान (घ) संयुक्त अरब अमीरात

(उत्तर के लिए पेज नं. 34 देखें)

स्थाई स्तंभ

बैंकिंग शब्द मंजूषा

Appropriation of payments भुगतानों का विनियोजन

किसी विशिष्ट ऋण के भुगतान हेतु किसी विशेष भुगतान को उपयोग में लाना। जब किसी ऋणकर्ता द्वारा किसी व्यक्ति को बहुत-से अलग- अलग ऋण देय हों और वह स्पष्टतः परिस्थितिजन्य आधार पर सूचित करे या इस आशय की सूचना दे कि उसके द्वारा की जा रही अदायगी को किसी विशेष ऋण को चुकाने के लिए उपयोग में लाया जाए। ऐसी अदायगी को स्वीकारने की दशा में उसे तदनुसार ही उपयोग में लाया जाना चाहिए।

Bottom fishing अवसर देखकर लाभ उठाना

निवेशक बाजार की स्थिति के अनुसार अधिकतम लाभ उठाने के लिए जो प्रक्रिया अपनाता/निर्णय लेता है, वही बॉटम फिशिंग की संकल्पना से अभिप्रेत है। उदाहरण के तौर पर बाजार में जब मंदी का दौर होता है, उस समय शेयरों की कीमतें अपने न्यूनतम स्तर पर होती हैं। इस स्थिति का लाभ उठाने के लिए निवेशक शेयरों की खरीद करता है और भाव बढ़ने पर उनकी बिक्री कर अधिकतम लाभ अर्जित करने का प्रयास करता है।

Conditional acceptance सशर्त स्वीकृति

वह स्वीकृति जो निरपेक्ष या अर्हताहीन न हो और न ही प्रस्ताव को वचन में परिवर्तित करती हो, सशर्त स्वीकृति कहलाती है। जमाराशियों अथवा बयाने का भुगतान करना या किसी निर्धारित रूप में इच्छा-पत्र का होना, या कतिपय प्रलेखों का निष्पादित किया जाना या किसी निश्चित समय-सीमा में स्वीकृति की सूचना देना आदि ऐसी शर्तें हैं जिन्हें प्रस्तावकर्ता निर्धारित करते हैं और इनमें से किसी भी शर्त का अनुपालन नहीं होने पर कोई प्रस्ताव व्यपगत हो सकता है।

Financial Intermediaries वित्तीय मध्यस्थ

वित्तीय समावेशन के संदर्भ में वित्तीय मध्यस्थ के रूप में बैंकों के एजेंट की भूमिका निभानेवाली संस्थाओं का समावेश होता है, जबकि परंपरागत तौर पर साहूकार एवं महाजन वित्तीय मध्यस्थ की भूमिका निभाते रहे हैं। वे सभी संगठन एवं संस्थाएं जो बैंकों एवं आम लोगों के बीच बैंकिंग-सुविधाओं को पहुँचाने की कड़ी के रूप में काम करती हैं, वित्तीय मध्यस्थ के रूप में जानी जाती हैं।

Hard soft cost मूल एवं प्रासंगिक लागत

मुख्य कारोबार के क्रियाकलापों को संपन्न करने में जो धनराशि व्यय की जाती है, मूल लागत है तथा कारोबार के अन्य कार्यों हेतु व्यय की गई राशि प्रासंगिक लागत।

Imperfect competition अपूर्ण प्रतिस्पर्धा

ऐसी परिस्थितियाँ, जिनमें कीमतें सामान्यतः एक या कुछ व्यक्तियों/ कंपनियों द्वारा परिवर्तित की जाती हैं। बाजार में असामान्य स्थितियों या कुछ क्रेताओं या विक्रेताओं द्वारा उठाए गए लाभ के कारण ऐसा होता है।

Payment shock भुगतान – राशि में अचानक होनेवाली बढ़ोतरी

जब कोई ऋण फ्लोटिंग ब्याज दर पर लिया जाए और आरंभिक अवधि के बाद उसके मासिक भुगतान में तीव्र बढ़ोतरी हो, तब ऋण लेनेवाले को गहरा धक्का लगता है। उपभोक्ता को चाहिए कि वह इस तरह की अनपेक्षित बढ़ोतरी से बचने के लिए निश्चित ब्याज दर पर ऋण ले अथवा फिर वसूली जाने वाली ब्याज दर की उच्चतम सीमा को निर्धारित करने के विकल्प का पहले से ही चयन कर ले।

Retained earnings प्रतिधारित उपार्जन

किसी कंपनी की चालू वर्ष की एवं पिछले वर्षों की ऐसी उपार्जित राशियां, जो न तो शेयरधारकों के बीच लाभांश के रूप में वितरित की गईं और न ही अधिशेष लेखा में अंतरित की गईं। कई वर्षों से जमा कंपनी - उपार्जन।

Strips स्ट्रिप्स

किसी ब्याज वाली प्रतिभूति से देय मूल और ब्याज की नकद राशि को दो अलग-अलग वित्तीय लिखतों के रूप में जारी किया जा सकता है। ऐसा अंतर्निहित निवेश से होने वाले प्रत्येक कूपन-भुगतान द्वारा एक अलग प्रतिभूति का निर्माण करके किया जा सकता है।

Thin market अत्यल्प लेनदेन-बाजार

ऐसा बाजार, जिसकी बहुत कम गतिविधियां रहती हैं, जहां बहुत कम बोलियां लगाई जाती हैं और बहुत कम प्रस्ताव बिक्री के लिए होते हैं, और जिसमें छोटे-छोटे ऑर्डर भी कर-संरचना को प्रभावित करते हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक के बैंकिंग पारिभाषिक कोश से साभार...

पुस्तक समीक्षा

चांदपुर की चंदा

मो. शकील अहमद
प्रबंधक,
गोरखपुर क्षेत्र

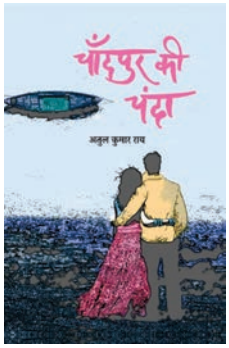

'चांदपुर की चंदा' उपन्यास अतुल कुमार राय जी द्वारा वर्ष 2022 में लिखा गया उपन्यास है। यह उपन्यास उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के सरयू नदी के तट पर अवस्थित एकदम अंतिम गांव चांदपुर पर लिखा गया है। उपन्यास में वर्णित समय वर्ष 2006 का है। इस उपन्यास की मूल कथा पिंकी उर्फ चंदा और मंटू उर्फ शशि का विशुद्ध प्रेम है। इस प्रेम कथा के अतिरिक्त भी इसमें अनेक घटनाएं वर्णित हैं जो उपन्यास की रसात्मकता में अभिवृद्धि करती हैं।

इस उपन्यास के शीर्षक और मुखपृष्ठ के चित्र को देखकर यह प्रतीत होता है कि उपन्यास की कथा केवल प्रेमी युगल की प्रीतिकथा है किंतु जब उपन्यास का अध्ययन करते हैं तब स्पष्ट होता है कि कथा ग्रामीण-जीवन के समस्त विकटतम पहलूओं को स्पर्श करते हुए आगे बढ़ती है। लेखक ने बड़ी ही सजगता और निपुणता से ग्रामीण परिवेश के उलझे हुए जीवन को शब्दों में उकेरा है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोग जब इस उपन्यास को पढ़ते होंगे तो शब्दों के माध्यम से सम्पूर्ण बिम्ब उनके नेत्रों के समक्ष उपस्थित हो जाता है। इस उपन्यास में प्रेम के मार्ग में आने वाली बाधाओं का ही उल्लेख नहीं है अपितु जीवन की अनेकानेक कठिनाईयों को भी दर्शाया गया है। सरयू के तट पर बसे इस गांव को प्रतिवर्ष बाढ़ की मार झेलनी पड़ती है। इस गांव में सिर्फ़ नदी में ही बाढ़ नहीं आती है बल्कि इस गांव में अशिक्षा, बेरोजगारी, दहेज उत्पीड़न, राजनीतिक भ्रष्टाचार की भी बाढ़ है।

उपन्यास का आरम्भ ही ग्रामीण अंचल की जर्जर शिक्षा व्यवस्था से होता है। यह चांदपुर गांव के विद्यालय की स्थिति नहीं है अपितु यह स्थिति भारत के उन सभी विद्यालयों की है जो ग्रामीण क्षेत्रों में हैं। यहां पैसा लेकर परीक्षाओं में उत्तीर्ण कराने की परम्परा अनवरत चलती आ रही है। शिक्षा केवल अंको तक सिमट कर रह गयी है। शिक्षा का जीवन की उचित दिशा से कोई संबंध ही नहीं रह गया है। उपन्यास में वर्णित पांच युवक जो बंगाल से बलिया बारहवीं और दसवीं की परीक्षा देने आये हैं, उनका मूल उद्देश्य परीक्षा में उत्तीर्ण होकर एक प्रमाण-पत्र प्राप्त करना, विवाह करना और किसी भी प्रकार धनार्जन करना है। यह केवल उन पांच युवकों का ही उद्देश्य नहीं है अपितु यह ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकांश युवाओं का उद्देश्य हो गया है। परीक्षाएं पैसों पर उत्तीर्ण करा दी जा रही हैं यही कारण है कि प्रतिभाएं आत्म-हत्या कर लें रही हैं।

उपन्यासकार ने चांदपुर गांव की स्थिति का ऐसे शब्दों में वर्णन किया है कि चांदपुर का प्रत्यक्ष दर्शन किये बिना ही गांव का बिम्ब नेत्रों के सामने उपस्थित हो जा रहा है। चांदपुर की स्थिति को पढ़कर यह लगता है कि यह स्थिति पूर्वांचल के सभी गांवों की है। लेखक लिखता है, **''चांदपुर! सरयू किनारे बसा बलिया जिले का अंतिम गांव। कहते हैं चांद पर पानी है कि नहीं ये तो शोध का विषय है लेकिन चांदपुर की किस्मत में पानी ही पानी है। चांदपुर चलता है पानी में, जीता है पानी में और टूटता भी है पानी में।''**

यह दशा केवल चांदपुर की नहीं अपितु सरयू, गंगा, गोमती, ताप्ती किनारे बसे प्रत्येक गांव की है। जो प्रत्येक वर्ष पानी में डूबकर विनाश की मार झेलता है। चांदपुर गांव में प्रवेश करते ही टूटी हुई सड़क और एक ऐसे विद्युत खंभे का दर्शन होता है जिस पर तार कम नेताओं की तस्वीरें अधिक चिपकी हैं। उस विद्युत खंभे में विद्युत से अधिक राजनीति दौड़ती है। यह स्थिति केवल चांदपुर गांव की नहीं बल्कि उन सभी गांवों की है जहां विकास से अधिक भ्रष्टाचार फैला हुआ है। उपन्यास की कुछ पंक्तियां भारतीय व्यवस्था का नग्न चित्रण कर देती हैं, **''देश में ड्राइविंग लाइसेंस लेने से आसान ठेकेदारी का लाइसेंस लेना और खैनी बनाने से आसान सड़क बनाना है।**

'चांदपुर की चंदा' में लेखक ने समाज के सबसे ज्वलंत मुद्दे 'दहेज उत्पीड़न' का उल्लेख किया है। यह एक ऐसी समस्या है जो 21वीं सदी में भी सुरसा की भांति मुंह फैलाये खड़ी है। शिक्षा की व्यवस्था को उन्नत बनाने के बाद आज भी ग्रामीण माता-पिता के लिए बेटियां बोझ होती हैं क्यों? क्योंकि ये माता-पिता बेटियों के भविष्य से अधिक समाज के विषय में सोचते हैं कि अगर बेटी का ब्याह कम उम्र में न किया तो लोग क्या कहेंगे? अगर बेटी विवाह के पश्चात् ससुराल में खुश नहीं है और मायके में आकर रहती है तो लोग क्या कहेंगे? दहेज

व्यवस्था पर कुठाराघात करते हुए लेखक ने लिखा है, **''फ्रिज, कूलर, टीवी, एसी, सोफा, पलंग की गारण्टी तो हर कम्पनी दे देती है, लेकिन दहेज में दिये जाने वाले सामानों से आपकी बेटी पांच दिन भी ससुराल में खुश रहेगी की नहीं, इसकी गारण्टी आज तक न कोई कम्पनी दे सकी है, न कोई दुकानदार ले सका है।''** यह पंक्ति शिक्षोपदेश है उन पिताओं के लिए जो दहेज देकर अपनी बेटियों की खुशियों की बात करते हैं। दहेज एक व्यापार है और व्यापार कभी चिरकालिक खुशियां नहीं देता है। तभी तो लेखक ने लिखा है, **''दहेज देने से लड़की ससुराल में खुश रहे तो शहर के अखबार लड़कियों की आत्महत्या से भरे नहीं होते।''**

इस उपन्यास का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग है नायक शशि उर्फ मंटू तथा नायिका चंदा उर्फ पिंकी का विशुद्ध प्रेम। यह प्रेम जीवन के युवाकाल में उत्पन्न होता है किंतु यह वासना की धरातल से कहीं अधिक दूर साधना की भूमि पर पनपने वाला प्रेम है। प्रेमी मंटू द्वारा अपनी प्रेयसी पिंकी को विशुद्ध प्रेम में लिखा गया पत्र इस उपन्यास की आत्मा है – **''ए करेजा! तुम जो पियरका सूट पहिन के शिवजी के मंदिर में दीया जलाने आई थी, वो दीया तो उसी दिन बुता गया, लेकिन जो दीया मेरे दिल में जर गया है न, वो बुतने का नाम नहीं ले रहा है।''** उपन्यासकार की ये पंक्तियां पाठकों को सहजता से अपनी ओर खींच ले रहीं हैं। नायक के समक्ष दो अहम परीक्षाएं हैं एक बारहवीं की परीक्षा और दूसरी प्रेम की परीक्षा। उपन्यासकार लिखते हैं– **''प्रेम और पढ़ाई दोनों ही परीक्षा है लेकिन सारे विद्यार्थी भ्रम में पड़ जाते हैं कि कौन सी परीक्षा पहले दी जाए? यही तो गलत करते हैं।''** नायक और नायिका दोनों में प्रेम परिव्याप्त है किंतु नायिका प्रेम से पहले बारहवीं में उत्तीर्ण होना चाहती है और नायक बारहवीं से पहले प्रेम में। नायिका पिंकी नायक मंटू को प्रेम के साथ-साथ जिम्मेदारियों का भी ज्ञान कराती है जो वास्तविक प्रेम का लक्षण है और प्रेम की पराकाष्ठा है। पिंकी प्रेम में होकर भी कुल की मान-मर्यादा का ध्यान रखती है किंतु वह कुल की मर्यादा के झूठे आडम्बर में अपने जीवन का बलिदान नहीं करती है।

उपन्यास की भाषा ऐसी है कि वह भोजपुरी के क्षेत्रवासियों को बाँधे रखती है। अन्य भाषाई क्षेत्रों के पाठकों के लिए यह भाषाई दृष्टि से थोड़ा क्लिष्ट उपन्यास है। उपन्यास में लोकगीतों और कविताओं का समुचित प्रयोग हुआ है। लेखक ने उपमा अलंकार का ऐसा प्रयोग किया है कि कालिदास की अनुभूति होने लगती हैं– **''जानती हो रात में जबरदस्ती पढ़ने बैठते हैं तो अड़हुल के फूल जैसी तुम्हारी आंखें याद आती हैं। खाने बैठते है तो याद आती है तुम्हारी मिठकी बोली। सोने जाते हैं तो सुग्गा जैसा चेहरा हमें सोने नहीं देता है। नाव चलाते हैं तो तुम्हारा मखमल जैसा दुपट्टा हाथों को बाँध लेता है।''**

'चांदपुर की चंदा' उपन्यास पाठकों के हृदय को रस से सराबोर कर देने वाला उपन्यास है। इस उपन्यास की कथा ने जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डाला है। समाज में कौन-कौन सी बुराईयां हैं जिनका शमन होना चाहिए अन्यथा परिणाम कष्टप्रद होगा इसका भी वर्णन है और समाज में क्या अच्छाइयां हैं इसका भी वर्णन है। यह उपन्यास अशिक्षा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सामाजिक दुर्व्यवस्था के साथ विशुद्ध प्रेम, निःस्वार्थ संबंध, सशक्त निर्णय, सशक्त स्त्री-चरित्र को भी प्रकट करता है। इस उपन्यास के आधार ग्राम सीपुर में बिजली, इंटरनेट और सोशल मीडिया से दूरी होने के बाद भी पिंकी और झांझा बाबा की आधुनिक सोच को देखा जा सकता है।

प्रेम से पगी पाती (खत) लिखने के बाद नायक लिखता है: **''वेलेंटाइन बाबा के कसम इ लभ लेटर मैं सरसों के खेत से नहीं तुम्हारी मुहब्बत के टावर पर चढ़कर लिख रहा हूं... डीह बाबा काली माई के कसम आज तीन दिन से म ोबाइल में टावरे नहीं पकड़ रहा था... ए पिंकी खीसियाना मत.. हमारे मोहब्बत के दुश्मन सिर्फ हमारे तुम्हारे घर वाले ही नहीं, ये एयरटेल और वोडाफोन वाले भी हैं।''**

गांव में विकास दूर-दूर तक नहीं देखने को मिलता है किंतु कुछ पात्र रूढ़िवादी विचारों से बहुत दूर हैं। चांदपुर की पिंकी भले अभावों में रहती है किंतु उसके विचार ऐसे हैं जिसमें मर्यादा भी है, आधुनिकता भी है और सशक्तता भी है। झांझा बाबा बुजुर्ग होकर भी समय के साथ समन्वयवादी दिखते हैं। यह उपन्यास रसात्मक होने के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी है।

***

अन्य

दिनांक 19 सितंबर, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा का श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा निरीक्षण किया गया। क्षेत्रीय प्रमुख, श्री चंदन साहू ने श्री अनिर्बान का स्वागत सत्कार किया। इस अवसर पर श्री वी.भास्कर जी एवं सुश्री गौरी वी. एम, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) उपस्थित रहे।

चित्र बोलता है।

1

यात्रियों की यात्रा में सहायक बन जाते हैं
उनका बोझ हम ट्रेनों से उतारते, चढ़ाते हैं
कितने मुसाफिरों के सफ़र से जुड़ जाते हैं
अंततः हम कुली स्टेशनों पर ही रह जाते हैं

: ब्रजेश कुमार पांडेय, अधिकारी
एमएनएनआईटी–शाखा, प्रयागराज–।

2

सबको उनकी मंज़िल तक पहुंचाते हैं
दिन–रात मेहनत कर के कमाते हैं
फुर्सत के पल में दोस्तों से बतियाते हैं
हम कुली हैं, सर पर बोझ उठाते हैं

अंशिता वर्मा, अधिकारी
भुज मुख्य शाखा, भुज क्षेत्र

3

यात्रियों का बोझ हम उठाते हैं
उनकी यात्रा आसान हम बनाते हैं
उनके चेहरे पर खिली मुस्कान को देख कर
अपनी थकान हम भूल जाते हैं

कीर्ति गहलोत, एकल खिड़की परिचालक
स्टेशन रोड शाखा, जोधपुर

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 की राशि दी जा रही है।

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत अप्रैल–जून, 2023 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं। पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें। श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/–) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे। पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई–मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 15 दिसंबर, 2023 तक भेज सकते हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा को 'नराकास राजभाषा सम्मान'

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की श्रेणी में वर्ष 2022–23 के लिए भारत सरकार के सर्वोच्च राजभाषा पुरस्कार 'नराकास राजभाषा सम्मान' के अंतर्गत 'ख' भाषिक क्षेत्र में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। दिनांक 15 सितंबर, 2023 को पुणे में आयोजित हिंदी दिवस समारोह 2023 एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में केरल के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान और माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री अजय कुमार मिश्रा के कर कमलों से यह पुरस्कार प्रमुख–राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह और सदस्य सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक श्री पुनीत कुमार मिश्र ने ग्रहण किया।

नराकास (बैंक), वडोदरा द्वारा 'कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व: वर्तमान और भविष्य' विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार

दिनांक 07 अगस्त, 2023 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा के संयोजन में वडोदरा, गुजरात में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, मुंबई के अंतर्गत कार्यरत सभी नगर समितियों के लिए ''कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व: वर्तमान और भविष्य'' विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार का उद्घाटन भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम), मुंबई की उप निदेशक (कार्यान्वयन), डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य, समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन), श्री दिनेश पंत तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित मुख्य आयकर आयुक्त (जीएसटी) एवं अध्यक्ष, नराकास (कार्यालय), अहमदाबाद, डॉ. बनवारी लाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता नराकास (बैंक), वडोदरा के अध्यक्ष एवं मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन), श्री दिनेश पंत ने की। इस अवसर पर प्रमुख–राजभाषा एवं संसदीय समिति, श्री संजय सिंह और सदस्य सचिव, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र भी उपस्थित रहे। इस दौरान समिति की पत्रिका ''समन्वय'' के नवीनतम अंक तथा अंचल कार्यालय, बड़ौदा की पत्रिका ''बड़ौदा दर्पण'' का विमोचन किया गया। उक्त सेमिनार में तीन सत्रों में विभिन्न संस्थानों के कुल 16 प्रतिभागियों ने पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुति दी तथा 90 से अधिक प्रतिभागियों ने चर्चा में सहभागिता की।

मुझे चाहिए पूरी पृथ्वी
अपनी वनस्पतियों, समुद्रों
और लोगों से घिरी हुई,
एक छोटा-सा घर काफ़ी नहीं है।

एक खिड़की से मेरा काम नहीं चलेगा,
मुझे चाहिए पूरा का पूरा आकाश
अपने असंख्य नक्षत्रों और ग्रहों से भरा हुआ।

इस ज़रा सी लालटेन से नहीं मिटेगा
मेरा अंधेरा,
मुझे चाहिए
एक धधकता हुआ ज्वलंत सूर्य।

थोड़े से शब्दों से नहीं बना सकता
मैं कविता,
मुझे चाहिए समूची भाषा
सारी हरीतिमा पृथ्वी की
सारी नीलिमा आकाश की
सारी लालिमा सूर्योदय की।

अशोक वाजपेयी